

UNIVERSAL  
LIBRARY

**OU\_182487**

UNIVERSAL  
LIBRARY







सत्साहित्य-प्रकाशन

# नवीन यात्रा

—बंगला के भावपूर्ण उपन्यास का हिन्दी-रूपांतर—

लेखक

मनोज बसु

अनुवादक

मन्मथनाथ गुप्त

•

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६२

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक  
भार्तण्ड उपाध्याय,  
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,  
नई दिल्ली

Checked 1965

---

---

दूसरी बार : १९६२

मूल्य

अढ़ाई रुपये

---

---

Checked 1969

मुद्रक  
श्यामकुमार गर्ग,  
राष्ट्रभाषा प्रिन्टर्स,  
दिल्ली

## प्रकाशकीय

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि भारतीय भाषाओं के चुने हुए उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद प्रकाशित हो, जिसमें पाठकों को उच्च कोटि की सामग्री पढ़ने को मिले और वे जान सकें कि हमारी भारतीय भाषाओं का उपन्यास-भंडार कितना संपन्न है। इसी उद्देश्य से हमने 'मङ्गल' से एक उपन्यास-माला प्रारंभ की है, जिसमें अबतक छह उपन्यास निकल चुके हैं। पहला है श्री विष्णु प्रभाकर का लिखा हिंदी का मौलिक उपन्यास 'तट के बंधन'। इसके अतिरिक्त मराठी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री बोरकर का 'देवदासी', कन्नड़ के लेखक श्री अ० न० कृष्णराव का 'कित्तूर की रानी', बंगला के सुविख्यात कथाकार श्री मनोज बसु का 'नवीन यात्रा', गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भवेरचन्द मेघाणी का 'प्रभु पधारे' और मराठी उपन्यास-लेखिका श्रीमती सुमतिदेवी धनवेट का 'तूफान और ज्योति' इस माला में अबतक प्रकाशित हो चुके हैं। श्री न० चिदम्बर सुब्रह्मण्यन्-लिखित तमिल उपन्यास 'हृदय-नाद' प्रेस में है।

'नवीन यात्रा' के बंगला में अबतक कई संस्करण हो चुके हैं और इसके आधार पर एक फिल्म भी बनी है। यह एक नये ढंग का उपन्यास है और इसमें बताया गया है कि वास्तविक शिक्षा कैसी होनी चाहिए और वह किस प्रकार के शिक्षकों के द्वारा दी जा सकती है। इसका अनुवाद हिंदी के सुपरिचित लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त ने किया है।

### दूसरा संस्करण

इस माला के उपन्यास पाठकों में खूब लोकप्रिय हुए हैं। 'तट के बंधन' का तीसरा संस्करण हो चुका है और 'नवीन यात्रा' तथा 'देवदासी' का दूसरा संस्करण हो रहा है। हमें विश्वास है कि ये सभी उपन्यास उत्तरोत्तर और भी चाव से पढ़े जायेंगे।

था। इस काम के लिए उमें तनख्वाह पर दो रुपये भत्ते के रूप में मिलते थे। इसके अलावा उसे और सुविधा थी—वह लछमन के साथ बैठकर खाने का हकदार था।

जहां लोग ठहराये गए थे, वहां आदमी-ही-आदमी थे, इसलिए पास ही में जामरूल के पेड़ के नीचे चूल्हा खोदा गया। जाड़े की ऋतु होने के कारण पानी बरसने का कोई डर नहीं था, इस कारण बाहर ही रसोई करने और खाने-पीने से निपटने में सुविधा थी।

कुछ लोगों ने तो कंधे पर से गट्टर उतारते ही गांव में मटरगस्ती शुरू कर दी। ऐसा करने में उनका उद्देश्य प्रकृति की शोभा देखना नहीं था, बल्कि मौका पाकर एक-आध केला या मूली उड़ा लेना था। हो सकता है कि दिन में उजाले के कारण दांव न लगे, पर दिन में घूमने से चीजों का अता-पता तो मिल ही जायगा। फिर जब रात को खेल समाप्त होगा तो उस स्थान पर हमला बोल देंगे।

जो लोग बाहर नहीं गये थे, वे एक-एक, दो-दो करके नहा आये। भात की हांडी उतरते ही खाने के लिए बैठ जायेंगे। मडली का मामला जो ठहरा। अत में खानेवाले लोगों के लिए कभी तरकारी बचती है, कभी नहीं। इसलिए पहले ही हाथ मार लेने में भलाई है। वे लोग सतर्क थे, उनकी आंखें जामरूल के पेड़ की ओर लगी थी, पर कई लोग वक्त खोना भी पसंद नहीं करते थे; इसलिए दो-चार ने इसी बीच चौपड़ बिछा दी। खेलने में तो दो-चार ही लगे, पर उन्हें चाल बतानेवाले बहुतेरे हो गये। एक चिल्ला-चिल्लाकर जटिला का पार्ट याद कर रहा था। कुछ लोग तबले और हारमोनियम पर कोई बोल निकालने की धुन में लगे हुए थे।

तभी धम्म की आवाज हुई।

जो व्यक्ति ऐन चौपाल की सीढ़ी पर बैठा हुआ था, वह एक छलांग में दालान पर जा पहुंचा। भगदड़ मच गई, चौपड़ की गोठे तथा चौपड़ की बिछावन परों से तितर-बितर हो गये। केले का एक-एक पत्तल लेकर पलक मारते ही सब लोग जामरूल के पेड़ के नीचे बैठ गये।

अमूल्य नाम का एक लड़का उस तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था। वह फर्श के किनारे बैठा शीशे में देख-देखकर बड़ी मेहनत से मांग काट रहा था। बाल उसके सचमुच इसी लायक थे। माथे के दोनों तरफ एक के बाद दूसरा गुच्छा लहराता हुआ कंधों तक उतर गया था। वह सबसे पहले नहा आया था। तभी से बालों की सेवा में लगा हुआ था। काम कोई मामूली नहीं था। इस काम में उसके प्रतिदिन तीन-चार घंटे निकल जाते थे।

हरिपद अमूल्य से बहुत बड़ा है, पर दोनों में बड़ी दोस्ती है। उसने एक ही भटके में शीशा छीन लिया। बोला—

“बस, यहीं तक छोड़ दो। खा-पीकर फिर जुटना। भूख की भार को तेज करने के लिए राक्षस अभी गांव की सैर को गये है। आते ही सब चट कर जायेंगे। तब गूलरो पर ही गुजर की नौबत आयगी। मैं कहता हूँ, चलो।”

सीतानाथ भात परोसता जाता था। भात अच्छी तरह गला नहीं, अगर कोई उसे दाल में सानकर काबू में लाना चाहे, तो भात हाथ में से छिटक जाता है। हरिपद बोला, “महाराज, तुमने यह क्या अंधेर कर दिया? भात है कि लोहे के चने? पत्तल पर पड़ता है, तो पट-पट आवाज करता है।”

अमूल्य ने मुस्कराकर कहा, “इसमें बुराई क्या है? धीरे-धीरे हजम होगा, पेट भरा रहेगा। पता नहीं, रात को मिले या न मिले?”

सीतानाथ आश्चर्य से आंखें निकालते हुए बोला, “बड़ी हिम्मतवाले हो जी! यही चीजे इतनी भारी है कि हजम करना मुश्किल है। इसपर रात में फिर ठुसाई करना चाहते हो! दाल, रसा, खटाई—तीन-तीन पदारथ पा रहे हो और एक रसे में ही आलू, मूली, सेम, पालक—सबके दर्शन हो रहे हैं।”

वह भगौने में से एक या दो चमचा दाल देता जाता था।

“कहता है कि कल्हारी मूंग की दाल है, पर ज़रा सूँघकर तो देखो

कि क्या बास आ रही है ? तीन दिन तक इसीको डकार आयागी ।”  
अमूल्य ने कहा ।

हरिपद बोला, “सीतानाथ, तुम अदहन में दाल छोड़ना ही भूल गये ।  
दाल छोड़ना भूल गये तो कोई बात नहीं, पर नमक तो डालते ।”

सीतानाथ ने आखे तरेरकर बताया कि नमक वहा रखा है । फिर  
बोला, “हाथ में कोढ़ तो हुआ नहीं है, जितना चाहो लो और चाकर  
कुलाचे भरो । कोई मना थोड़े ही है ।”

अमूल्य उठकर नमक ले आया । उसने स्वयं लिया और हरिपद तथा  
दूसरों को दिया ।

हरिपद ने फिर टीका-टिप्पणी करते हुए कहा, “अरे यह तो गरम  
पानी है; पर इसे दाल कहकर चला रहे हो । जब ऐसा ही करना था तो  
यह क्यों नहीं कहते कि यह गोश्त का शोरबा है या आलूबुखारे की चटनी  
है ? —कुछ भी कह सकते हो ।...अच्छा, एक-दो हरी मिर्च दे सकते हो ?”

रसोई की निदा में सीतानाथ आगबबूला हो गया था । मुंह बनाते हुए  
बोला, “बड़े आये है नवाब सिराजुद्दौला के नाती तम्बत-ताऊम पर नुद-  
कर । नमक दो, हरी मिर्च दो । जब मागने पर ही आ गये, तो डलते ही,  
पर क्यों रुकते हो ? कहो—दही चाहिए, नैनू चाहिए !”

‘कलक-भंजन-लीला’ में हरिपद गोप बनता था और अमूल्य भाषण ।  
‘दही चाहिए, नैनू चाहिए’ कहते-कहते फेरी कहते हुए वे मच पर आने थे ।  
उसीको कोचकर यह बात कही गई थी ।

अमूल्य बोला, “बाबू के घर से मछली आई थी न ?”

सीतानाथ ने अस्वीकृति में सिर हिला दिया ।

“पर मछली तलने की खुशबू तो आ रही थी ।”

अमूल्य इसी बात पर उठ खड़ा हुआ । कुछ पत्तों पर ढेर-मा लगाकर  
भात रखा हुआ था । पास ही पेड़ के तने की आड़ में एक कूड़े में परई से  
कुछ ढका हुआ था ।

सीतानाथ ‘हँ-हँ-हँ’ कर दौड़ पड़ा ।

“उधर कहा जा रहे हो ? अभी मालिको के आने में देर है, इसलिए कुछ तरकारो अलग रख दी है। उसपर क्या गनीचर की-सी नजर डाल रहे हो ?”

पर इस बीच अमूल्य ने परई खोल दी थी। बोला, “मछली नहीं तो क्या है ? मुझे साफ खुशबू आई थी।”

सीतानाथ चमचा तानकर चढ़ आया, बोला, “उसमें हाथ मत डालो। सिर फोड़ दूंगा। सिर्फ दस-बारह टुकड़े हैं। हाजरा महाशय, माता यशोदा, कृष्ण, आर्यान्—इनके लिए रखी है।

हरिपद ने व्यग्य करते हुए कहा, “अच्छा तो तुमने अपने लिए नहीं रखा ? तुम बड़े भले हो।”

अमूल्य बोला, “हाजरा महाशय आदि खा सकते हैं और हम नहीं खा सकते ? क्या हम मडली के नहीं हैं ?”

सीतानाथ बोला, “यह भी खूब कही ? अरे, टिड्डा पशु बना और तेलचट चिड़िया बन गया। कहा, गोप, गोपी, दूत, सखी, मरे सैनिक के पार्ट करनेवाले और कहा कृष्ण, यशोदा, आर्यान् और कस के पार्ट करनेवाले ? फिजूल में वकवास मत करो। जो मिला है उसे चुपके से खालो।”

उसने धक्का देकर अमूल्य को हटा दिया। अमूल्य मभल न पाया और गिर पड़ा। क्रोध में उसे अपने-पराये का होश ही न रहा। धूल झाड़कर उठते हुए बोला, “जब मुझे नहीं मिली तो मैं किसीको यह मछली नहीं खाने दूंगा।”

यह कहकर उसने नमक के कूड़े का सारा नमक मछली की तरकारी में डाल दिया।

इसी हुल्लड के समय एकाएक लछमन हाजरा आ गया। उसका मिजाज गरम हो रहा था। कल जिस घर में खेल हुआ था, उसका मालिक बड़ा कमीना था। कस का पार्ट भूल जाने के कारण सभा में हँसी हो गई थी,

इस कारण उसने ढाई रुपये जुमाना कर दिया था। इसपर खूब तूफान खड़ा किया गया था, पर नतीजा कुछ नहीं निकला था, उलटे और गालियां मिली थीं। भूख भी बहुत तेज लगी थी। सामान की गाड़ी पीछे छोड़कर लछमन चला आया था।

लछमन को देखकर सीतानाथ चिल्ला उठा, “देखिये मालिक, ज़रा इसकी बदमाशी देखिये। इसे मछली नहीं दी गई, इसलिए इसमें उसमें नमक भर दिया। कहता है, आप लोगों को खाने नहीं देगा।”

लछमन तिलमिला गया। उसने लपककर अमूल्य के कान पकड़ लिये। बोला, “अच्छा।”

और उसे धकियाते-धकियाते सड़क तक पहुँचा दिया। लौटकर वह हाँफने लगा। अब हरिपद की बारी थी। सीतानाथ बोला, “इसीने उसे भड़काया। ‘नमक लाओ’, ‘हरी मिर्च लाओ’ ‘दाल क्या, गरम पानी है’, इसी तरह की बातें कह-कहकर अमूल्य को उकसा दिया, नहीं तो सच्ची बात यह है कि वह लड़का कुछ बुरा नहीं है।”

लछमन ने हरिपद की ओर आँख तरेरी।

हरिपद रुआसा होकर बोला, “गलती हुई मालिक, अब नहीं होगी। मैं तो हँसी कर रहा था, इसपर वह अनर्थ कर बैठेगा, यह नहीं जानता था।”

लछमन हुंकार के साथ बोल उठा, “इस जून तेरा खाना बद रहेगा। उठ।”

हरिपद पत्तल पर मुह लटकाये रहा। लछमन ने उसका हाथ पकड़कर खींचा, “उठ, मैं कहता हूँ।”

पर वह किसी तरह नहीं उठा, बल्कि पास पाकर उसने लछमन के दोनों पैर पकड़ लिये।

“मालिक, नाक रगड़ता हूँ, कान पकड़ता हूँ। आगे ऐसा कभी न होगा, कभी नहीं।” हरिपद ने गिड़-गिड़ाकर कहा।

आरजू-मिन्नत से नरम पड़कर अंत में लछमन ने कहा, “अच्छा,

जो कुछ पत्तल पर पड़ा है, उसे खा ले, पर इसके बाद एक दाना भी नहीं मिलेगा। समझा? यह मेरा हुक्म है।”

लछ्मन राजा कस का पार्ट करता था। उसी रौबीले लहजे में हुक्म देकर वह सिर पर एक परी तेल थपथपाता जल्दी से नहाने के लिए चल पड़ा।

न होली है न दशहरा । महज वसंत पंचमी है ।

इसके पहले के सालों में प्रसन्न पंडित मूर्ति की व्यवस्था बिना किये फूल, वताशे और गुड़ के लड्डुओं में ही काम चलाया करना था । पर अबकी बार उसने पूरा समारोह कर डाला । डोल, घटा, घडियाल, शहनाई से कान के कीड़े निकले जा रहे हैं । कल से जबसे आर्डर देकर बनाई हुई मिट्टी की प्रतिमा आ पहुँची है, तभीसे धूम है ।

भवतारण चटर्जी खूब खट रहा है । बहुत पुराने अमले में से है, इसलिए खटना तो था ही, खासकर ऐसी हालत में जब मालकिन स्वयं देख-रेख कर रही है । उन्हींके बल-बूते पर तो पूजा हो रही है । पर वह बीच-बीच में मीन-मेख निकालने से भी वाज नहीं आती । आदत में मजबूर जो ठहरी ।

“डेढ़ लड़को की पाठशाला है, पर उसको प्रतिमा के ठाठ देखो ! छप्पर पर फूस तक नहीं है और भाड़-फानूसों का ठाठ हो रहा है ।

प्रतिमा अलवत्ता ऐसी मुन्दर बनी थी कि लोगो को बुलाकर दिखाई जाय । घर को चमका देनेवाली विशाल मूर्ति है । कचहरी के आगन के पास एक पतला-सा बरामदा है । टीन की छत है । उसीमें प्रसन्न गुरु की पाठशाला लगती है । बरामदे में दीवार से सटकर प्रतिमा स्थापित हुई । छोटे-बड़े जो उसे देखते, दातों तले अगुली दबाते । चारों ओर हर्ष की ध्वनि उठ रही थी ।

इद्राणी मकान के अंदर से निकल आई । वह भी लड़के और लड़कियों के साथ उत्सव में मस्त हो गई । उन्होंने एक बार भवतारण को पुकारकर कहा, “पुरोहितजी से कह आइये कि ठीक साढ़े सात बजे पूजा शुरू होगी । देवी सरस्वती को फूल चढ़ाने के बाद ही लड़के खायेंगे, इसलिए

पूजा जल्दी समाप्त हो जानी चाहिए ।”

भवतारण ने कहा, “क्या इतने सवेरे इधर की सब तैयारियाँ पूरी हो जायगी ?”

“उसकी फिक्र न कीजिये ।”

लडके-लड़कियों की तरफ देखकर इद्राणी ने मुस्कराते हुए पूछा, “क्यों तुम लोगों से इतनी जल्दी काम नहीं होगा ? सभी काम अपने हाथों से करना पड़ेगा ? दूसरों पर भरोसा किया कि गये ।”

वे उसी समय काम में जुटने को तैयार थे ।

इद्राणी ने कहा, “बोरे में से आलू निकालकर छील-काटकर धो रखने होंगे । सतरे भी धोने पड़ेंगे । धूल-मिट्टी लगी हुई चीजों से देवताओं का भोग नहीं लगाया जाता । चदन कौन धिमेगा । चदन धिसने का बड़ा चक्का वह रहा ।”

एक लडके ने कहा, “मालकिन फूल कब चुने जाय ?”

“सवेरे । आज का चुना हुआ फूल कल बासी हो जायगा । पुष्पाञ्जलि देनेवाले तुम बहुत-से लोग हो । फूल कुछ ज्यादा ही लगेंगे ।”

“मैं फूल चुनने जाऊंगा ।”

“मैं जाऊंगा ।”

“मैं ।”

सभी जाना चाहते थे । कोई पीछे नहीं रहना चाहता था । इद्राणी बोली, “अरे बस करो ! इतने लोग जाओगे तो गांव में एक भी फूल नहीं बचेगा । पूजा तो बहुत-से घरों में हैं । दूसरों को कहा से फूल मिलेंगे ?”

“हम देंगे । हमसे आकर मांग ले जायेंगे ।”

इद्राणी ने हंसकर कहा, “यह अच्छी जुगत है । जो सवेरे उठ नहीं पाते, पूजा के दिन भी देर तक सोते हैं, उन्हें अच्छी सीख मिलेगी ! फूल मागकर पूजा करेंगे ।”

भवतारण गुस्से में बड़बड़ा रहा है । गांव के ऐरे-गैरे लड़कों से इतनी घनिष्ठता अच्छी नहीं लगती । यह तो कुत्तों को सिर पर चढ़ाना है ; पर

इन बातों को स्पष्ट नहीं कहा जा सकता। बोला, “तो मैं पुरोहित के घर जाता हूँ। उधर से निर्मल मास्टर का भी न्यौता निपटाता आऊंगा। उसे भी न्यौता दिया जायगा न ?”

इंद्राणी बोली, सभीको न्यौता दीजिये। कोई बाकी न रह जाय। मास्टर होना कोई बुरा थोड़े ही है।”

“बुरा क्या है ? इसीलिए पूछ रहा था। बात यह है कि उसने हम लोगों की होड़ में मदरसा खोला है न ?”

गांव के अंतिम छोर पर कोठीवाला जगल है। निर्मल मास्टर का मदरसा वही खुला है। भवतारण का घर भी उधर ही है। उसकी स्त्री शकरीबाला तिमा देखने आई थी। भवतारण ने कहा, “चलना है तो चलो। फिर साथी नहीं मिलेगा। कल सबेरे आकर फिर काम में लग जाना।”

शकरीबाला चुपचाप निकल आई। मुह से कुछ नहीं बोली। आज पहले-पहल इंद्राणी से उसकी भेंट हुई थी। भवतारण की पत्नी होने के कारण इंद्राणी को उससे दो बातें करनी पड़ीं।

भवतारण ने छूटते ही कहा, “देखा न ! इंद्राणी नाम है, इतनी उम्र हुई, पर चेहरे से जाहिर नहीं होता। तुम्हारी क्या राय है ?”

शंकरीबाला ने भीहें चढ़ाकर कहा, “घमड बड़ा है।”

“उन्होंने रीति के अनुसार गले में आंचल डालकर तुम्हें प्रणाम किया, तुम्हीं बल्कि मुह बनाकर रह गईं। भला-बुरा कुछ तो कहा होता।” भवतारण ने कहा।

“प्रणाम किया ! सुना होगा, सिद्धान्त पंडित के घराने की लड़की हूँ, इसीलिए बेगार टाली। पैर पर की धूल भी तो नहीं ली।”

“चपर-चपर न करो। कहते हैं, पेड़ की दुश्मन बेल है और आदमी की दुश्मन जबान।”

भवतारण ने भयचकित दृष्टि से इधर-उधर देख लिया कि कहीं पत्नी की बातचीत का एक अक्षर भी किसी दूसरे के कान में तो नहीं गया। पर

शंकरीबाला तो किसी जमींदारी सरिस्ते की कार्रिदा थी नहीं, वह त्रिभुवन में किसीको तरह देकर बातचीत करनेवाली नहीं थी। बोली, “ऐसा पक्का बरामदा है, पर देखा नहीं कि किस तरह धूल के डर से पजों के बल चल रही थी ! अगर सारी दुनिया में गद्दी बिछ जाती तो शायद इसको आराम रहता !”

भवतारण ने इसपर कहा, “रग-डंग अलग तो होना ही हुआ। हम-लोग फटी चप्पल फटफटाते हुए चलते हैं और देवी लक्ष्मी शतदल पद्म पर पैर टिकाती है। इसपर बुरा मानना व्यर्थ है।”

थोड़ी दूर तक चुपचाप चलकर शंकरीबाला ने ब्रह्मास्त्र के रूप में कहा, “बड़े लोगो के लडके हर साल इसी प्रकार मरते हैं।”

भवतारण ने दोनों कानों में अगुली डाल ली। बोला, “राम-राम ! वांझ हो, कभी बच्चों से साबका पड़ा नहीं, इसीलिए तुम्हारे मुह से ऐसी बात निकली ?”

शंकरी इसपर भी लज्जित नहीं हुई। बोली—“लडका मर गया तभी तो तातीहाट में ऐसा जशन मना रही है ! इतने दिनों तक तो फूटे चूल्हे की राख बाटकर भी किसीका भला नहीं किया। जब बड़े लोग मुसीबत में फंसते हैं, तभी गांव की सुधि आती है।”

शंकरीबाला खडका उठाकर मकान के आंगन में दाखिल हुई। भव-तारण जल्दी-जल्दी निर्मल मास्टर के घर की ओर चला। लौटते समय चक्रवर्ती टोला होकर पुरोहितजी को सदेश देना है। नद ग्वाले को भी एक बार फिर कह देना है कि सवेरे ही पंद्रह सेर छेना पहुंचा दे।

भवतारण कोठी के जंगल में गया तो दंग रह गया। मालकिन के आने के बाद कामकाज के कारण एक महीने से इधर आना नहीं हुआ था। इस बीच लड़कों ने यह क्या असंभव को संभव कर दिया ! महाभारत में मय दानव<sup>१</sup> की बात आती है। वही मामला हो गया। चाहे जितना

---

<sup>१</sup>महाभारत का एक पात्र। इसने इंद्रप्रस्थ नगर बनाया था।

काम हो, यह अद्भुत बात देखकर चपचाप चल देना कैसे सम्भव हो सकता था ! सामने का जंगल करीब-करीब गायब हो गया । जगह बिल्कुल पहचान में नहीं आती । नील की खेती के जमाने के बाद शायद पहले-पहल यहां सूरज की रोशनी पड़ी है । पांच-छः लड़के घास काटने में लगे हुए हैं और कटी हुई घास के गट्टर बनाकर साफ किये हुए मैदान में रखे जा रहे हैं । कुल्हाड़ी से बांसों की कटाई हो रही है । कटे हुए बांस तंग रास्ते के किनारे रखे हुए हैं । बांस की गांठों के फटने से फट-फट आवाज आ रही है ।

ऐसी हालत में धीरज रखना कठिन था । भवतारण ललकारकर बोला—

“क्या ये तुम्हारे बाप के बास हैं, जो काट रहे हो ? जब फौजदारी मुकदमा दायर होगा तो तुम लोगों को कौन बचायगा ?”

एक कमरा तैयार हो चुका था । पर वह काफी नहीं था, और भी कमरे चाहिए थे । निर्मल पैमाइश करके जमीन पर निशान बना रहा था । बोला, “क्या मामला है, चटर्जी बाबू ?”

निर्मल के सामने भवतारण ने अपना लहजा बदल दिया । बात यह थी कि मैनेजर की निर्मल पर विशेष कृपा थी । न मालूम कहातक क्या तय हुआ था, इसलिए सावधानी के साथ आगे बढ़ना उचित था ।

“मैं पूछ रहा था कि यह जो बबूल, भाड़ और भाड़िया काटकर इस जगह को बिल्कुल नगा बनाया जा रहा है, सो क्यों ?” भवतारण ने कहा ।

निर्मल मुस्कराकर बोला, “जंगली सूअर बसते थे यहां, अब आदमी बसाये जायेंगे । मैनेजरसाहब को मालूम है ।”

“सो तो ठीक है, पर क्या उन्होंने जायदाद के बास और लकड़ी आदि भी खैरात कर दी है ?”

‘उन्हींसे पूछिये ।’

“वह तो बीस रोज से कलकत्ता जाकर बैठे हैं ।”

फिर जरा सिर हिलाकर भवतारण बोला, “मैं भी माजी से यही कह

रहा था। बिना मैनेजर के कहे तुम्हारे गण भला इतनी हिम्मत कैसे कर सकते थे।”

निर्मल ने कहा, “आप गण किन्हे कह रहे हैं? ये तो सब गाव के ही लडके हैं।”

वातो में गरमी की झलक पाकर भवतारण फिर से संभल गया। बोला, “बात यह है कि तुम ठहरे भोलानाथ, ये सब तुम्हारे ही अनुचर हैं, इसीलिए मैंने यह उपमा दी।”

कहकर वह ‘हो-हो’ करके हँसने लगा, पर मदेह की गाठ और कड़ी हो गई। जमीन पर मकान बनाने की अनुमति, उसपर वास, लकड़ी की ख़रात। न कोई दरख्वास्त, न कोई लिखा-पढ़ी। वातो-ही-वातो में इतना मालूम हो गया। इस पापी कलियुग में ऐसी बात तो कभी सुनने में नहीं आई। निर्मल कम नहीं है। मैनेजर की गरहाजिरी में मकान और कमरे बनाकर उसे घेरकर दखली हक पैदा कर रहा है। निर्मल देखने में सीधा-सादा लगता है, पर है बड़ा चट। यह तो भवतारण छोटी उम्र से ही देखता आ रहा है।

पहर-भर रात हो चुकी थी। लडके-लडकिया काम में जुटे थे। इतने में उनके खाने का बुलावा आया। इद्राणी रसोईघर के फर्श पर अपने दल-बल के साथ सबके बीच में जा बैठी। वे सब खाने लगे। इद्राणी उनकी देख-रेख करने लगी। किसे क्या मिल रहा है या नहीं मिल रहा है, उसीके हिसाब से महाराज को आदेश देने लगी।

अमला ने आकर कहा, “मा, म्हारी तबीयत ठीक नहीं है, घर चलो।”

उसने कई बार आग्रह किया, पर इद्राणी ने सुनी अनुसुनी कर दी। जब अमला चली गई तो इन लोगो की तरफ देखकर मुस्कारते हुए धीमी आवाज में बोली, “जलन में पुकार रही है। ससभे। मैंने उसपर भंडार का बोझ डाल दिया है, इसलिए बध गई है। कहीं जा नहीं पाती। तभी तो चाहती है कि मैं भी सोने के कमरे में बध जाऊँ। बाबा, यह तो

मुझसे नहीं हो सकता ।” इतना कहकर वह खूब जोर से हँसी ।

हँसी सुनकर अमला को आश्चर्य हुआ । गभीर बल्कि रूखे स्वभाव-वाली इन्द्राणी किस मन्त्र से एकाएक ऐसी बालक बन गई है ! मुकुल के मर जाने के बाद वह किसी दिन इतना दिल खोलकर नहीं हँसी थी ।

खाना खतम हो जाने पर इन्द्राणी बोली, “अब तुम लोग धीरे-धीरे घर चले जाओ । बत्ती दिखाकर पहुँचा देंगे । तडके चले आना । ठीक है न ?”

एक लड़का मचलकर बोला, “मैं नहीं जाने का । अगर सवेरे नींद नहीं खुली तो ? पिताजी जगाने से रहे ! उन्हें शायद पता भी न होगा । फिर देवी को पहरा भी तो देना है । मालकिन-मा मुझे यही रहने दीजिए ।”

इन्द्राणी तैश में आ गई । बोली, “बार-बार ‘मालकिन-मा, मालकिन-मा’ क्यों कह रहा है रे ।”

“तो क्या कहूँ ?” लड़का डर से सकपकाता हुआ बोला ।

“कुछ नहीं । ‘आप’ ‘वह’ इस तरह बोल, नहीं तो सिर्फ ‘मा’ कह । ‘मालकिन’ सुनकर घिन लगती है ।”

एक अकेला वही नहीं, अतः तक दस-बाहर जिद्दी लड़के रह ही गये । कचहरी के दालान के फर्श पर लंबा बिस्तर लगा । जम्हाई आते ही बच्चे सो जायेंगे, इस वादे पर इन्द्राणी कहानी सुनाने को तैयार हो गई । पर सभी सावधान थे कि कहीं जम्हाई न आ जाय ।

तेज गैम की बत्ती जल रही थी । इन्द्राणी अपनी बहुत-सी देखी हुई जगहों की बातें सुना रही थी । पुरी के समुद्र-तट, दार्जिलिंग से कांचन-चंघा का दृश्य, यथातक कि हवाई जहाज से एक बार बादलों के बीच होकर जाते समय जमीन पर बहुत तेजी से उतरने की रोमांचकारी कहानी उन्होंने सुनाई । इसके बाद बोलीं, “मैं अकेली बक रही हूँ, कोई और भी तो कुछ कहो ।”

“मैं भूत-प्रेत की कहानी सुना सकता हूँ, आप सुनेंगी ? यहां एक नीलखोला मैदान है । उसमें टोपवाला गोरा भूत घूमता रहता है ।”

मवेरा हुआ। इद्राणी ने वही पर झपकी ले ली। पर उनके चेहरे पर थकावट का कोई चिह्न नहीं था। जो लोग अभी तक सो रहे थे, उन्हें पुकारकर जगाया। फिर अदर महल के तालाब में जाकर दो डुबकी लगाकर साडी पहन, पूजा के स्थान पर आ डटी। न मालूम किसी काम से आकर प्रसन्न मुग्ध नेत्रों से थोड़ी देर देखता रहा। फिर निमंत्रितों को पुकारकर कहा, “आप लोगो ने लक्ष्मी सरस्वती के विरोध की बात मुनी होगी। वह झूठी है। स्वयं माता लक्ष्मी माता सरस्वती की पूजा की नैयारिया कर रही है। आप लोग जाकर देखिये।”

भवतारण ने पंडित के मुह की बात छीनकर इतनी ऊंची आवाज में, कि इद्राणी भी सुन ले, कहा, “लक्ष्मी तो है ही, पर वह पंछी देवी<sup>१</sup> भी है। कल से बच्चों की टोली लेकर जो परेशानी उठा रही है, वह हमपर पड़ती तो सिर घूम जाता और दो-एक खून भी हो जाते तो कोई आश्चर्य नहीं।”

आगन में प्रसाद बाटा जा रहा था। दक्षिण के वरामदे में लोग एक-एक करके उठकर कागज की थैली में फल-मूल और कमल के पत्तों में बधी हुई मिठाई लेकर पश्चिमी कोण की सीढ़ी में उतर जाय, ऐसी व्यवस्था की गई थी। पर भीड़ आशा में अधिक हो जाने के कारण हुल्लड और शोर-गुल हो रहा था।

पुरोहित को दान-दक्षिणा देकर इद्राणी जल्दी में आगन के दरवाजे के पास आई।

बोली, “चटर्जी महाशय, टोकरी मुझे थमाइये। आप उधर खड़े हो जाय। बलवत, तुम यहा क्या कर रहे हो? मुन्ने-मुन्नियों को डराने के लिए लाठी ले आगे हो? जाओ, जरा हट के खड़े हो।”

इंद्राणी हँसने लगी। हुल्लड फौरन बन्द हो गया।

“मलय, बेटा, तू मिठाइया मेरे हाथ में देता जा। क्यों क्या तुझमें यह काम न होगा?”

<sup>१</sup> बंगाल में बच्चा देनेवाली तथा बच्चों की देवी।

इद्राणी और लगभग पांच व्यक्ति आगन में रहे । एक-के-बाद-एक लोग तरतीब से प्रसाद लेकर जाने लगे और मशीन की तरह काम होने लगा, देखते-देखते बाहर फर्श पर सतरो के छिलको का ढेर लग गया । लडके एक-दूसरे पर संदेश फेंककर मार रहे थे । आखिर कितना खाया जाता ।

दिन ढल चला था। अमूल्य घाट की एक चौड़ी सीढ़ी पर खुले में बैठा था। हरिपद बड़ी देर से उसकी तलाश में फिर रहा था। अंत में उसने अमूल्य को यहाँ ढूँढ़ ही निकाला। बगल में बैठकर उसने आहिस्ते-से पीठ पर हाथ रखा। अमूल्य ने मुँह फेरा तो वह दिखाई पड़ा।

रुआसा होकर बोला, “भैया, भूख के मारे दम निकला जा रहा है।”

ऐसा कहने की दरकार नहीं थी। चेहरे से ही बात साफ थी। हरिपद को दुःख हो रहा था। मंडली के सारे लोगों में यह लड़का उसे बहुत पसंद है। पर एकाएक उसकी समझ में नहीं आया कि जवाब में क्या कहे। उसने फतूही की जेब से एक बीड़ी निकाली। बोला, “ले, पी।”

उसने अमूल्य के मुँह में बीड़ी खोस दी और फिर बड़े प्यार से दियासलाई जलाई। तसल्ली देता हुआ बोला, “गुस्सा करके क्या करेगा? हम लोग गोप-नोपी का पार्ट जो करते हैं। राजा या वजीर बनते होते तो खातिर होती। मछली का कत्तल तो छोटी बात है, रूठ जाते तो स्वयं लछमन आकर निहोरे करता। सबके सामने की बात है कि ‘पेट में दर्द है’ कहकर नंद का पार्ट करनेवाले ने किस तरह बात-की-बात में अपनी तनख्वाह बढ़वा ली।”

अमूल्य फुफकार उठा, “यह लछमन का बच्चा किसी अर के धोखे में होगा। अंधेरे में ईंट मारकर उसका सिर फोड़ दूंगा। उसके साज-सामान के संदूक में आग लगा दूंगा।”

हरिपद समझाने लगा, “उससे फायदा क्या होगा? हम लोग हीले से लगे हुए हैं। फिर तो दर-दर घूमना पड़ेगा। सारी मंडलियाँ खतम हो रही हैं। नई मंडली ढूँढ़ना बड़ी टेढ़ी खीर है।”

कुछ रुककर सांस लेते हुए वह फिर बोला, “थोड़ी-बहुत पूजा का

होता तो हमलोग खुद ही एक मडली खोल लेते। मैं कृष्ण बनता और तू बनता राधिका। लोग हाथो-हाथ हमे उठाते। लछमन ने तो हम लोगो को पहचाना ही नहीं।”

कई एक कश खीचकर अधजली बीड़ी को दूर फेंकते हुए अमूल्य एक छलाग में उठ खड़ा हुआ।

“क्या है, बे ?” हरिपद बोला।

“भैया, धुएँ से पेट नहीं भरता, सिर घूम रहा है।”

हरिपद ने कहा, “थोड़ा पानी पी ले।

“तबसे पानी ही तो पी रहा हूँ।”

अमूल्य उत्तेजित हो गया। बोला, “आप तो उड़ा रहे हैं मछली का कत्तल और हमारी तकदीर में सिर्फ पानी और धुआँ ही बढ़ा है।”

इतना कहकर वह दौड़ने लगा।

हरिपद ने पुकारा, “सुन तो, कहा जा रहा है ? भाग मत। तू नहीं होगा तो मुझे भी मच पर नहीं उतरने देंगे। पाचू और अधर तो मौका देख ही रहे हैं। उनके पौ बारह हो जायेंगे।”

अमूल्य ने कोई उत्तर नहीं दिया। दौड़ता रहा और आगे बढ़ गया।

×

×

×

भंडार की जिम्मेदारी डालकर इद्राणी ने अमला को बड़ी झंझट में डाल दिया था। वह पसीने-पसीने हो रही थी। प्रसाद बटना खत्म होते ही उसने नाराजी से दरवाजे पर ताला डाल दिया। अब चार बजे से पहले किसी तरह नहीं खोलेंगी, मा के हुक्म पर भी नहीं। काम के पीछे जान थोड़े ही देनी है।

उसने फिर से सकल्प किया कि अशोक के आते ही वह उसके साथ चली जायगी। जरूर चली जायगी। मा को देर करनी है, करे। यहाँ जितने दिन चाहे, पड़ी रहे। ताऊजी (हरितोष) वहाँ है, सो कलकत्ते में रहने में कोई असुविधा नहीं है। अशोक ‘आऊँ-आऊँ’ करके भी नहीं आता। अजीब देश है यह। बात करने को भी कोई नहीं मिलता। दिल खोलकर

वात न कर पाने से पेट फूलता है। मा की वात कुछ समय में ही नहीं आती। दुनिया में इतनी जगहें हैं, पर पता नहीं, इन्हें यह तातीहाट गांव कैसे पसंद आ गया ?

कल शाम को अमला एक पेड़ को ग्रहण के बेरों से लदा देख आई थी। था तो देशी बेर—बहुत खट्टा, पर नमक और मिर्च मिलाने पर खूब मजेदार बन जायगा। संयोग से उसे एक लंगी भी मिल गई। इतने में मा ने आकर भंडार की चाभी सहेज दी। चाभी क्या सहेजी, मानो हाथ-पैर में जजीर डाल दी।

इतनी देर में अब कुछ सास लेने का मौका मिला है। इद्राणी दरवाजा बंद करके आराम कर रही है, सो उन्हें भी कुछ पता नहीं चलेगा। सोचा, लाओ, बेर खा आऊ। लेकिन कलवाली लंगी हाथ में लेकर पहुंची तो उसे मालूम हुआ कि वह तो बहुत छोटी है। जहां बेर है, वहां तक नहीं पहुंचती। अब वह एक बड़ी लंगी की तलाश में घूमने लगी।

बलवत ने पूछा, “दीदी, क्या ढूँढ रही हो ?”

बलवत ने दो बार में मागकर अठारह पतुआ खाये थे। अमला से वह बहुत खुश था। उससे छिपाने की कोई बात नहीं।

बड़े जोश के साथ बलवत ने कहा, “दीदी, कहती नहीं कि बेर खाने है। बस मुह खोलने की देर है, जिसके भी पेड़ में बेर होंगे मैं ताड़ लाऊंगा। किसीने चू भी की तो देख लूंगा।”

अमला ने कुछ डरते हुए कहा, “ऊह, तुम मा को नहीं जानते। उनके कान में किसी तरह भनक पड़ गई कि दूसरे की चीज लाये हो, तो लेने के देने पड़ जायगे। सो छोड़ो इस बात को। अपने ही बागों में बहुत-से बेर हैं। कई पेड़ इतने लदे हैं कि लगता है डारे टूट जायगी। दूसरी जगह जाने की जरूरत नहीं है।”

आगन के किनारे से एक खाली टोकरी उठाकर बलवत बोला, “तो चलो।”

आगे-आगे अमला दौड़ती हुई जा रही थी। पर यह क्या ? गठली

फेक-फेककर कौन मार रहा है ? उसने चकित होकर चारों तरफ देखा पर कोई दिखाई न पड़ा ।

दो डालियो पर आराम से पैर लटकाकर बैठा हुआ अमूल्य मजे में बेर खा रहा था और इधर-उधर गुठलिया फेंक रहा था । उसने धोती के छोर को, भोली-सी बनाकर, बेरो से भर लिया था । उसके मन में अब रचमात्र भी दुःख न था । शुरू-शुरू में अमला आदि उसे दिखाई नहीं दिये, पर जब उनपर निगाह पड़ी तो वह जल्दी से ऊपर चढ़ गया और घने पत्तों की आड़ में छिप गया ।

अमला को काटों तो खून नहीं । आखों में आसू छलछला आये । बोली, “कल इतने बड़े-बड़े गदराये बेर थे और आज एक भी नहीं ।”

वलवत ने कहा, “पेड़ भूल गई होगी, दीदी ।”

अमला ने तेजी से कथा हिलाते हुए कहा, “कभी नहीं । नीचे यह अनन्नास का पौधा था । कभी भूल हो ही नहीं सकती ।”

“तो लगूर आकर चट कर गया होगा ।”

फिर भी अमला को इतमीनान नहीं हुआ । बोली, “कल शाम को मैं अपनी आखों से देख गई थी । आज साफ !”

“होने को तो बहुत-कुछ हो सकता है, दीदी । बीच में एक रात गुजरी है । इतने समय में तो लगूर डाल, पत्तों और जड़समेत सब उड़ा सकता है । यह जगह बड़ी खराब है । पेड़ पर हो या घर में, कहीं भी माल का बचाव नहीं रहता । पलक मारते ही गायब हो जाता है । क्या किया जाय !”

वलवत पेड़ को सतर्क दृष्टि में देख रहा था और सोच रहा था कि इतनी आशा बाधकर कलकत्ते की लड़की बाग में आई है, दो-चार बेर भी मिल जाते तो काम बन जाता । उधर अमूल्य का बुरा हाल हो रहा था । चाहता था कि डाल हिले नहीं, साथ ही वह और भी सुरक्षित हो जाय, इसलिए वह ऊपर को जा रहा था । इस प्रकार सबसे ऊँची डाल पर जा पहुँचा ।

एकाएक जिस बात की आशा नहीं थी, वही हुई । डाल टूट गई

अमूल्य धम्म-मे नीचे आ गिरा। धोती के छोर पर बाधे हुए बेर बिखरकर फैल गये। टोकरी फेंककर बलवत चिल्लाता, गाली देता दौड़ पड़ा।

पास पहुँचे कि तबतक अमूल्य सभल गया था। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसके हाथ के पास ही इतने बेर थे कि वह आसानी से आत्म-समर्पण करनेवाला नहीं था।

उसने दोनों हाथों से बेर मारना शुरू किया। लडाई में मशीनगन की गोलियाँ जिस प्रकार चलती होगी, उसी प्रकार बेर चले। अचानक एक बेर जाकर अमला की आखों के पास लगा। उसकी आँखों में अंधेरा छा गया और वह 'मा...री' कहकर मिट्टी में बैठ गई। बलवत ने देखा कि मामला सगीन है तो वह आगे नहीं बढ़ा। जोर-जोर से चीखने लगा, "हाय इसने दीदी को मार डाला, दीदी को मार डाला।"

देखते-देखते बहुत-से लोग जमा हो गये। अमूल्य नौ-दो ग्यारह होने की फिराक में था, पर जब उसने अपने चारों ओर देखा तो समझ गया कि भागने की कोशिश बेकार होगी, इस व्यूह को भेदना संभव नहीं।

उसने असहाय कातर कंठ से कहा, "मा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने नहीं मारा। फिर आप लोग यह भी तो देखिये कि कहीं बेर से चोट लगती है! यह तो यो-ही मक्कर कर रही है।"

बलवत अमूल्य को बाल पकड़कर घसीट रहा था। बाल बड़े होने के कारण अच्छी तरह उसके हाथ में आ गये थे। खींचकर उसे आगन में ले आया। वहाँ भवतारण अकेला बैठा बाजार का हिसाब मिला रहा था। वही बद करके बाहर निकल आया।

अमूल्य बार-बार बाल छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था और बुरी तरह रो रहा था। भवतारण उसे देखकर हँस पड़ा। बोला, “बलवत, बाल छोड़ दे। अघेर न कर। घूमे-तमाचे तू चाहे जितने मार ले, पर देखना, काढ़ी हुई माग कहीं बिगड़ न जाय, नहीं तो माग बिगड़ने के शोक में यह छोकरा मर मिटेगा।”

भीड़ के साथ मलय भी था। उसने कहा, “मारने-पीटने से क्या होगा? ऐसे लोग मार-पीट से काबू में नहीं आते। जंगले से बाधकर माजी को खबर देदो। वह जो करे सो करे।”

“ठीक है। तो यही करो, बलवत बड़े घर की बड़ी जुगत है। आखे बद करके छोटे बाबू की बातें सुने तो कौन कह सकता है कि उनकी उम्र कम है?”

घर की गोशाला से गाय बाधने की रस्सी लाकर अमूल्य के दोनों हाथ जंगले की छड़ों से बांध दिये गए।

इंद्राणी को थोड़ी-थोड़ी भपकी आ रही थी कि बलवत की पुकार में हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई। सारी बात सुनकर उनका चेहरा सूख गया। बोलीं, “कहा है अमला? बाग में पड़ी है या तुम लोग उसे उठा लाये हो?”

बलवत बोला, “आप परेशान न हों, मांजी। उन्हें उठाकर नहीं लाना पड़ा। वह आप ही चलकर आ गईं। हा, उनकी आख बाल-बाल

वच गई। आख के पास की वह जगह सुपारी की तरह फूल गई है।”

अमला वही थी। इद्राणी की उसपर निगाह नहीं पड़ी थी। मा को देखकर उसने मुह फेर लिया। डर के मारे बुरा हाल हो रहा था उसका।

इद्राणी पास जाकर बोली, “देखू।”

अमला ने कहा, “कुछ नहीं हुआ, मा। पानी में भिगोकर कपड़ा बाध लिया है।”

इद्राणी ने पट्टी उठा ली और नाराज होती हुई बोली—“बेर न मारकर गुम्मा मारकर सिर फोड़ देता तो अच्छा रहता। सयानी लड़की है, चुड़ैल की तरह बागो में फिरती रहती है। घर में पूजा हो रही है और यह बेर खाती फिरती है। ले अभी निकालती हूँ तेरे पेटूपन को। ताले के अन्दर बद करूँगी, तब अकल ठिकाने आवेगी।”

क्रोध के समय इद्राणी को भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता था। हा, गुस्सा रहता थोड़ी ही देर था। अमला उन्हें खूब जानती थी। वह शक्ति होकर इधर-उधर देखने लगी कि कहीं और कोई न सुन ले।

“अरे, क्या मामला है? क्या हुआ?” अमृत्य ने चकित होकर निर्मल की तरफ देखा। उसके शब्दों में सहानुभूति देखकर अमृत्य की दोनों आंखों में आँसू भर आये। बोला, “बाबूजी, दोपहर को खाना नहीं मिला, इसलिए पेड़ पर चढ़कर बेर खा रहा था।”

“तू कौन है?” निर्मल ने पूछा।

“मैं मडली का लड़का हूँ। बाबूजी के यहाँ नाटक करने आया हूँ। इनके बेर के पेड़ देखकर मन में आया कि कौएँ और चिड़िया बेरों को सफा कर देंगी।...”

बीच में ही रोकते हुए निर्मल ने कुछ तीखे लहजे में कहा—“सचमुच बाबू के घर में क्या कौआँ आदि का ही राज है? बिना पूछे तू उनके पेड़ों पर चढ़ा क्यों?”

तभी पैर की आहट हुई। उसे सुनकर उसने पीछे की ओर देखा तो इद्राणी खड़ी थी।

इद्राणी ने एक निगाह निर्मल को देख लिया और बिना कुछ कहे अमूल्य के पास जाकर बोली, “तुझे खाना क्यों नहीं मिला था ?”

लछमन के हाथों जो अपमान हुआ था, उसकी बात तो कही नहीं जा सकती थी। अमूल्य बोला, “खाऊ कैसे, माजी ? दाल है कि पोखरे का पानी, समझ में नहीं आता। उसपर बर्तन में नीचे लग जाने की गंध। मुंह में डालने पर जी बिगड़ता है। माजी, हम लोग ठहरे सुखी कबूतर। बड़े आदमियों के आगमन में फरमायशी गाने गाते हैं, बड़ों के यहाँ गुटुर-गू करते हैं। फटे हुए टाट पर सो सकते हैं, पर खाने का दुःख नहीं सहा जाता। क्या करें ?”

इद्राणी ने रुष्ट आँखों से बलवत की ओर देखा। बलवत ने कहा, “बिल्कुल झूठी बात है, माजी। सीधे में मछली भी भेजी गई थी। मैं खुद दे आया था।”

अमूल्य ने कंधे हिलाते हुए कहा, “पर यह तो पूछिये कि कितनी कत्तले थी। कुल मिलाकर दो गड़े थी। हम बत्तीस प्राणी ठहरे। सीतानाथ कह रहा था बूककर भात पर छिड़क दी जाय तो कहने के लिए हो जायगा कि सबने खाई।”

इद्राणी का गौरा चेहरा तमतमा गया।

निर्मल बोला, “उत्सव के दिन यह लडका खाली पेट बधा पड़ा है, यह ठीक नहीं है। छुड़वा दीजिये।”

इद्राणी ने बलवत को हिदायत दी, “इसकी रस्सी खोलकर घर के अंदर ले जाओ। तुम लोग बिल्कुल बेअकल हो। सदर में सैकड़ों आदमियों की आँखों के सामने यह सब कर रहे हो। कोई बात है भला !”

निर्मल ने कहा, “मेरे साथ चलो कुछ खिला दूँगा। खेल के पहले पहुँचा दूँगा। यह जिम्मेदारी मेरी है।”

इद्राणी बोली, “नहीं, इसे थाने में भेजा जायगा।”

निर्मल ने खीझकर कहा, “इतना होने पर भी थाना बचा है ! क्या वेर चुराने के लिए इसे फाँसी पर चढ़ाना है ?”

इद्राणी ने उत्तर नहीं दिया। बनवंत बोला, “है तो यह फासी का ही मामला। यह छोकरा खूनी है, खूनी। पर अब भीगी बिल्ली बनकर ‘म्याऊं-म्याऊं’ कर रहा है, लेकिन इसीने वेरो की मार में दीदी के प्राण ही ले लिये थे।”

बनवंत रस्सी खोल रहा था। इद्राणी एक टक उस अवारा लडके की तरफ देख रही थी। उनकी भाव-भंगिमा कुछ ऐसी थी कि अमूल्य उसे देखकर विचलित हो गया।

इद्राणी ने हुक्म दिया, “इसे कोठरी में बन्द कर दो। देखना, कहीं भाग न जाय।”

भवतारण उधर से जा रहा था। निर्मल पर निगाह पड़ते ही जल्दी में आगे बढ़ आया। हाथ पकड़कर बोला, “आ गये, मास्टर? तुमने बड़ी अवेर कर दी। इधर आओ, इधर, प्रसाद लेकर तब जाना।”

निर्मल ने कहा, “नहीं...”

“उत्सववाले घर में बिना मुह मीठा किये ही लौटोगे? यह नहीं हो सकता।”

“मैं अकेला ही ऐसा नहीं हूँ। हाथ छोड़ दीजिये। खाने की इच्छा नहीं हो रही है।”

निर्मल जबरदस्ती हाथ छुड़ाकर चला गया। इद्राणी ने उसे आग-बबूला होकर देखा।

इंद्राणी इस घर में बहू बनकर आई थीं। अमला के जन्म के बाद वे लोग कलकत्ता चले गए थे। वहाँ उनके पति नवकिशोर के दिमाग में आया कि नदी में स्टीमलच चलायेंगे। विचार आया कि कई-एक मित्रों की मदद से भारी-भरकम-सा नाम देकर एक कम्पनी खोल ली। कलकत्ते में उसका हैड आफिस रखा गया। कम्पनी के काम में वह इतने खो गये कि खाने-पीने तक की उन्हें खबर न रहती थी।

लेकिन बहुत दिन हुए वह कम्पनी उठ गई। नदी सेवार में ढक गई। इसपर डोगी चलाना भी मुश्किल हो गया। नवकिशोर चल बसे। एक हरितोष के अलावा उस जमाने के मित्र भी न मालूम कहा तितर-बितर हो गये। सरकारी नौकरी में पेशान लेकर हरितोष अब यहाँ सेवा कर रहे हैं। चाहते तो शहर में आराम में बने रहते, पर सेवा की भावना से अकसर इसी इलाके में रहते हैं। वह राय-परिवार की जायदाद के मनेजर हैं।

उस जमाने की न मालूम कितनी स्मृतियाँ इस पुराने मकान के साथ जगह-जगह जड़ी हुई हैं। विंगल आगन को पार करके एक बड़ा-सा कमरा है। उसकी दीवार पर मुनहरे पानी के बेल-बूटे बने हुए हैं। वे बेल-बूटे समय की थपेड़ों और ठीक देखभाल के बिना अब करीब-करीब मिट गये हैं। ध्यान से देखें तो कहीं-कहीं दिखाई देते हैं। इसी कमरे का नाम सोना-कोठरी या सोनेवाली कोठरी है। इसीमें नवकिशोर उठते-बैठते थे और दिन में सोते थे। मूड उठाये हुए हाथों की नक्काशी का लकड़ी का एक पलग है। एक तरफ दीवार में लगी हुई बड़ी भारी आलमारी है। कई भारी-भारी कुर्सियाँ हैं। दीवार पर पुरखों के तैलचित्र लटक रहे हैं। कलकत्ते में उन्हें इंद्राणी साथ ले आई है। नवकिशोर एक तस्वीर में कुर्सी पर बैठे हँस रहे हैं। उसमें मुकुल भी है।

अमूल्य को इसी कमरे में लाया गया ।

पूरी हिदायत न मिलने के कारण उसके हाथ नहीं बांधे गए । दरवाजे के सामने बलवत लाठी लेकर तनकर खड़ा हो गया । इद्राणी अभी तक नहीं आई । शायद थाने में खबर दिलवाने का बंदोबस्त करने गई है । आज सवेरे अमूल्य न मालूम किसका मुह देखकर उठा है । बड़ी मुसीबत हो रही है इसकी । दीवार से पीठ लगाकर वह वलि के वक्रे की तरह प्रतीक्षा कर रहा है ।

अतः इद्राणी आई । फौजी ढग में अमूल्य की तरफ देखकर हुक्म दिया, “बैठ जा ।”

अगली से एक कुर्सी की ओर इशारा किया, पर अमूल्य की उसपर बैठने की हिम्मत न हुई । वह फर्श पर पत्थी मारकर बैठ गया ।

इद्राणी धमकाकर बोली, “अरे, धूल में बैठा है ।”

मजबूरन वह उठा और जगले पर जा बैठा ।

इतने में रसोइया ब्राह्मण लुचई और तरह-तरह की तरकारिया सजाकर लाया । पीछे-पीछे अमला दही-मिठाई लेकर आई । नौकरानी गैल ने जल्दी में चौका लगा दिया । गलीचे का आसन बिछ गया । सामने फूल की चमकती थाली में लुचई, कटोरियों में तरकारिया और तश्तरियों में तरह-तरह की मिठाइयां लग गईं । पानी का गिलास रखा गया । अमूल्य कैमें मोचता कि यह सब उसीके लिए है !

इद्राणी ने डाटते हुए कहा, “देखता क्या है, जा वहां बैठकर खा ।” फिर लड़की की तरफ देखती हुई बोली, “सब चीजे आ गईं न ? तुम लोगो पर भरोसा किया नहीं जा सकता । जिधर मैं नहीं पहुंच पाती, उधर ही कोई-न-कोई अनर्थ हो जाता है ।”

बलवत और अधिक सहन न कर सका । बोला, “माजी कैसी बात करती है ? इसे जो नियामते खाने को मिली है, वे इन मडलीवालो के पुरुखो को भी नसीब न हुई होगी ।...”

इद्राणी ने बलवंत को जोर से घूरा । वह बीच ही में चुप हो गया ।

पर इद्राणी ने स्वयं ही बखेड़ा खड़ा कर दिया। बड़े आकार की भींगा मछली की ओर इशारा करती हुई महाराज से बोली, “यह क्यों दी ? कटोगी समेत उठा ले जाओ।”

सचमुच मडलीवालो के भोजन में कभी ऐसी चीज नहीं रहती। गलती से आ गई तो मालकिन के आदेश से महाराज थाली में से उसे उठा ले गया। इद्राणी ने अपना आशय स्पष्ट करते हुए कहा, “इसका छिलका लाल पड़ गया है। जानते नहीं हो कि भींगा मछली का छिलका लाल पड़ जाय, तो वह अच्छी नहीं समझी जाती। तुमने आखिर यह पकाई ही क्यों ? जाओ, नाली में डाल दो, नहीं तो तुम लोग ऐसे हो कि किसीको दे मारोगे।”

अमूल्य सारा दुःख-दर्द भूल गया। न जाने कैसे वह थे कि वह लक्ष्मी के भंडार में आ गया। कही सपना तो नहीं देख रहा था ?

भूख के मारे वह बड़े-बड़े कौर निगलने लगा। पलंग पर बंठी इद्राणी देख रही थी। यह लड़का मुकुल की ही उम्र का होगा। पर इसके साथ मुकुल की तुलना किसी तरह भी नहीं की जा सकती। मुकुल देखने में कितना सुंदर, उसके शरीर की बनावट कितनी ठोस, रंग कितना साफ। वह क्या मुकुल खड़ा है ? हा, वही है। नवकिशोर ने उसके कंधे पर अपना दाहिना हाथ रख रखा है। इद्राणी बाईं तरफ है और गोद में मलय है। अमला सामने की ओर जमीन पर झुककर उकड़ू बंठी है। सब उसी तरह है—दो जने चले गए। मुकुल कहा गया ? क्या दूर अपने पिता के पास पहुंच गया ?

इद्राणी की आंखें भर आईं। उसने चुपके में आचल से उन्हें पोंछ डाला। खाना समाप्त कर अमूल्य उठ रहा था। इद्राणी ने कहा, “अरे, संदेश तो पड़ा ही रह गया।”

“वह नहीं खाया जाता। गंध आती है।”

इंद्राणी तेज हो गई। बोली, “बैर फेंककर लोगों को जान से मारने पर उतारू रहता है, पर यह संदेश तुमसे नहीं खाया जाता ! खाना ही

पड़ेगा ।”

अमूल्य हक्का-बक्का हो गया । उसने जुर्म तो संगीन किया है, पर सजा देने में भी कोई रू-रिआयत नहीं की जा रही है ।

इंद्राणी बोलीं, “सच कहती हूं, सदेश नहीं खाया तो अनर्थ हो जायगा । थाने में भेजे बिना नहीं मानूंगी । बात मान ले तो शायद अबकी बार माफी दे दू ।”

थाने की धमकी से डरकर अमूल्य को फिर बैठ जाना पड़ा । उसने अपनी मुसीबत कम करने के लिए एक-एक वार में तीन-तीन सदेश चट कर लिये ।

खाना देखकर इंद्राणी को खुशी हुई, यह बात उनके चेहरे और लहजे से ही मालूम हो रही थी । पूछा, “तेरा नाम क्या है ? घर कहा है ?”

अमूल्य का मुह भरा था । उत्तर कैसे देता !

इंद्राणी ने बहुत ही कोमल लहजे में कहा, मानो थोड़ी देर पहले उनका जो रूप देखने में आया था, उससे वह एकदम भिन्न हो, “बेटा, जवाब क्यों नहीं देते ? तुम किसके लडके हो ?”

अमूल्य ने चौककर इंद्राणी की ओर देखा । वह मडली के साथ गांव-गांव में मारा-मारा फिरता था । इस तरह के उसे बहुत-से तजुरबे हो चुके थे । किसी गिरिस्ती की बहू या मालकिन को गाने सुनाकर या पार्ट करके काफ़ी आवभगत उसे मिल जाती थी । कभी आने-दो-आने मिल जाते तो कभी नीबू और आम का अचार । खाली हाथ किसी मौके पर भी नहीं लौटना पड़ा । गांव में अभिनय हो जाने के बाद हमेशा आदर होता था, पर यहा तो मालूम होता है कि पहले ही कदर समझ ली गई ।

एक घूट पानी से सदेश को हलक के नीचे उतारते हुए अमूल्य ने गर्व के साथ कहा, “मैं मडली का एक लडका हू ।”

इंद्राणी बोलीं, “यह तो मैं जानती हू; नहीं तो तेरह घाट का पानी पिया हुआ ऐसा अलबेला चेहरा कहा से होता ? आखों के नीचे कैसा काला हो रहा है !”

अमूल्य बोला, “काला न होकर लाल कहां मे हो ? बात यह है कि आंखें लगती कब हैं ?”

“क्यों ?”

“अजी, सोने का मौका कब मिलता है ? नाटक खतम होते-होते आधी रात हो जाती है। उसके बाद खाना-पीना करते-करते कौए ज़ेल उठते हैं।”

इंद्राणी बोली, “अच्छा खा; खा चुका ? जा, अब सो जा। बरामदे में बिस्तरा तैयार है। तुझे सोना पड़ेगा।”

तभी भवतारण ने आकर बहुत व्यग्र होकर जल्दी में कहा, “मंजी, कुछ रुपये चाहिए। खेल के अखीर में थाल रखा जायगा। उसमें सबमे पहले गृहस्थ को कुछ देना पड़ता है।”

इंद्राणी ने आलमारी में से नोटों का पुलिदा निकालकर उसमें से एक दे दिया।

भवतारण बोला, “नहीं-नहीं इससे काम नहीं बनेगा, माजी। नोट देने से काम चलता तो खजाची बाबू दे सकते थे। चांदी के रुपये चाहिए। और चांदी के रुपये तो तातीहाट में बाघिन के दूध की तरह दुर्लभ हो गये हैं।”

इंद्राणी ने नोट रख दिये और एक दूसरी दराज से थैली निकाली। वह रेजगारी से भरी हुई थी। उसे थोड़ा-सा उडेल दिया, जिससे सिक्कों में से चांदी के रुपये बीन लिये जाय।

अमूल्य की तरफ निगाह गई तो इंद्राणी बलवत में बोली, “बरामदे में खाट पर सोयेगा, ले जाओ।”

अमूल्य ने सिर हिलाया। बोला, “यह कैसे हो सकता है। अभी मंह-फिल जमेगी। सगुन के रुपये दिये जा रहे हैं, इसका मतलब यह है कि घट की स्थापना हो गई। क्यों, कारिदाजी ? ढोल और करताल भी आ गई होंगी ? अब मेरे लेटने और सोने से काम नहीं चलेगा।”

इंद्राणी ने तैश में आकर कहा, “बलवंत !”

बलवंत सतकं हो गया।

इद्राणी ने कहा, “ठीक दो घंटे यह सोयेगा। जब दिन एकदम ढल जाय, तब इसे छोड़ना।”

बलवत ने लाठी ठोककर अमूल्य से कहा, “चल !”

मुह बनाकर अमूल्य साथ हो लिया। अपने-आप कुछ बड़बड़ा रहा था—अपनी बात कहा रखी ! कहने को तो कह रही थी कि माफ कर देंगी। जान पर खेलकर सदेश खा गया। पर कलयुग का धर्म ही ऐसा है।

बलवत ने पूछा, “क्या बड़बड़ा रहा है ?”

सहमकर अमूल्य बोला, “पार्ट याद कर रहा हूँ। महफिल में कोई बात भूल गया तो तुम्हीं लोग नाराज होगे।”

बलवत अमूल्य को लेकर आगन पार कर गया। भवतारण हँसकर बोला, “क्या कहता था कि जबरदस्ती हो रही है। दयामागर निर्मल यहां होता तो दो-चार जली-कटी मुनाता।”

इद्राणी गंभीर हो गई। फिर बोलीं, “यह निर्मल कौन है ?”

भवतारण ने कहा, “इसीने तो नई पाठशाला खोली है। इसीके कारण प्रसन्न की पाठशाला दम तोड़ रही है।”

“अच्छा तो यह पाठशाला के पड़ितजी है। मैंने तो ममभा कि कोई धन्ना मेठ के नाती होगे।”

भवतारण बोला, “थे तो यह कुछ जरूर, पर अब बिष खोकर केचुआ बन गये हैं।”

मौका पाकर भवतारण ने शिकायत करते हुए कहा, “इस निर्मल ने नीलखोला का जगल काटकर बगला बना लिया है। हमारे ही इलाके में। मना करता हूँ तो सुनता ही नहीं।”

अमला बोली, “सुना है, नीलखोला में भूतों का अड्डा है ?”

भवतारण बोला, “यह खुद भी तो ब्रह्मराक्षस है। कैसा हट्टा-कट्टा ! तुमने, दीदी, देखा नहीं, गुस्सा करके चला गया। प्रसाद देने के लिए मैंने हाथ पकड़े तो झटका मारकर साफ निकल गया।”

: ६ :

बरामदे के गद्दीदार बिस्तरे पर लेटकर अमूल्य सो नहीं पाया, छट-पटाता रहा। बीच-बीच में उठकर बैठ जाता था। लोगों की आहट पाकर फिर लेट जाता था।

आचानक अमला वहां आई।

रुआसा होकर अमूल्य बोला, “अब मैं जाऊँ ?”

अमला ने कहा, “तुमने मेरा सिर फोड़ दिया, मुझीसे पूछते हो ?”

अमूल्य ने व्याकुल स्वर में कहा, “आप लोग कैसे हैं, क्या मक्खन के बने हैं ? मेरे सिर पर गुम्मा मारिये तो भी कुछ न होगा। देखिये, यह देखिये...”

वहापर कोई ईंट न होने के कारण उसने पक्की दीवार पर तीन-चार बार सिर दे मारा। अमला देखती रह गई। ऐसी हालत में क्रोध करना भी तो संभव नहीं था।

बोली, “रुको-रुको। पागल न बनो। माताजी ने हुक्म दिया है कि दो घंटे तुम्हें सोना पड़ेगा। मैंने तो कुछ कहा नहीं।”

“दो घंटे अभी नहीं हुए ? आपकी घड़ी का घटा कितना लंबा है जी ?”

हँसी देवाकर अमला बोली, “हो सकता है, दो घंटे हो गये हो, पर तुम सोये एक मिनट को भी नहीं। जगले में से मैं कई बार देख गई। अच्छी बात है, अब तुम सो जाओ। ज्योंही एक बीस मिनट हो जायगे, मैं तुम्हें बुलाकर बलवत के साथ महफिल में भेज दूंगी। सो जाओ।

अमूल्य ने कहा, “इतने नरम बिस्तरे पर कहीं नींद आती है ? बहुत कोशिश की, पर ऐसा लगता है, यह बिस्तरा नहीं है, पानी में तैर रहा हूँ।”

अमला खिलखिला उठी।

एकाएक अमूल्य आदेश में आकर बोला, “साफ-साफ कह रहा हूँ।

इस जगह नींद नहीं आ सकती। मैं यहां नहीं सो सकता। थाने में चालान करने की बात हो रही थी। वैसा ही करवा दीजिये।”

“यहां के मुकाबले में हवालात तुम्हें पसंद है ?” अमला ने पूछा।

अमूल्य ने बिना किसी दुविधा के कहा, “जरूर। न होगा तो दम-बीम घूसे-तमाचे मार लेंगे। और क्या करेंगे ?”

“घूसे-तमाचों में तुम डरते नहीं हो ?”

“जी नहीं।”

एकएक गद्दी पर पीठ को तानकर अमूल्य हिला-डुला, जैसे परीक्षण करके देख रहा हो कि उसके नीचे क्या है।

अमला उसे छेड़कर उसकी मजेदार बातें सुन रही थी। बोली, “मारने में नहीं लगता, यह कैसे हो सकता है ? तुम तो खामखा डींग मार रहे हो !”

अमूल्य ने तेज होकर कहा, “आपका वह बलवत है कि हनुमन्त, उससे पूछ लीजिये। उसने मुझे बड़ी मार मारी, पर उसीका हाथ दुखा होगा। मेरा तो कुछ भी नहीं बिगड़ा। ठोकरें खा-खाकर सारा बदन फौलाद का हो गया है। देखिये, जरा दवाकर देखिये।”

इतना कहकर उसने आगे हाथ सामने को बढ़ा दिया कि अमला दवाकर देख ले। बोला, “आपकी आखों के सामने ही मैं इतनी ऊंची डाल से गिरा, पर उससे कुछ हुआ ?”

अमला ने सिर हिलाते हुए कहा, “डमलिया, तुम्हें कोई डर नहीं रह गया। हाय, इतनी ऊंची डाल पर तुम पहुँच कैसे गये थे ?”

अमूल्य ने मौका देखकर गर्व में कहा, “अजी, इसमें क्या रखा है ? यह भी कोई पेड़-मे-पेड़ है ! ताड़, सुपारी, नारियल आकाश की तरह ऊँचे होते हैं। पकड़ने के लिए उनमें न कोई डाल होती है, न और कुछ। उनपर मैं गिलहरी की तरह खड़े-खड़े चढ़ जाता हूँ ! लछमन पेट का रोगी है। न मालूम कितने हरे नारियल चुराकर उसे उनकी डाव (पानी) पिलाई होगी ! फिर भी उसका मिजाज नहीं मिला।”

अमला ने पूछा, “क्यों चोरी भी कर लेते हो ?”

“यहाँ क्या नहीं आता ? सब बातों में पहुँचे हुए है। कुश्ती लड़वा लो, नाटक करवालो, डांड चलवालो, गाना गवालो। मेरा गाना सुनकर ही तो लछमन ने मुझे फौरन मंडली में भरती कर लिया था। अब कान भरने से मुझपर बिगड़ गया है।”

अमला बहुत खुश होकर बोली, “तो गा भी लेते हो ?”

“कैसा गवैया हूँ, यह तो मजलिम में पता लगेगा। जो राधा वनता है, उसके गाने भी सुनियेगा। वह गाता क्या है, वत्तख की तरह घी-घी करता है। उसकी पगार ग्यारह रुपये है। दशहरे के मौके पर ऊपर से धोती-चादर भी मिलती है। मैंने कहा न कि इस मुई मंडली में कोई न्याय नहीं है।”

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उमने मिन्नत के लहजे में कहा, “आप लोग बड़े आदमी हैं। नोटों के पुलिंदे और रुपयों के ढेर हैं। कुछ कर्ज दे दीजिये न। जो सूद चाहिए, वह ले लीजिये। साल-भर के अदर चुकता कर दूँगा। पक्का वादा है। फिर मैं और हरिपद मिलकर नई मंडली खोल लेंगे।

अमला ने पूछा, “काहे की मंडली ?”

“खेल की। और काहे की ?”

वह बड़े उत्साह के साथ कहने लगा, ‘नये ढंग की चीज होगी। मैंने यह भी तय कर रखा है कि कौन-सी लीला की जायगी। कौन क्या बनेगा, यह भी तय है। जहाँ एक-दो जगहों पर लीला की कि नाम चमक जायगा। पानी की तरह खूब रुपया आयगा। कुछ साज-सामान और कुछ बाल, मूँछ-दाढ़ी के रुपये हो जायें, तो काम शुरू कर दें। आप रुपयों का बंदोबस्त कर दें।”

वह करुण दृष्टि से अमला की ओर देख रहा था। अमला बोली, “मेरे पास तो एक कौड़ी भी नहीं है। सबकुछ माँ का है। अगर उनका मन पसीज जाय तो...”

“उनका मन कैसे पसीज सकता है, यही बता दीजिये।”

“सोने पर मां बहुत खुश होती है। अगर तुम कम-से-कम दो दिन इस बिरतरे पर सो सको...”

“अरे, बाप रे बाप !”

“यह तुमसे नहीं होगा ?”

: “जी नहीं। तब तो मर ही मिटूंगा। फिर तो कभी नींद खुलेगी ही नहीं। और कोई तरकीब बताइये।”

अमला ने सोचने का ढोंग करते हुए कहा, “एक तरकीब और है। मा को गाने बहुत पसंद है और तुम कहते थे कि...”

अमला की बात पूरी भी न हो पाई थी कि अमृत्य वीच में ही पुलकित होकर बोल उठा, “वह महफिल मे आनेवाली है ? आप बस इतना कीजिये कि वह जरूर आये। हरिपद भैया और मैं मिलकर दो गाने गायेंगे। जरूर ही हम महफिल को मोह लेंगे।”

इतना कहकर हाथ जोड़कर उसने ऊपर की ओर प्रणाम किया, बोला, “तेरी शरण माता वीणापाणि !”

अपार भीड़। तिल रखने को भी जगह नहीं। ड्योढ़ी से सटकर मिट्टी के तेल की कुप्पिया जलाकर पान-बीड़ी की दुकानों की कतार। इतने ग्राहक कि सम्हाले नहीं सम्हालते।

श्री राधा की कलक-भंजन-लीला है। अमूल्य गोपी बना है। कुल मिलाकर तीन बार उसे मजलिस में आना है। पहली बार गोप बने हुए हरिपद के साथ। गोकुल की गली में गोप और गोपी दही और मक्खन की फेरी करते हुए घूम रहे हैं। एकाएक सुनसान गली में मन रगीन हो जाता है, गाना और फिर नाच शुरू होता है। दूसरी बार अमूल्य को वस इतना कहना है—‘निगोडे नहीं तो।’ इतना कहकर गाल पर हाथ रखना है और आयान को देखकर जल्दी से भाग जाना है। लीला के लगभग अंत में अमूल्य और हरिपद का फिर एक गाना है। आयान जब कृष्ण को पकड़ने के लिए आता है तो देखता है कि कृष्ण वहा नहीं है। वहा जो है वह तो काली है—कृष्ण ने पलक मारते ही काली का रूप धारण कर लिया था। उस समय गोप और गोपी गाकर बेचारे आयान की हँसी उड़ाते हैं।

लबी मूछ और घुघरू बांधकर हरिपद तैयार है। कंधे पर वहर्गा है। दोनों किनारों में छीके के अदर दो काली मटकिया है। वह अमूल्य को सतर्क कर रहा है, “तैयार है न ? अभी जटिला, कुटिला की तकलार हो रही है। इसीके बाद नंबर है।”

अमूल्य को स्त्री बनना था, इसलिए कुछ अधिक समय लगा। सब हो गया। सिर पर नकली बाल जमाकर, दो पट्टुचियां दोनों हाथों में डालकर और कमर में दूध की मटकी दाबकर सज्जागृह में नाच की एक फिरकी लगाकर वह हरिपद के पीछे-पीछे चल पड़ा।

मजलिस बिल्कुल जमी हुई थी। दही, मक्खन की फेरी करते-करते

उनके अभिनय की बारी आ गई। खासकर गला माफ करते हुए हरिपद ने मुस्कराकर गाना शुरू किया :

**ओ ललिते, मारे क्यों नैना ?**

अमृत्य ने उत्तर दिया ।

**प्राण मैना, अरे ओ प्राण मैना !**

**धान की भूसी मुलगे धीरे-धीरे,**

**मन काबू में रहे ना ।**

चारो तरफ लोग 'वाह-वाह' कर उठे और पैसे, चवन्निया, दुअन्निया बरसने लगी। गोप और गोपी ने देखा कि समझदार लोग बैठे हैं, तो उनकी आवाज और ऊंची हो गई, साथ ही पैरों की धमक भी बढ़ गई। पुलकित लछमन ने चिल्लाकर प्रोत्साहन देते हुए कहा, "जरा घूम-घूमकर राजा, घूम-घूमकर..."

वे मजलिस की प्रदक्षिणा-सी करके और चारो तरफ मुह फेर-फेरकर नाच रहे थे। लड़किया और महिलाएं वरामदे में बैठी हुई थी। अब ये लोग उसी तरफ चले। सीतानाथ उनके पीछे-पीछे द्रतलय में बेला बजाता जाता था। लछमन थाली हाथ में लेकर सबमें आगे चल रहा था।

"तेरी शरण माता वीणापाणि ।"

गाते हुए अमृत्य ने सरस्वती को एक बार प्रणाम किया। उसने हरिपद को सारी बात बता दी थी। डूराणी स्त्रियो में बैठी हुई थी। रगढग से मालूम होता था कि इधर भी जयजयकार होगा। मजलिस जमाने के जितने उपाय हो सकते हैं, उन दोनों ने उनका जोरदार प्रयोग किया। वे मिलकर गाना गा रहे थे।

लड़किया खिलखिलाकर एक-दूसरे पर लोट-पोट हो रही थी।

चट लछमन ने मौका देखकर भट थाली स्त्रियो की ओर बढ़ा दी। अच्छे पैसे आने लगे।

इतने में अकस्मात् वज्रपात हुआ। डूराणी बिल्कुल मारने पर उतारू हो गई।

“यह शरीफों का घर है या और कुछ ! दूर हो जाओ यहां से। बलवंत, इन दोनों को कान पकड़कर बाहर निकाल दो।”

इंद्राणी आपे से बाहर होकर उठ खड़ी हुई, जैसे उनके बिल्कुल सामने ही आग लग गई हो। अमूल्य और हरिपद कुछ देर तक खोये-खोये से देखते रहे, फिर चोर की तरह चुपचाप सज्जागृह में दाखिल हो गये।

“मा, क्या कर रही हो ?” इतना कहकर अमला ने मा को हाथ पकड़कर बैठा लिया। वह मा की डाट खाती ही रही है, ऐसी बात नहीं। जब-तब मां को खिला भी देती है। उसने धीमे-से पर गुस्से में कहा, “दस-बीस गांव के लोग गाना सुनने आये हैं। तुम्हें शरम नहीं मालूम होती।”

लड़की की बात से इंद्राणी का जैसे होश लौट आया। अमला डरी, उसकी शांत और सहिष्णु मा कभी ऐसी नहीं थी। मुकुल के मर जाने के बाद से यह हालत हुई है। उसने धीरे-से समझाया, “भला उनका क्या दोष है ? लीला में जो बात जैसी है, उसे वे वैसी ही दिखा सकते हैं। चलो मा, घर के अन्दर। कल तुम बिल्कुल नहीं सो पाईं। चलो, अब सोने चलो।”

भवतारण गिरता-पड़ता दौड़ आया, वह कुछ ठकुरसुहाती कहने जा रहा था कि इतने में इंद्राणी ने लड़की में कहा, “ठीक है। उनका क्या दोष है ?”

फिर भवतारण में गंभीर आवाज में कहा, “उनके अधिकारी को मेरे पास लिवा लाओ। दुधमुह लड़को में गदी बातें करवा रहा है, उसे समझाना चाहिए।”

×

×

×

सज्जागृह में आकर अमूल्य और हरिपद ने एक-दूसरे को घूरा। दोनों हतबुद्धि हो गये थे। वे सोचते थे—“भला ऐसी क्या बात हो गई ?”

वे विचारते रहे, विचारते रहे, पर किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे। अमूल्य बोला, “हरिपद भैया, तुम्हारी ताल ठीक नहीं थी, इसलिए वह नाराज हुई।

“नहीं जी, और कोई बात है।”

हरिपद ने जोर के साथ सिर हिलाकर प्रतिवाद किया, “जरा कही ताल मे चूक हो भी जाय तो ये स्त्रिया ठहरी, बारीकियों को वे क्या समझें?”

अमूल्य की आखे डबडबा आईं। मडली के इतने लोग गाव-गांव एक साथ लीला करते घूम रहे हैं, पर उनमें एक भी ऐसा नहीं है जो हमदर्द हो। बिना देखे अमूल्य को महसूस हो रहा था कि ये लोग सब-के-सब मुस्करा रहे हैं। लबी सास भरते हुए उसने कहा, “बस तकदीर है, भैया। तकदीर के सिवा और कोई सहारा नहीं है। सोचा था कि गीत मे रिझाकर रुपये मांग लूंगा, पर यहा तो लेने के देने पड़ गये।”

हरिपद बोला, “रुपये की गरमी है। इसीसे बिना किसी कारण के हमलोगो का अपमान कर अमीरी जताई। पचू और अधर आते ही गांव की सैर को चले गये थे। वे ही हमारी चुगली कर आये हैं।”

इतने मे गर्जन सुनकर वे चौक पड़े।

इद्राणी के यहा से लौटकर लछमन सज्जागृह मे आया था। उसने अमूल्य के बाल और हरिपद की मूछ एक ही झटके मे उतार ली। बोला—  
“मैंने तुम दोनो को बरखास्त किया। जाओ यहा से।”

पर हरिपद ऐसा नहीं था कि उसके कहने भर से ही दूर हो जाता। उसने लछमन के सामने हाथ जोड़ दिये।

अब भी कुछ आशा बाकी थी। अंतिम गीत बड़ा रगदार था। शायद उस गीत से असर पड़े। अमूल्य ने भिन्नत करते हुए कहा, “जरा समय दीजिये। देखिये, क्या होता है! गाने तो और भी है। जरा हरिपद भैया के साथ उन्हे रवा कर लूँ।”

लछमन ने लाल-पीली आखे करते हुए कहा, “तुम लोगों ने मडली के मुह पर कालिख पुतवा दी। अब वे हमे मजलिस मे जाने देगे? इस मनहूस मजलिस में ये गाने नहीं चल सकते। अब तीसरे अक के दूसरे दृश्य में पंचू जाकर इतना कहकर वापस आयगा—“निगोड़े नहीं तो”, बस।”

उसने पचू को बुलाकर कहा, “ले जा यह सब।”

पंचू दांत निकाल हँसते हुए विजय-दर्प से बाल और मूछ ले गया ।  
उसके घमंड को देखकर अमूल्य के मन में आया कि शेर की तरह उसपर  
टूट पड़े और उसके दांत तोड़ दे ।

इतने में बलवंत ने आकर जमीन पर लाठी ठोंकी, बोला, “कहा है  
वह छोकरा ? मां ने बुलाया है, चलो ।”

सोनेवाली कोठरी के दरवाजे पर इद्राणी खड़ी थी। अमूल्य बलवत के साथ बलि के बकरे की तरह शिथिल कदमों से आ रहा था। इद्राणी ने उसे पुकारकर कहा, “यहा आ।”

पास आने पर इद्राणी ने उसका हाथ पकड़ लिया। धीरे-से डाटती हुई बोली, “दम आदमियों के बीच बुरी बातें मुह से निकालते शर्म नहीं आती ?”

अमूल्य ने कहा, “मालकिन, मैंने तो कुछ भी नहीं कहा।”

“नहीं कहा ! भूठ बोलकर वचना चाहता है ! तू और उस मूछवाले दोनों ने गदी बातें कही। साड़ी पहनकर और रंग लगाकर तू सोचता होगा कि मैं तुझे पहचान नहीं पाऊंगी।”

अमूल्य ने दीनता के साथ कहा, “वह तो गाने में ही था, मालकिन। हम लोगो ने अपनी तरफ से तो कुछ भी नहीं कहा। हमारा दोष क्या है ? जैसा सिखाया जायगा, वैसा ही तो गाऊंगा।”

“अगर तुझे यह सिखाये कि तू लगूर है तो तू वही कहेगा ?”

अमूल्य बोला, “जरूर ! मैं ही क्यों, सभी ऐसा करेंगे। अगर पार्ट में यह हो कि मेरे मा-बाप की चौदह पीढ़ी तक लगूरों की थी तो सपूत होते हुए भी मजलिस में यही कहना पड़ेगा। जरा भी हेरफेर हुआ तो सज्जागूह में आने पर तड़ातड़ बेत पड़ेंगे। साथ ही नौकरी से छुट्टी। मालकिन, यह खेल-मडली है, मामूली चीज नहीं।”

ऐसी बात सुनकर गंभीर रहना मुश्किल था। इद्राणी ने बड़ी कठिनाई से हँसी रोककर कहा, “तू अब मडली में नहीं रह सकता।”

“फिर कहां रहूंगा ?”

“सो मैं देखूंगी। तुझे कुछ सोचना नहीं पड़ेगा।”

अमूल्य को एकाएक जैसे अंधेरे में प्रकाश दिखाई दिया। उसे बहुत डर लग रहा था, पर अब मालूम हुआ कि डर का कोई कारण न था। शायद मालकिन इसलिए नाराज हुई है कि वह नहीं चाहती कि उसकी तरह गुणी लड़का मामूली गोपी बने। उसने खुश होकर कहा, “अच्छी बात है, मालकिन जब आपकी ऐसी आज्ञा है, तो यही सही।”

“मैं तो कह ही रही हूँ। जा अपना सब सामान ले आ।”

“अच्छी बात है।”

“अच्छी बात नहीं, सामान लेकर अभी आजा।”

अमूल्य कुछ आनाकानी करने लगा। बोला, “बात यह है कि १० तारीख को पगार मिलती है। उसे क्यों छोड़ूँ? सिर्फ आठ ही दिन तो बाकी है। क्यों न ये आठ-दिन और गुजार दूँ?”

इंद्राणी ने व्यग्र होकर कहा, “आठ दिन तो दूर, एक क्षण भी नहीं।”

इंद्राणी के चेहरे की तरफ देखकर मुस्कराते हुए अमूल्य बोला, “जैसी आपकी आज्ञा! लेकिन मालकिन, क्या दीदी ने आपको सारी बात बताई?”

“किसने? अमला ने? वह भला बतायगी? और उसके कहने से होता-जाना क्या है? मैं कहती हूँ, जो कुछ लगेगा, मैं दूँगी। मैं इस वान की जिम्मेदारी ले रही हूँ कि किसी बात की तुम्हें असुविधा न होगी।”

फिर क्या था! अमूल्य ने ठकुरमुहाती ढग में कहा, “हमलोगो का खर्च ही कितना है, मालकिन! आप लोग हाथ भी भाड़ दे, तो उसीका एक ढेर बन जाय। हरिपद भैया का कहना है कि साठ-सत्तर...”

बीच में ही बात काटती हुई इंद्राणी बोली, “साठ-सत्तर हो या छः-सात सौ, तुम्हें कुछ भी सोचना नहीं है।”

यह सुनकर अमूल्य ने वहाँ रहने का अंतिम निर्णय कर लिया। मन-ही-मन बोला, “उस मडली में न रहने का तो मैंने पहले ही फैसला कर लिया था। जान बची और लाखों पाये।”

वह खुश-खुश लछमन के पास गया।

इस बीच हरिपद ने अपना रास्ता निकाल लिया था। वह जानता था

किं अपना मतलब कैसे सीधा किया जाता है। उसने हाथ छोड़कर अंत में लछमन के पैर पकड़ लिये। लोग हँस रहे थे तो हँसे। अगर कोई मुसीबत में फँस जाता है, तो दस आदमी तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। यही जगत की रीति है। किसी दिन उन लोगों की नौकरी पर आच आयगी तो हरिपद भी दिल खोलकर हँसेगा। लछमन ने हरिपद से पैर छोड़ने को बहुतेरा कहा, पर उस बदे ने पैर नहीं छोड़े, तो नहीं छोड़े। लछमन ने पैर इधर-उधर करके बचने की कोशिश की, पर असफल रहा। मजबूरन उसे माफी देनी पड़ी। बोला, “अच्छी बात है। पैर छोड़। मजलिस में जाता हूँ। अब दिल लगाकर काम करना और खबरदार खाने पर किसी तरह की शिकायत मुह पर न लाना। समझे।”

हरिपद ने छुट्टी पाकर वह जल्दी से निकल रहा था कि इतने में अमूल्य सामने आ गया। वह बोला, “तू चक्कर क्यों काट रहा है। हमेशा टर-टर लगाये रहता है। और गुण तुझमें इतने हैं कि मजलिस में भद् कराता है! मेरे पितर भी उतर आये तो भी तुझे मैं काम पर नहीं रखूंगा। तू मडली का सत्यानाश करेगा।”

अमूल्य बोला, “जाय भाड मे तेरी मडली !”

सुनकर लछमन दग रह गया। अमूल्य मुह पर डम तरह मे बान करता है। इसका दिमाग तो नहीं फिर गया ?

तभी अमूल्य बोला, “मेरा हिसाब कर दो।”

लछमन ने कहा, “यहा मे निकल जाओ। अभी निकल जाओ।”

“जरूर चला जाऊंगा, पर एक महीने की पगार बाकी है।”

लछमन को गुस्सा आ रहा था, फिर भी उसके होश-हबाश दुरुस्त रहे। बोला, “अच्छा पाच रुपये तेरी पगार है। मैंने तुझपर पाच रुपये जुर्माना कर दिया। यह भी रियायत है, नहीं तो भरी मजलिस में तैने मडली की वह भद् कराई कि क्या कहूँ !”

मोर खुदी हुई शानदार कंधी, छोटा-सा शीशा, खुशबूदार तेल की शीशी और अधफटी धोती गमछे की पोटली में बधी रखी थी। लछमन ने उसे

बाएं हाथ से उठाकर फेंक दिया। वह बरामदा पारकर धूल में जा गिरी। अमूल्य ने लछमन की ओर घूरकर देखा, फिर आगे बढ़कर उसे उठा लिया।

वह लोगों से बचकर जा रहा था। प्रकाश से जगमग उस मजलिस में सैकड़ों विमुग्ध दृष्टियों के बीच जाकर खड़ा होना उसके लिए संभव नहीं था। पर वह सोच रहा था कि आज न सही, दो-चार महीनों के अंदर ही वह फिर लोगों के सामने आयेगा, गले में जस्ते के तगमों की माला लटकती होगी। तगमों पर रोशनी चमकती होगी। उस समय वह मंडली का मालिक होगा। गोपी बनकर नाचेगा नहीं।

“तेरी शरण माता वीणापाणी।” तभी उसके मन में विचार उठा कि उसने तकदीर ऐसी भोंड़ी पाई है कि कहीं किनारे के पास आकर जहाज न टूट जाय।

उसका अंदाज था कि सभी नाटक में मस्त है सो वह चुपचाप खिसक जायगा। पर ऐसा नहीं हो सका। कई लोग जामरूल पेड़ के नीचे प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें हरिपद तो था ही, पर आश्चर्य कि उनमें अधर भी मौजूद था।

हरिपद ने अमूल्य के साथ समवेदना प्रकट करने हुए कहा, “ले-देकर एक सहारा तो था। अब कहा रहेगा?”

उसकी बात का समर्थन करते हुए एक ने कहा, “जो कुछ किया, अच्छा किया। पर महज गालियों से क्या बनता है? लछमन के मुह पर एक हाथ भड़ दिया होता तो कुछ बात भी बनती।”

एक और छोकरे ने अमूल्य से कहा, “तू बड़ा चट है। जरूर तूने कहीं-न-कहीं कोई दाव मारा है। जरा हम लोगों को भी तो बता कि क्या हुआ?”

उसने कंधे पर हाथ डालकर घनिष्ठता बढ़ाने की कोशिश करते हुए कहा, “सच बता दे, क्या मामला है?”

अमूल्य बोला, “मैं मंडली खोलूंगा।”

विस्मय के साथ अधर ने कहा, “काहे की मंडली खोलेगा?”

“खेल की मंडली, नहीं तो और काहे की? कलकत्ते के बहू मास्टर

की मंडली की बात मुनी है ? उसी ढंग की मंडली होगी, लाजवाब ।”

उमने ऐसी निश्चितता के साथ बात कही, मानो सारी तैयारिया हो चुकी है। इसपर विश्वास करना कठिन था, पर लोगो ने सोचा कि न मालूम कब किसकी तकदीर किस प्रकार खुल जाती है। पर कुछ हुआ जरूर है, नहीं तो लछमन के मुह पर जली-कटी कहने की उममे हिम्मत कहा से आई ?

एक ने पूछा, “भई, साफ-साफ कहो कि किसने मंडली बनाई है ?”

अमूल्य ने जवाब दिया, “मैहू। हरिपद भैया है। और किस-किस को रखा जाय, यह अभी सोचना है।”

“यह नहीं। हमे तो यह बताओ कि रुपये कौन दे रहा है।”

अमूल्य ने रहस्यमयी हंसी हँसते हुए कहा, “उमके लिए भी लोग है। क्यों नहीं ?”

यह कहकर वह जल्दी-जल्दी चलने लगा। और भी लोग आ गये थे। और खड़ा रहना ठीक न होगा।

“पर भूलना मत...”

ये शब्द सुनकर अमूल्य ने आख उठाकर देखा तो अधर कुछ कह रहा था। इच्छा हुई कि कहे तुम लोगो ने इतनी दुश्मनी की है कि तुम्हे भूल कैसे सकता हूँ ? पर नहीं, उसके मन मे एकाएक करुणा भर आई। यदि वह मंडली बना पाया, तो जरूर इन लोगो को उसमे ले लेगा। जो-जो आना चाहता है, सबको ले लेगा।

दोपहर की भाति राजसूय-यज्ञ की तरह खाने की जोरदार तैयारिया थी, और खाने के बाद वही पलग और गुदगुदा गद्दा । लेकिन नींद नहीं आई । गुदगुदा गद्दा तो नींद में बाधक था ही, उसपर तरह-तरह की रगीन कल्पनाओं से उसका दिमाग गरम हो रहा था । मजलिस में गीत और नाटक पूरे जोर से जारी था, पर अब अमूल्य को उस बात को लेकर रचमात्र भी मलाल नहीं था, बल्कि अब तो उसे रह-रहकर अचरज हो रहा था कि आखिर इतने दिनों तक इतने अपमान सहकर वह लछमन की मडली में किस प्रकार टिका रहा ।

पैर की आहट पाकर उसने आखें खोल दी । इद्राणी हाथ में पानी की सुराही और कांच का गिलास लेकर आई हुई थी । इस समय उसे मचमुच पानी की ही जरूरत थी—भिर पर छीटे देने के लिए । उससे नींद आये, तो आये । मालकिन ज्योतिषी भी है, नहीं तो मन की बात कैसे मालूम हो गई ?

इद्राणी ने सुराही को गिलास से ढककर तिपाई पर रख दिया । फिर हरीकेन लालटेन धीमी करदी, जिससे अमूल्य की आख पर चौध न लगे । और भी सावधानी के तौर पर उसकी चिमनी पर एक पुराना पोस्टकार्ड खोंस दिया ।

अमूल्य धूर-धूरकर सब कुछ देख रहा था । इद्राणी बोली, “और कुछ चाहिए तो बता ।”

“नहीं, कुछ नहीं ।”

“दरवाजे पर सिटकनी चढ़ाकर सो जा । मैं जा रही हूँ ।”

“जी ।”

इद्राणी ने घर के चारों ओर एक बार निगाह डाली । बोली—

“मच्छर लगे तो मसहरी डाल देना । ठीक है न ?”

“जी-जी ।”

“तू अकेले डरेगा तो नहीं ?”

इस प्रकार के प्रश्नों के बाद अमूल्य के लिए गभीरता बनाये रखना कठिन हो गया । वह मुस्करा पड़ा । बोला, “डर ! डर काहे को लगेगा ?”

“तो ठीक है ।”

कहकर इद्राणी मुस्कराई । बोली, “तेरी उम्र के लडके-लडकिया भूठमूठ को डरा करते हैं, इसीसे मैंने पूछा । यों चोर का डर, साप का डर, भूत-प्रेत का डर...”

अमूल्य बोला, “हम खुद एक-से-एक बढकर भूत ठहरे ! फिर भला किमका भय खाये ?”

इद्राणी ने डाट बताते हुए कहा, “ऐसे नहीं कहते । तू आदमी है, भूत क्यों कहता है ! अपनेको छोड़कर नहीं समझा करते ।”

तभी एकाएक उसकी निगाह अमूल्य के सिर पर गई ।

उसने माग तो निकाल रखी है, बड़ी लबी-चौड़ी, पर उधर पीछे के वालों में जटा-सी पड़ गई है । इद्राणी ने उस जगह को टटोलकर देखा तो मिहर उठी । वालों के बीच में मैल नहीं, खून जमा हुआ था ।

“अरे यह क्या है ?”

अमूल्य ने उस जगह पर हाथ फेरते हुए कहा, “कुछ भी तो नहीं है । उस वक्त पेड़ से गिर पड़ा था न ?”

“तू भी अजीब लडका है ! इतना खून गया और तूने किसीको बताया भी नहीं ।”

इतना कहकर वह जल्दी से रूई और आयोडिन ले आई । उन्होंने कटे घाव पर आयोडिन डाला । अमूल्य ‘सी-सी’ कर उठा ।

“इतनी चोट आई है, घाव खुला है और तुझे कुछ परवा नहीं । अजीब डाकू लडका है !” इद्राणी ने कहा ।

अमूल्य बोला, “मजे में लेटा हुआ था । आपने आकर एक बखेड़ा

खड़ा कर दिया। जलन हो रही है।”

इद्राणी ने कहा, “जलन अभी जानी रहेगी। फूक देती हूँ, अच्छा पंखा भले देती हूँ।”

इतना कहकर वह पंखा भलने लगी। अमूल्य में रहा नहीं गया। वह खाट छोड़कर अलग जा खड़ा हुआ।

इद्राणी बोली, “क्यों, क्यों? यह क्या करता है? तेरी मा होती तो वह भी दवा लगाकर इसी तरह से हवा करती।”

कुछ उलझन में पड़कर और परेशान होकर अमूल्य बोला, “मेरी मा नहीं है। कभी किसीने मेरा पंखा नहीं भला।”

“यह तो मैं पहले ही समझ गई थी, नहीं तो ऐसे दुधमुठे बच्चे को कोई इस तरह आवागमन के लिए छोड़ देता?”

इतना कहते-कहते उन्हें मुकुल की याद हो आई। कितना दुलारा था। वह तो शायद यह भी नहीं चाहती थी कि वह कड़ी धरती पर अपने नरम-नरम पैरों को रखकर चले। पर इतना लाड-प्यार भी उसे रोककर रख न सका।

किसी तरह उमड़े हुए आसुओं को रोककर इद्राणी ने पूछा, “तेरे कौन-कौन हैं?”

“कोई नहीं।”

“बाप, भाई-बहन? आखिर कोई तो?”

दांत निकालकर हँसते हुए अमूल्य बोला, “मालकिन, किसी रिश्ते में कहीं कोई नहीं है। जब तीन महीने की उम्र थी तो मा चल बसी थी। पिताजी थे, पार साल उन्हें साप डस गया। फिर क्या करता? लछमन की मडली में दाखिल हो गया। पिताजी होते तो किसी हालत में भी लछमन का साथ न कर पाता। मार-मारकर कचूमर निकाल देते।”

वह ऐसे बोला, मानो मां-बाप के मर जाने से उसकी बड़ी रक्षा हो गई हो।

इंद्राणी ने कहा, “आगे से तू मेरे पास रहेगा। कहीं जा नहीं सकेगा।

समझा ?”

अमूल्य चकित रह गया। उसके मुह में एकाएक कोई बात न निकली। थोड़ा रुककर उसने कहा, “आप यह क्या कह रही हैं? आपके कहते ही मैंने बात-की-बात में इतनी अच्छी नौकरी में इस्तीफा दे दिया। ऊँचे पर चढ़ाकर सीढ़ी खींच लेना धर्मराज को सहन न होगा।”

इद्राणी बोली, “मैंने तुम्हें कब ऊँचे पर चढ़ाया और कब सीढ़ी खींच ली?”

अमूल्य ने कहा, “आपने कहा था कि रुपये-पैसे की मुझे कोई चिंता नहीं और अब आप ऐसी-वैसी बातें कर रही हैं।”

“मैं यह कब कह रही हूँ कि तुम्हें रुपये-पैसे नहीं दूँगी?”

“मान लीजिये, मुझे रुपये भी मिल गये, पर यहाँ बैठे-बैठे मैं कौन चतुर्भुज हो जाऊँगा?”

स्नेहमयी दृष्टि से उसकी तरफ देखकर इद्राणी खाट की बगल में बैठ गई। बोली, “तू बिल्कुल घर के लड़के की तरह मेरे पास रहेगा। मेरे पास रहकर तू सुधरेगा, आदमी बनेगा।”

वातचीत के ढग से अमूल्य का दिल धीरे-धीरे बैठता जा रहा था।

“तो क्या अब मैं कुछ बुरा हूँ? आदमी नहीं हूँ? मालूम होता है कि अधरवा चुगली कर गया है और आपने उसकी बात गाठ बांध ली है। वह शंतान मेरे पीछे ऐसा पड़ गया है, जैसे सियार शेर के पीछे लग जाता है।”

इद्राणी बोली, “यह अधर कौन है? मैं नहीं जानती। मैं यह कह रही हूँ कि तुम्हें आवारागर्दी छोड़कर बाकायदा पढ़ना पड़ेगा। स्कूल में पढ़ेगा कालेज में पढ़ेगा।”

अमूल्य ने डटकर इसका विरोध किया।

“मालकिन, आप यह खयाल छोड़ दें। मेरे दिमाग में गोबर भरा है, गोबर।”

इद्राणी ने हँसकर कहा, “देखा जायगा। तू बगला तो पढ़ लेता होगा?”

“अगर बगला पढ़ लेता तो कम-से-कम बलराम का पार्ट तो मैं ले ही मरता। याद कराना पड़ता है तभी तो वे मुझे बड़ा पार्ट देना नहीं चाहते।”

“कल सवेरे से प्रसन्न पंडित की पाठशाला में जाना।...नहीं कल तो बंद है, परसो से जाना।”

कहकर इद्राणी जाने लगी तो अमूल्य ने पूछा, “आप सच कह रही है, या महज डरा रही है?”

इद्राणी मुस्कराने लगी। इस भले आदमी के शुरू से ही ये इरादे हैं।

बोली, “अभी यही पढ़ने लग जा। जल्दी ही हम लोग कलकत्ता जायेंगे, वहां मैं तुझे अच्छे स्कूल में भर्ती करवा दूंगी।”

इद्राणी चली गई। भय के मारे अमूल्य के रोंगटे खड़े हो गये। मंडली बनाने के जोश में आकर उसने यह कैसी ओखली में सिर डाल दिया! यह मालकिन कहती क्या है? फिर यहां तातिहाट में ही मुसीबत खतम नहीं होगी, कलकत्ते भी चलना पड़ेगा। अमूल्य ने कलकत्ता देखा नहीं था तो क्या, वहां की सारी बातें तो मुन ही रखी हैं। सभी कहते हैं कि शहर अच्छा-खासा है, पर वहां न मैदान है, न तालाब, न भील। ऊँचे-ऊँचे मकान और आदमियों की भीड़। कहते हैं, वहां मिट्टी भी खरीदनी पड़ती है। तो इसे ईंटों का पिजड़ा ही कह लो। जो कहीं उमे उस पिजड़े में ले जाकर बंद कर दिया तो एक दिन में ही उसका काम तमाम हो जायगा।

आधी रात बीत चुकी थी। उत्सव से थककर लोग बेखबर सो रहे थे।  
अमूल्य उठा।

उसने सावधानी में दरवाजा खोला, फिर थोड़ी देर खड़ा रहा। नहीं, कहीं कोई आहट नहीं है। वह जल्दी से उधर बढ़ा, जहाँ हरिपद सो रहा था। उसने और हरिपद ने आगन के किनारे एक सुनसान जगह पसन्द कर ली थी। उसे राजाओं की भाँति सेज मिली थी, हरिपद की तरह फटी कथड़ी ओढ़कर चटाई पर नहीं लेटना पड़ा था। पर सेज से कहीं अच्छी चटाई थी। हरिपद मजे में खरटि भर रहा था। भला क्यों न भरे? मालकिन की कृपा-दृष्टि जो उसपर नहीं पड़ी थी!

पास पहुँचकर अमूल्य ने हरिपद को ठेलकर जगाया। हरिपद कुछ कहने ही वाला था कि अमूल्य ने उसके मुँह पर हाथ रखकर उसे चुप कर दिया। तारों के धुधले प्रकाश में दोनों जने चुपचाप चल दिये। जामरूल के पेड़ के नीचे आकर अमूल्य अंधेरे में कुछ टटोल-टटोलकर ढूँढ़ने लगा।

हरिपद के अचरज की सीमा न थी। आधी रात गए उसे जगाकर अमूल्य यह क्या रहस्यमय हरकत कर रहा था? उसने पूछा, “क्या खोज रहा है?”

“चूल्हा रगेदने के लिए गेंती दी गई थी। वह कहा है?”

हरिपद बोला, “यही तो पड़ी थी। सीतानाथ ने उठाकर उधर मंडप के पास रख दी है।”

“भैया, उसे भटपट ले आओ।”

“गेंती का क्या होगा?” हरिपद ने जरा जोर से कहा।

अमूल्य बोला, “चुप-चुप...धीरे...”

चाद को डूबे देर हो चुकी थी। गेंती लेकर दोनों मकान के पीछे चले गए।

हरिपद ने फुसफुसाकर कहा, “यह तो बता कि क्या बात है ?”

“अबे मडली नहीं बनानी है ? उसके लिए रुपये नहीं चाहिए ?”

जगले के पीछे नीबू का पेड़ था। वे उसकी डाल हटाकर दीवार के पास पहुँच गये। जगले के नीचेवाले हिस्से की ओर इशारा करते हुए अमूल्य बोला, “यहाँ खोद। धीरे-धीरे। आवाज न हो। पहले तू खोद, फिर मैं खोदूँगा।”

चारों तरफ एक निगाह डालकर हरिपद बोला, “संघ ..”

“अबे, इसे संघ थोड़े ही कहते हैं ? पुराने मकान की सड़ी ईंटें, छूटे ही चूर-चूर हो जायगी।”

पर जितना सोचा था, काम उतना आसान न निकला। बड़ी मुश्किल में एक ईंट निकालकर हरिपद बोला, “यह काम ठीक नहीं हो रहा है। पकड़े गए तो गामत आ जायगी।”

हिम्मत बधाते हुए अमूल्य ने कहा, “अना-पता ठीक में जाने बिना अमूल्य काम में पड़नेवाला बदा नहीं है। तुम हमेशा मुझे देखते तो हो।”

“हा, सो तो देखता आ रहा हूँ।” हरिपद फिर से काम में जुट गया।

अमूल्य ने फुसफुसाकर कहा, “यह जो जगला है, इसीसे सटी हुई अल-मारी है। अलमारी की दराजें रुपये और नोटों में भरी हुई हैं। एक क्यो, पाँच मडलियाँ बना लो तो भी रुपये में कमताई न होगी। कमरे में कोई नहीं है। बरामदे में गुदगुदे गद्दे पर लेटा नो था, पर मेरी निगाह इधर ही लगी हुई थी।”

अमूल्य दबी हुई हँसी हँसने लगा।

हरिपद बोला, “अमूल्य तू मजे में रहता है, तो भी तुझे आफत मालूम होती है। मालकिन की तुझपर अच्छी निगाह हो गई है। थोड़े सब्र से काम लेता तो तू जाने क्या हो जाता।”

मचमुच हरिपद अमूल्य के प्रति अनुराग रखता है। बोला, “अमूल्य मेरी बात सुन। जो हुआ सो हुआ, अब लौट चले। चलकर शरीफ बनकर सो जाय। तकदीर में होगा तो मालकिन यो ही रुपये दे देगी।”

अमूल्य ने लंबी सांस भरते हुए कहा, “सोचा तो मैंने भी ऐसा ही था। इसी उम्मीद में बोरिया-विस्तर बांधकर यहाँ पहुँचा था, पर उनके दिमाग में तो शैतान का बसेरा है। मडली कहा, मालकिन तो मुझे स्कूल भेजने का डील कर रही है। जो कुछ मिले लेकर रातो-रात भाग जाऊँ, नहीं तो मुझे मारकर ही दम लेगी।”

इस बीच काम लायक छेद बन गया था। अमूल्य ने धीरे-से कहा, “मेरा सब जाना-बूझा हुआ है कि कहा क्या है, इसलिए ला मैं ही घुस पड़ूँ। जगला खोलकर माल बाहर डालूँगा। तू वहाँ खड़ा हो जा।

हरिपद ने उसे रोका। वह भी तो जरा नजुबेकार था। पास ही लौकी की बेल ऊपर चढ़ी हुई थी। उसीके बीच कालोच में पुती हुई एक खारिज हडिया दीवार में बांस की खूटी पर टगी थी। कहते हैं बेल को कभी-कभी नजर लग जाती है और वह फलती नहीं, यहाँ तक कि कभी-कभी तो वह मुरझा ही जाती है। काली हडिया टांग रखने में दृष्टि-दोष का खडन हो जाता है। फसलवाले खेतों में और लौकी और सीताफल की बेलों के बीच हमेशा इसी प्रकार की हडिया टगी रहती है।

हरिपद बोला, “ठहर...”

इतना कहकर उसने हडिया खूटी में उतारी और गंती के सिरे पर टांगकर धीरे-धीरे संध के छेद में घुमाना शुरू किया, मानो कोई चोर भीतर प्रवेश कर रहा हो। संध में घुसकर चोरी करने का तरीका ही यह है। चोरी करते-करते जिनके बाल पक गये हैं, वे भी ऐसा ही करते हैं। हरिपद ने ऐसा किया तभी जान बची। आहत पाकर बलवन्त का चीत्कार घर के अंदर सुनाई पड़ा, “कौन ?”

और चोर का सिर समझकर बलवन्त ने पूरी ताकत से हडिया पकड़ ली और जोर से धरती पर दे मारी। हडिया चूर-चूर हो गई। भवतारण ने लाठी उठाई। दरवाजा खोजकर लाठी कंधे पर रख वह उसी कोने की तरफ दौड़ा। बलवन्त भी दौड़ा।

“चोर ! चोर !”

हल्ला सुनकर सब लोग दौड़ पड़े। किसीके हाथ में लालटेन तो किसीके लाठी और किसीके बरछी। पुराने ढंग की दोनानी बटूक भी थी, जिसे मँनेजर हरितोषबाबू काम में लाते थे। वह उसे दागना ही चाहते थे, पर न मालूम उससे क्या अनर्थ हो जाय, यह सोचकर रुक गये।

कुछ लोग ड्यूटी के बाहर जाकर खड़े हो गये। चारो तरफ खोज हो रही थी। लोग लाठियों से जंगल पीट रहे थे।

ज्योंही शोर हुआ कि अमूल्य और हरिपद बेतहाशा भागे। पर बाग से निकलने का कोई रास्ता ही नहीं था। फौरन पकड़ में आ जाते। अतः पुर का तालाब सेवार से ढका था। पानी बर्फ की तरह ठंडा था। पर जान बचाने के लिए हरिपद उसीमें गले तक घुसकर चुपचाप खड़ा हो गया। जब लोग पास आ जाते, तो वह सिर भी डुबा लेता और सांस रोककर अपनी बचत करता। अमूल्य ठहरा मौजी। वह उतनी जहमत उठाने में विश्वास नहीं करता था। घर के सब लोग चोर पकड़ने गए हुए थे। वह मौका देखकर मकान के अंदर घुस गया। अंदर पहुंचने पर अब उसे कोई चिंता न रह गई। अब अगर किसीने देख भी लिया तो वह ऐसा दिखायेगा मानो वह भी चोर पकड़ने निकला है। पर इसकी जरूरत ही नहीं। किसी-से भेंट ही नहीं हुई। बरामदे में दाखिल होकर वह दरवाजे में सिटकनी चढ़ाकर लेट गया। बला टल गई।

जो लोग चोर पकड़ने गये थे, वे एक-एक, दो-दो करके लौटने लगे। आंगन में जमा होकर चोर के बारे में तरह-तरह के अनुमान लगा रहे थे और मतव्य प्रकट कर रहे थे। जिसके मुह पर जो बात आती, वह कह देता था।

अमूल्य को लगा कि इस मौके पर चुपचाप लेटे रहने में उसपर भी सदेह हो सकता है। चारो तरफ इतना शोरगुल था कि एक भी प्राणी ऐसा नहीं बचा था, जिसकी नीद न टूटी हो। ऐसी हालत में यह कैसे हो सकता था कि उसके कानों में आवाज न पहुंचे? उसे भी सबके साथ मिल कर कुछ हल्ला-गुल्ला करना चाहिए।

दरवाजा खोलते ही सबसे पहले अमला ने उसकी भेट हुई। अमला ने कहा, “तुमने सुना ? अभी-अभी चोर आया था।”

आख मलते-मलते विस्मय में अमूल्य ने कहा, “अच्छा ! कहा प्राया था चोर ?”

“उस कमरे में।”

हाय भगवान ! वह यह क्या काड कर बैठा ? अंधेरे में ठीक से पता न चला और गलत कमरे में संध लगा बैठा। यह सोनेवाली कोठरी नहीं, उसके बगलवाला कमरा था। दलदल और भवतारण इस कमरे में सो रहे थे। इद्राणी के आने के बाद में भवतारण घर नहीं जाता। पता नहीं, कब क्या काम आ जाय। इसलिए उमने इसी कमरे में डेरा डाल रखा था।

अमूल्य संध के छेद में झुककर देख रहा था। मुह उठाकर बोला, “बड़े सरकश होते हैं ये चोर लोग ! पक्की दीवार का भी नाश कर मार दिया। वे न कर सकें ऐसा कोई काम नहीं मालूम होता।”

कुछ रुककर बोला, “क्यों चोर पकड़ में नहीं आया ?”

अमला बोली, “नहीं। जो लोग पकड़ने गये थे, वे सभी खाली हाथ लौट आये।”

अमूल्य बोला, “अजी, चोर जायगा कहा ? अच्छी तरह तलाश हो तो मिल ही जायगा। कोई पर तो लग नहीं गये होंगे कि छूमतर हो जाय। पास ही में कहीं छिपा होगा।”

इसके बाद संध की तरफ देखकर बोला, “चोर की हिम्मत की बलि-हारी है ! मकान में सैकड़ों लोग हैं, फिर भी चोर ने आने की जुरंत की। पकड़ में आ जाय तो ऐसी मरम्मत की जाय कि वच्चू को छठी का दूध याद आ जाय और वह फिर कभी इस काम को करने का नाम न ले।”

इतने में भवतारण लौट आया।

इद्राणी ने पूछा, “कुछ पता लगा, चटर्जी बाबू ?”

“हां, कुछ-कुछ तो ले ही आया हू। जब चील भपट्टा मारती है तो

कुछ-न-कुछ ले ही आती है। निकला तो खाली हाथ कैसे लौटता ?”

उसने मुट्ठी खोलकर दिखाया तो उसमें धोती में से फाड़ा हुआ कपड़े का एक टुकड़ा था। बोला, “चोर तो नहीं मिला, पर यह टुकड़ा नीबू के पेड़ में उलझा हुआ था। इसमें शायद कुछ पता मिले।”

वह टुकड़ा अमूल्य की धोती का ही था। मंडी हुई धोती को सज्जी से धोकर जैसे-तैसे लाज ढक लेता था। इरादा यह था कि अबके महीने तनखा मिलेगी तो नई धोती ले लेगा। भागते समय नीबू के पेड़ में उलझकर धोती का यह टुकड़ा वहीं रह गया था, उसे पता भी नहीं चल पाया।

अमूल्य और लोगो की आख बचाकर धोती के उस हिस्से को ढकने का प्रयत्न कर रहा था।

मलय ने भवतारण की तरफ हाथ बढ़ाकर कहा, “दीजिये, देखू जरा।”

इद्राणी ने डाट बताते हुए कहा, “तुम लोग बनते हो बहुत। जरा-जरा में दुधमुंहे बच्चे। आये है चोर पकड़ने। जा, सो जा।”

इसके बाद अमूल्य और अमला में बोली, “जाओ, तुम लोग भी सो जाओ। अब जबान चलने की जरूरत नहीं है।”

अमूल्य की छाती बहुत जोर से धड़क रही थी, मानो कोई ढंकी में चावल कूट रहा हो। गुरु की कृपा में बाल-बाल बच गया। लगा, जैसे पसीना आकर बुखार उतर गया।

तडके-ही-तडके। ग्राममान में ताड़े अभी टिमटिमा ही रहे थे कि आगन में बड़े जोर का कहकहा लगा।

किसीने कहा, “अरे हा ! यह तो मु-इरबन को भी मान करता है। यहा डेरा पडा है। वाह !”

जो केवट घाट मे माल ढो लाया था, वह यहा के रग-ढंग को देखकर दान निकालकर हँस रहा था। बोला, “बाबूजी यह तो कुछ भी नहीं है। जगल देखना है तो नीलखोला मे जाकर देखिये। इधर जो थोडा-बहुत था, इन लोगो के आने के पहले ही काट-कूटकर माफ कर दिया गया। दोपहर के उजाले मे सियार आगन मे चक्कर लगाते थे। माझ के बाद बाघ के पीछे लगनेवाली लोमड़ी बोलती थी। पारसाल आगन मे तख्त के नीचे ब्रोडा मांप ने बिल्ली को दौडकर पकड लिया था।”

कहकहे मे जाग रजाई छोडकर केवल वनियान पहने मलय ने दौडकर अशोक का हाथ पकड लिया। बोला, “अशोक भैया !”

इतने मे इद्राणी भी आ गई। अशोक ने उनके पैरो की धूल माथे पर लगाई। फिर बोला, “भाग चलिये चाचीजी, यहा मे। बहुत हो गया। आपने माप और सियारो को इस जगह मे बेदखल कर दिया है। इस अत्याचार को वे कभी चुपचाप सहनेवाले नहीं है।”

“जरूर जाऊगी। साप-सियार तो नहीं, आदमी ही जाने को मजबूर करेगे। जाऊगी जरूर...” आवाज नोची करके इद्राणी बोली, “बशर्ते कि कोई खरीददार मिल जाय। तुममे तो कुछ छिपा नहीं है, भैया। . अच्छा, यह तो बताओ कि तुम्हारे पिताजी कैमे है ? कब आ रहे है ? क्या कर रहे है ? क्या खरीददार नहीं मिलेगे ? इस जमाने मे कौन गांव मे जमींदारी खरीदने लगा ? चलो भीतर बैठकर बातचीत होगी।”

कमरे मे जाकर बैठने के लिए अशोक मे विशेष उत्साह नहीं था।

इधर-उधर देखकर खुशी-खुशी वह बोला, “चाचीजी, मैं जल्दी ही कुनूर जा रहा हूँ। सोचा कि चाचीजी को नमस्कार करता चलूँ। पिताजी ने भी यही कहा था।”

इद्राणी बोली, “क्यों कुनूर में क्या है?”

“वहाँ एक प्रयोगशाला है, पौष्टिक तत्वों की खोज की। उसका विस्तार हो रहा है। मैं अफसर होकर जा रहा हूँ। मनचाहा काम है। यही मेरी कामना भी थी। तनखा भी कुछ बुरी नहीं है।”

“कब जा रहे हो?”

“अभी बात बिल्कुल पक्की नहीं हुई। दो-चार दिन में हो जायगी। डा० दत्त आदमी चुनेंगे। उनके छात्रों में से मैंने ही इस बारे में काम किया है। डा० दत्त न तो रिश्तेदार परस्त है, न मन्वासी। सारे देश में उनका नाम है।”

इद्राणी बोली, “तुम आये ही थे तो दो-चार दिन पहले ही आ जाते। महफिल उखड़ जाने पर आये। देख रहे हो न यह शामियाना, कल इसमें खेल हुआ था। बड़ा जगन रहा।

“चाचीजी, जिमने इस तातिहाट को खोजा, उसका दर्जा मैं कोलम्बम में कुछ ही घटकर मानता हूँ।”

इद्राणी ने मुस्कराकर कहा, “मेरे समुर के नानाजी ने इसको खोज निकाला था।

“वह सचमुच पूजनीय हैं। इस काले पानी को आरु बसाना बड़ी हिम्मत का काम है। किमीकी गज-भर की छाती हो, तभी वह ऐसा काम कर सकता है।”

इसके बाद अशोक ने अपनी यात्रा के कष्टों की एक सूची पेश करते हुए कहा, “चाची, छ बजेवाली गाड़ी फेल हो गई। नतीजा यह हुआ कि बारासत तक-कार में आना पड़ा। इसके बाद मोटर-लंच, नहीं-नहीं, इस बीच में स्टेशन में घाटतक रिक्शा करना पड़ा। लज में उतरकर नाव पकड़ी। हवाई जहाज और बैलगाड़ी को छोड़कर दुनिया भर की सवारियां इस्तेमाल करनी पड़ी।”

इद्राणी बोली, “तुम्हें बड़ी हैरानी हुई। चलो, कमरे में। हाथ-मुह धोना हो तो धो आओ।”

इद्राणी ने वरामदे के दरवाजे पर आकर अमूल्य को आवाज दी, “अरे अमूल्य, आज तुम्हें उठना नहीं है क्या। जल्दी में हाथ-मुह धो और नाश्ता कर ले।”

डर के मारे अमूल्य की आख विल्कुल नहीं लगी थी। वह लेटकर इसी उधेड़बुन में पड़ा था कि क्या करे, क्या न करे। एक बार सोचा कि रात में ही वहां में चपत हो जाय, पर मारी ऊच-नीच सोचकर इरादा बदल दिया। भागा तो लोगो का उसीपर शक जायगा और पकड़ जाने पर सभी करम हो जायगे। जब सौभाग्य में वच गया है तो खुले आम, कह-सुनकर, बिदाई लेनी चाहिए। वह उनके साथ न रहना चाहे तो उसे जबरदस्ती कौन रख सकता है? वह साफ-साफ मालकिन में कह देगा कि यहा रहना नहीं चाहता। अगर कुछ रुपये उधार दे दे, तो अच्छी बात है, नहीं तो वह है अपने रास्ते, मैं अपने रास्ते। लछमन भले ही उसे न रखे, उसमें गुण है तो दूसरी मंडलिया उसे रख लेगी।

इद्राणी के पुकारते ही अमूल्य दरवाजा खोलकर फौरन निकल आया।

इस चेहरे और इस लिबास का कोई व्यक्ति पलंग पर और गद्दे पर अधिकार किये हुए था, यह आश्चर्य का विषय था। अशोक ने पूछा, “यह कौन मज्जन है?”

इद्राणी ने कहा, “एक लडका है।”

मलय बोला, “खेल-मडली का। कल नाचते-नाचते कैसा काड हो गया...” कहकर वह हँस पड़ा। पर इद्राणी की डाट से हँसी रुक गई। इद्राणी ने कहा, “छोटे मुह बड़ी बात मत करो। सोनेवाली कोठरी में जाकर बैठो। मैं खाना लेकर आ रही हूँ।”

इस बीच मलय ने अशोक का बैग टटोलकर उसमें से बाक्स कैमरा निकाल लिया। बोला, “मुझे मालूम था कि अशोक भैया यह सब जरूर लायेंगे।”

इतना कहकर वह चलने को हुआ तो अशोक ने पूछा, “कहा जा रहा है ?

“माता सरस्वती का फोटो लेना है। एक फोटो, बस एक। सच कह रहा हूँ, अशोक भैया...”

कहते-कहते वह गफूचक्कर हो गया।

अशोक ने उसका पीछा किया। उसके दौड़ने की आवाज सुनाई दी, पर दो ही चार कदम तक। इसके बाद पीछा करना छोड़कर वह इस कमरे से उस कमरे में घूमने लगा। बाद में तालाब का चक्कर काटकर उसने दूरबीन निकाली।

सीढ़ी के मुह पर डूब्राणी ने उसे पकड़ लिया। बोली, “कितने नट-खट लडके हो तुम ?”

फिर सोनेवाली कोठरी की तरफ देखकर उसने कहा, “अमूल्य ही राजा बेटा है। खा-पीकर वह छुट्टी पा गया। पर तुम लोगो का अभी पता भी नहीं है।”

अशोक ने हाथ बढ़ाकर, “अब मैं राजा बेटा बन रहा हूँ। लाइये, चाचाजी, क्या लाई है ?”

कहकर डूब्राणी के हाथ में लेकर एक ही कौर में चार मिठाइया गटक ली और चाय की प्याली हाथ में थामे खट-खट सीढ़ी चढ़ने लगा।

डूब्राणी ने व्यग्र भाव में कहा, “गरम चाय गिर पड़ेगी, बेटा, इतनी जल्द काहे की है ?”

“चाची, यहाँ कहा आ फमा हूँ, यह जरा घूम-फिरकर देखूँ भी कि नहीं ?” अशोक ने उत्तर दिया।

“तो क्या घोड़े पर जीन चढ़ाकर आये हो जो इतनी जल्दी कर रहे हो। क्या देखकर अकेले ही खिसक जाने का विचार है ?”

“अकेले नहीं, आप सबको लेकर।”

डूब्राणी बोली, “अच्छा, तो यही तय रहा कि तुम हम लोगो को साथ लेकर चलोगे। जबतक हम न जाय तुम भी नहीं जा सकोगे।”

अशोक बोला, “लेकिन, अपनी इच्छा का मालिक अब और कितने

दिन हूँ ? डा० दत्त का पत्र शायद दस-बारह दिनों के अंदर आ जायगा ।”

फिर जरा हँसकर बोला, “दस बारह महीने भी लग जायें तो अचरज न होगा । हम भले ही आजाद हो गये हों, पर हमारे यहा अब भी साल वही अठारह महीने का चला आ रहा है । पर चाची चिट्ठी चाहे जब आये, आप लोग लौट चलें । जायदाद के बारे में जो कुछ करना है, पिताजी कर ही रहे हैं । लेकिन मैं पूछता हूँ कि आप किस मुख में यहां पड़ी है ?”

इंद्राणी ने कहा, “अशोक, तुम भूल रहे हो कि यह हमारे ससुर की जन्म-भूमि है । तुम इसे जिस निगाह से देख रहे हो, हमारी निगाह उससे अलग है ।”

बुझी हुई दृष्टि से अशोक की तरफ देखकर फिर इंद्राणी ने कहा, “प्रसन्न पंडित सरस्वती-पूजा का चढ़ा मागने आये थे । तुम्हारे चाचाजी पाठशाला चले गए थे । मैंने जानबूझकर पूजा का सारा बोझ अपने ऊपर ले लिया । कितने दिनों के बाद घर में उत्सव हुआ, कितने लोग आये-गए ।... इसके माने यह हैं, अशोक, कि तरह-तरह के बहानों से मैं रहने का समय बढ़ा रही हूँ । सुनती हूँ, मरते समय एकबारगी जन्म से लेकर अंत तक की सारी बातें दिमाग में घूम जाती हैं और जीने की बड़ी हविस होती है । पर हविस जितनी भी हो, जो होना होता है, वह होता ही है । अच्छा, उधर की क्या खबर है ?”

अशोक बोला, ‘ पिताजी किसी भी बात से हारनेवाले नहीं हैं । खरीददार ठीक करके ही दम लेगे । बड़ी दौड़-धूप कर रहे हैं । मैंने उन्हें इतनी भाग-दौड़ करते कभी नहीं देखा । अविनाशवर्धन कई बार आ चुका है । आपने पहचाना नहीं, लोहापट्टीवाला अविनाश । क्यों, देखा जाय ?”

इंद्राणी ने भर्राई हुई आवाज में कहा, “पता नहीं, उनके ऋण से हम कैसे मुक्त होंगे ।”

×

×

×

छत पर अशोक दूरबीन से देख रहा था । अमला पीछे थी । ज्योंही उसने पीछे देखा कि चार आंखें हो गई । उसने पूछा, “कब आई ? मुझे पता भी नहीं चला ।”

अमला ने कहा, “आपकी आंखें दूर की चीज देखती हैं। पास की चीज आप भला कैसे देख पाने लगे ?”

अशोक ने सफाई देते हुए कहा, “चिड़ियां देख रहा था। दलदलवाली जगह में कितने किस्म की चिड़ियां हैं। कहीं एक बंदूक मिल जाती तो कितना मजा आता।”

“मान लो बंदूक मिल भी जाय, तो उसे चलायेगा कौन ?”

“मैं, मैं चलाऊंगा और कौन ?”

अमला की शरारत-भरी हँसी देखकर उत्तेजित हो अशोक बोला, “महीन और बारीक कपड़े देखकर शायद बहक रही हो। विश्वास रखो कि ट्रेनिंग कोर में खाकी वर्दी पहनकर बकायदा चादमारी की है। फिर हाथ कंगन को आरसी क्या, जब बंदूक है, तो कल या परमो करामात दिखाऊंगा। जादू वह है जो सिर पर चढ़कर बोले।”

अमला बोली, “मुझे भी साथ ले चलियेगा। करामात अपनी आंखों से देखूंगी, तभी यकीन आयगा।”

“पर यह भी तो पता लगे कि वल्शीश क्या मिलेगी ?”

“एक खास तरह का पकवान बनाना मैंने सीखा है। वैसी रसोई कभी न मिली होगी।”

“अब्दुल बावर्ची से भी अच्छी ?”

अमला बोली, “मैंने कहा न कि आपके लिए पास की चीज छोटी होती है। कहते हैं न घर की मुर्गी दाल बराबर। आज की बात नहीं। आपमें मैंने बराबर यही बात पाई है।”

कहते-कहते उसकी आवाज जाने कंसी हो गई। दूरबीन को रखकर अशोक ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। बोला, “अमला, कंसी हो ?”

अमला ने उसी स्वर में कहा, “इतनी देर बाद खानापूरीवाली ऐसी पूछताछ की जरूरत नहीं है।”

अशोक स्निग्ध आंखों से उसे ताकते हुए बोला, “क्या तुम सचमुच मेरे पास की वस्तु हो ? मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम दूर, बहुत दूर

की हो। लगता है, जैसे वह दूर बांस का वन या और भी दूर का कुछ ऊँचा-ऊँचा जाने क्या ! अमला...!”

अमला को उसके अटपटे शब्द सुनकर बड़ी गर्म मालूम हुई। बात बदलने के लिए बोली, “वह स्तम्भ देख रहे हो। नील के साहबों ने इसे बनवाया था। उस जमाने में नदी वही होकर बहती थी। बहुत-से देशों से नील की नावें यहीं आकर लगती थी। मुझे सारी बातें मालूम नहीं। चटर्जी बाबू जानते हैं। उनसे किसी दिन सुनियेगा।”

पर अशोक ने पहले के प्रसंग को ही जारी रखा। बोला, “वह स्तम्भ, वह दलदलवाला जलाशय, आसमान के वे बादल, उन सबसे तुम दूर हो अमला। किसी प्रकार भी तुम तक पहुँचना आसान नहीं। जवसे आया हूँ, इधर-से-उधर भटकता फिर रहा हूँ, फिर भी दर्शन नहीं हुए।”

“तो आने की कृपा क्यों की ? न आने ?”

“यानी ?”

अभिमान-भरे कंठ में अमला बोली, “जंगल में पड़ी हूँ। बात करने को भी कोई नहीं है। जरा याद तो कीजिये कि कितनी चिट्ठियाँ मैंने लिखी थी।”

“पर तुमने यह तो नहीं लिखा कि तुम कष्ट में हो। प्रकृति की शोभा का ऐसा वर्णन किया, मानो ताँतिहाट डम धरती का स्वर्ग है। ऐसी ही बातें तुम्हारी चिट्ठियों में रहती थी।”

“फिर भी स्वर्ग के लोभ में आना ही पड़ा। जंगल जानते तो शायद इधर आख उठाकर भी न देखते।”

“यह जंगल दूसरा ही है, अमला। अगर मालूम होता कि इसमें बदिनी सीता तड़फड़ा रही है तो...”

“तो एक ही छलांग में अशोक-वाटिका में आ जाते, रेल या नाव की भी जरूरत नहीं पड़ती। क्यों है न ?”

अमला की यह उपमा सुनकर अशोक ने कहकहा लगाया।

कलक...

दोनों के अनजान में मलय आ गया और उसने फोटो ले लिया ।

अशोक बोला, “बड़े शरारती हो जी । तुमने तो कहा था कि बस एक फोटो लोगे, पर मालूम होता है कि सारी फिल्म ही खत्म कर दी ।”

“हां, बस एक बची थी । सोच रहा था कि तुम्हारी तस्वीर लूं या दीदी की । ठीक ही रहा । एक साथ मिल गये । घर में कोई बाकी नहीं रहा ।”

भवतारण पहली पोथी, स्लेट-पेंसिल और हाथ-करघे की धुली हुई ग्रेती खरीद लाया। आकर बोला, “मांजी, कुर्ता नहीं मिला। तांतिहाट में कितने लाटसाहब ऐसे हैं, जो बदन को कुर्ते में ढकते हैं ! हुक्म मिले तो गज से मगवा दें। पहले तो पोथी और स्लेट भी नहीं मिलती थी, पर अब दो-दो पाठशालाएं होड़ करके चल रही हैं, इसलिए थोड़े दिनों से ये सब चीजें मिलने लगी हैं।”

इन्द्राणी ने अमूल्य को पुकारकर कहा, “अमूल्य मैली धोती उतार डाल।”

अमूल्य के मन में उत्साह नहीं था। वह बहुत चिंताग्रस्त था। फिर भी अनमना होकर कपड़े बदलने लगा। साथ ही तिरछी आंखों से पोथी-स्लेट की तरफ देखता जा रहा था। अचानक व्यग्र होकर बोला, “मुनिये मालकिन, यह सब नहीं चलने का, मैं कहे देता हूं।”

उसके कहने के ढंग और लहजे के इन्द्राणी को गुदगुदी मालूम हुई। बोली, “इसमें बुराई क्या है?”

अमूल्य ने हठ-भरे स्वर में कहा, “बुराई हो या भलाई, पाठशाला नहीं जाने का।”

इन्द्राणी मुस्कराकर बोली, “अरे, आज तो छट्टी है, कल की कल देखी जायगी।”

“नहीं। साफ बात है मालकिन। मेरे साथ जबरदस्ती की जायगी, तो मैं भाग जाऊंगा।”

इन्द्राणी ने भवतारण से कहा, “मुन लिया ! कह रहा है—भाग जाऊंगा। अब आगे से इसका अकेले सोना नहीं हो सकता। आप लोगों के साथ सोयेगा। आप और बलवन्त पर इसकी जिम्मेदारी रही। इसकी निगरानी रखें, घर के बाहर न जा सके।”

भवतारण बोला, “जरूर-जरूर। रात को मैं सोता थोड़े ही हू। घड़ी-घड़ी पर उठता हू। आपका हुक्म सिर माथे। इस छोकरे को करवट भी नहीं बदलने देने का। वादा करता हू।”

अमूल्य तैश में आकर बोला, “दिन में ही सबकी आखों के सामने चला जाऊंगा। मुझे कौन रोक सकता है? किसीका खरीदा हुआ थोड़े ही हूँ।”

उस तरफ ध्यान न देते हुए भवतारण की ओर देखकर इन्द्राणी बोलीं, “एक काम कीजिये। प्रसन्न पंडित शायद मूर्ति के विसर्जन के फेर में है। उन्हें बुला लाइये। वानचीत कर रखू। मलय भी बन्दर की तरह फिर रहा है। दोनों साथ-साथ पाठशाला जाया करेंगे।”

भवतारण प्रसन्न पंडित को खबर करने चल पड़ा।

अमूल्य ने हाथ में कंधी लेकर वालों के दोनों बाजुओं में दो-तीन बार यों ही जोर-जोर से फेर दी, फिर पोटली उठाकर बोला, “मैं चला। आपके इरादे अच्छे नहीं हैं। एक मिनट भी नहीं रहूंगा। खरीदा हुआ गुलाम नहीं हू। यहाँ किसकी परवाह है?”

इन्द्राणी ने कहा, “मैं कहती हू, नहीं जा सकता।”

इन्द्राणी ने हाथ पकड़ा, पर अमूल्य ने एक ही झटके में छुड़ा लिया।

घैर्य खोकर इन्द्राणी चिल्ला उठी, “ऐं...”

अमूल्य का सारा शरीर कापने लगा। उसकी फटी धोती को फैलाकर इन्द्राणी ने रुखाई के साथ कहा, “यह धोती इतनी कैसे फट गई?”

अमूल्य का चेहरा फक पड़ गया। वह रुक गया।

इन्द्राणी कहने लगी, “नीबू के पेड़ में धोती का जो हिस्सा मिला है, उससे यह बिल्कुल मिल जाता है। लाकर दिखाऊ वह टुकड़ा? सबको बुलाकर दिखाऊ?”

अमूल्य रो पड़ने को हुआ। बोला, “मां की कसम कह रहा हू। कमरे से बिल्कुल बाहर नहीं गया। मालकिन, मैं आपके पैर छूकर कहता हू।”

वह पैर पकड़ने के लिए आगे झुका। इन्द्राणी ने पैर हटा लिये और कुछ

नरम पड़ती हुई बाली, “फिर यह बात कैसे हुई ?”

अमूल्य ने कहा, “क्या एक ही किनारी की दो धोतियां नहीं होतीं ? फिर वे एक तरह से फट भी तो सकती हैं ?”

“जरूर ऐसा हो सकता है ।” कहकर इद्राणी हँस पड़ीं । अभी-अभी वह इतनी नाराज़ थीं, यह कौन कह सकता था ? कुछ रुककर मधुर कंठ से बोलीं, “जरूर हो सकता है । ऐसी कितनी ही बातें घटित होती हैं । अगर सनक में आकर घर से निकल भी गये तो उससे क्या ! तुम कभी बुरा काम नहीं कर सकते । मेरा मुकुल भला कितनी ही शरारते करता था ।”

इतने में अशोक आदि छत से उतर आये ।

मलय की ओर सकेत करके इद्राणी बोलीं, “इस मलय ने मेरी नाक में दम कर रखा है । फिर भी मैं इसे फेंक तो नहीं सकती । तुम दो जने एक साथ पाठशाला जाया करोगे, पढ़-लिखकर आदमी बनोगे । बात मानोगे, ठीक है न ?”

अमला ने आश्चर्य के साथ प्रश्न किया, “अमूल्य पढ़ेगा ? खेला नहीं करेगा ?”

अमूल्य उस समय बरामदे के किनारे जाकर अपनी पोटली खोलकर कघा, शीशा आदि सामान ठीक से रख रहा था, और गमछे को टांग रहा था ।

अशोक बोला, “तो इसके माने यह हुए कि अब यह स्थायी रूप से यही रहेगा ।”

मुरभाई दृष्टि से देखकर इद्राणी बोली, “इस दुनिया में क्या स्थायी है और क्या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता । सोचा था कि मेरे तीन लड़के हैं, पर मुकुल बीच में ही धोखा देकर चला गया ।”

अमला जहांतक होता है मुकुल का प्रसंग नहीं आने देती । डेढ़ साल हो गया, पर अब भी मां के हृदय में बच्चे के मरने का शोक भीतर-ही-भीतर सुलगता रहता है । यह उससे छिपा नहीं है ।

अशोक बोला, “मलय, मा की तस्वीर ले ली ? चल, मां को ले जाकर

आंगन में खड़ा कर। मैं मां का फोटो लूंगा।”

मलय ने कहा, “सबकी तस्वीर लेली। कोई बाकी नहीं रहा।”

इंद्राणी ने भर्राई हुई आवाज में कहा, “सिर्फ एक बाकी रह गया। उसे कोई कभी नहीं पायगा।”

दीवार पर लटके हुए मुकुल के फोटो को वह एकटक देख रही थी। एकाएक बोल उठी, “मुकुल की तरह इस अमूल्य के भी बाल घुघराते हैं और माथा चौड़ा है।”

इसपर अमला नाराज हो गई। बोली, ‘मडली के आवारा लड़के के साथ मुकुल का नाम न लो, मां।’

“चांद टेढ़ा होता है और इमली भी टेढ़ी है। इसलिए दोनों की कोई तुलना नहीं हो सकती।” भवतारण ने कहा। इस बीच में वह प्रसन्न पंडित को साथ लेकर वहां आ पहुंचा था।

इंद्राणी ने स्वागत करते हुए कहा, “आइये पंडितजी, पधारिये। आपकी पाठशाला में दो छात्र बढ़े। एक यह और दूसरा उधर वह। अगर आप प्रेम से पढ़ायेंगे तो कितने ही लड़के हो जायेंगे।”

प्रसन्न ने कुछ हँसकर कहा, “आप देखियेगा कि मैं खोकावाबू<sup>१</sup> को किस लगन से पढ़ाता हूँ।”

इंद्राणी बोली, “अकेले खोकावाबू को नहीं, एक और बालक हम लोगों का यह अमूल्य !”

प्रसन्न ने कहा, “अच्छी बात है। आपने हाथ पकड़ा दिया है। मैं दोनों का खूब ध्यान रखूंगा।”

इंद्राणी बोली, “दो का ही खास ध्यान रखने से नहीं चलेगा। सबका ध्यान रखना पड़ेगा। आपकी पाठशाला में कितने लड़के हैं ?”

प्रसन्न ने चिंतित भाव से उत्तर दिया, “लड़के अधिक कहा से आये? इधर के लोग ऐसे हैं कि अगर पेट में बम भी मारा जाय तो भी ‘क’ का

हरफ उनके मुह से नहीं निकलेगा। पारसाल मख्या बीस तक पहुंची थी,  
पर..."

में हरिपद पर उसका आतरिक प्रेम था। हरिपद ने आंसू पोंछ दिये।

अमूल्य ने रूंधी हुई आवाज में कहा, “हरिपद भैया, इन लोगों ने मुझे जाल में फाँस लिया है। कोई-न-कोई निगरानी रख रहा है। एक कदम इधर-उधर नहीं जाने देते। फिर सुन रहा हूँ कि कल से पाठशाला जाना पड़ेगा।”

हरिपद ने तसल्ली देते हुए कहा, “यों दिल क्यों तोड़ रहा है? कौन बुरी जगह है? मैं तो कह रहा हूँ, अच्छा ही है। अच्छा खायगा, अच्छा पहनेगा और थोड़ा-सा पढ़ गया तो पार्ट याद करने के लिए किसीके निहोरे नहीं करने पड़ेंगे। झटपट तरक्की कर जायगा।”

उसने अमूल्य की पीठ ठोककर उसे प्रोत्साहित किया। फिर बोला, “दो-एक महीने आख-कान बन्द कर रह जा। आखिर कबतक निगरानी रखेंगे? अगर प्यार में कुछ दे, तो अच्छी बात है, नहीं तो जो कुछ मिल जाय, लेकर किमी दिन सटक जाना।”

तसल्ली मिलने पर अमूल्य का दुःख और भी प्रबल हो गया। वह बोला, “तुम तो ऐसा कहोगे हो। खुद तो जाने कितने देश देखोगे और मे मारे दिन पाठशाला में बैठकर सबक याद किया करूंगा।”

फिर उसने अफसोस के साथ कहा, “हवेली के सब कमरे बाहर में एक-से लगते हैं। अंधेरे में ठीक समझ नहीं पाया। कमरा भूलकर मुसीबत में फँस गया। धोती का एक हिस्सा फटकर पेड़ में फँस गया। उसीको रख लिया है। भागने पर हुलिया लिखा देंगे। अब क्या करूँ, भैया?”

पूरी बात सुनकर हरिपद चिन्तित हो गया। अमूल्य के साथ वह भी तो घसीटा जा सकता है। ऐसी हालत में खैरियत के साथ गाव छोड़ जाय, इसीमें भलाई है। गाव क्या, इलाका छूट जाय तभी खैर है।

अमूल्य ने अपने हाथों में अपने दोनों गानों पर तडातड़ कई चाटे मारे। हाय, कैसी भूल उसमें हो गई।

“मुझे भूलना मत, हरिपद भैया! जिन्दा रहा तो फिर किसी दिन मिलेंगे।”

## ३ १३ :

कही बढ़क चल रही थी। अमला दौड़कर निकल आई। उसने इधर-उधर देखा तो बलवत दिखाई पड़ा।

“बलवत, अशोक कहा है?”

“वही तो है। अमीनसाहब के पास से बढ़क निकलवाकर सबेरे में मजाई, घिसाई, तेल-दिवाई हो रही थी।”

अमला व्यग्र होकर बोली, “साथ में मेरे भी तो जाने की बात थी।”

“नहीं तो। उन्होंने तो दूसरी ही बात कही। सबेरे-सबेरे माल-कोचा<sup>१</sup> बांधकर, कमर में कारतूस की पेटी लटका, कंधे पर बढ़क धरकर जा रहे थे तो मैंने कहा कि चिड़िया बटोरने के लिए भी तो एक जने की जरूरत होगी। पर मुझे भी साथ में नहीं लिया। अकेले ही सब करेंगे।”

भुभलाई हुई अमला बोली, “मेरे बारे में कोई बात हुई?”

“हुई जरूर। बोले कि शोर न करो, नहीं तो मालूम हो जायगा। शाम को लौटकर सबको अचरज में डाल दूंगा।”

“वह किधर गये?” अमला ने पूछा।

“उधर गये होंगे।” कहकर उसने अज्ञात क्षितिज की ओर इशारा किया।

“पर बढ़क की आवाज तो कोठी के जगल की ओर में आई है।”

“तो उधर ही गये होंगे।”

धाय ? धाय ! — फिर बढ़क की आवाज हुई।

दोपहर के समय खूब गरमी पड़ती है। अशोक को बिजली के पक्षे का

---

<sup>१</sup> बंगाली धोती के सामने लटकनेवाले हिस्से को पीछे ले जाकर लांग बांधने को मालकोंचा कहते हैं।

अभाव असहनीय प्रतीत होता है। गाव में फिर भी घर है, पेड़-पौधे हैं, पर मैदान और दलदल में कुछ नहीं। इसीलिए वह शुरू में आने से घबरा रहा था।

पर दलदलवाली जमीन में शरीर को बड़ा आराम मिला। मद-मद हवा चल रही थी। धूप की तेजी बिल्कुल नहीं मालूम हो रही थी। यह ईश्वर का आशीर्वाद था, नहीं तो गर्मी के मारे लोग खेतों में काम नहीं कर पाते। धान कटकर जा चुका था। मिट्टी सूखकर पत्थर-सी हो चुकी थी। इस पथराई हुई धरती पर कुछ दिनों में फागुन बीतते ही किसान हल लेकर उतर पड़ेंगे। पहला पानी पड़ने पर मिट्टी घिसे हुए चदन की तरह मुलायम हो जायगी। एक ही कतार में कई टीले हैं। खजूर का बाग है। वट, नीम और शिरीष के पेड़ और बांस के दो-एक कुंज भी हैं। ढाल की तरफ बीच-बीच में शोला के वन हैं। शोला के पेड़ देखकर मालूम होता है कि वहापर कुएं हैं। कुओं के किनारे ही शोला के पौधे पैदा होते हैं। बरसात के पानी से बने इन तालाबों की मछलियां कुओं में आ जाती हैं। जब तेज गर्मी पड़ती है, तो इन कुओं का पानी सूख जाता है। नीचे की तरफ दूर तक फैली हुई जलराशि है। बारहो महीने वहा पानी रहता है। कभी हरिहर नद वही होकर बहता था। अब मुह बंद हो जाने के कारण जलाशय बनकर रह गया है। नदी दक्षिण में हट गई है।

वहा नील की कोठी थी। अब कोठी का जगल है। एक कच्ची सड़क कोठी तक चली गई थी। कोठीवालों ने ही उसे तैयार किया था। कभी इसका कुछ हिस्सा पक्का था। उन दिनों गोरों की टमटमों की खूब आवा-जाही रहती थी। अब तो कई जगह पर सड़क का नाम-निशान तक नहीं है। लोगो ने सड़क को काटकर धान के खेत में मिला लिया। सड़क के दोनों किनारों पर छायादार वृक्ष लगाये गए थे, यह बात टीले के किनारे वट, शिरीष, नीम आदि देखकर अभी तक अच्छी तरह पता लग जाता है। बरसाती कीचड़ में यह सड़क काम लायक नहीं रहती। ऐसे समय नील की कोठी और उधर के गावों तथा तातिहाट के बीच नावों से यातायात करना

पड़ता है।

अशोक सावधान दृष्टि में चारों तरफ देखते चल रहा है। कई बार बढ़क चलाई, पर चिड़िया एक भी नहीं गिरी। चिड़िया आती थी, पर मानो शिकारी का उपहास करके उड़ जाती थी। यह मामला क्या है? धीरे-धीरे वह शक्ति होता जा रहा था। इसी डर से वह अमला को साथ नहीं लाया था, पर उसमें कोई बात छिपी ही थोड़े रहेगी। तेज छुरी की तरह हँसी से वह अशोक की चिड़ी-चिड़ी उड़ा देगी।

तभी एकाएक बहुत-सी चिड़ियों की विचित्र सम्मिलित चीख सुनाई पड़ी। अशोक ठिठककर खड़ा हो गया। लगेटी पहने हुए एक चरवाहा ढोर छोड़कर पगडंडी पर बैठकर कुछ कर रहा था। अशोक ने उससे पूछा, “क्या बात है, जो ये चिड़िया इतना चिल्ला रही है?”

वह बोला, “साहब, इन चिड़ियों को डाक चिड़िया कहते हैं। वह (मकेत करके) जो साहबों की भील है, वहाँ इकट्ठी होती है।”

चरवाहे ने धोतीवाले बाबू को शायद भील इसलिए बताई कि उसके पास बढ़क थी। पर उस भील को साहबों की भील मानने की अशोक की इच्छा न हुई।

“अरे, यह तो ऊँर है। भील कहा?”

पर इसके बाद उसने ध्यान से देखा कि जिसे वह अबतक लहलहाती फसल समझ रहा था, वह एक तरह की नागफणी का जंगल था। कुछ हिस्सा साफ कर दिया गया है, इसमें पता चलता है कि नीचे पानी है। नागफणी के दोनों तरफ सरपत का जंगल और एक तरह की काटेदार घास है। इसे अशोक ने गलती से ईख समझा था। दो आदमी उसी जंगल में लाठी भोंक रहे थे। इस क्रिया से सड़ी सेवारवाली कीचड़ उठ रही थी।

“यह क्या कर रहे हो?” अशोक ने उत्सुकता से पूछा।

“कछुए खोज रहे हैं।” एक आदमी ने कुछ आगे बढ़कर कहा—

“आप कौन हैं? कहा के रहनेवाले हैं? कहा ठहरे हैं?”

अशोक कुछ उत्तर दे कि फिर डाक चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई

पड़ी। लबी बातचीत का मौका नहीं था। सो अशोक ने सक्षेप में कहा, “मैं कलकत्ते से रायबाड़ी में आया हूँ।”

उसने जूते खोलकर फेंक दिये। मालकोंचा को और कसकर बाधा और होंगला के उस जंगल में गायब हो गया, जहाँ से चिड़ियों का वह शोर आया था। उसके जाते ही एक भयकर चीख आई।

किसी आदमी ने कहा, “क्यों आप डर गये। हम लोग यहीपर हैं। डर काहे का ? इतना चिल्लाने पर चिड़िया इस इलाके से जाती रहेगी।”

दूसरा आदमी काफी दूर था। उसने कहा, “अरे भीम, जरा आगे बढ़कर देख तो क्या हुआ है ?”

पर भीम नाम से संबोधित व्यक्ति ने आगे बढ़ने का कोई आसार नहीं दिखाया। वह पहले की तरह लाठी भोकता रहा और वहीं से उपदेश भड़ता रहा। बोला, “उस बीहड़ जंगल में कहा जा फसे ? जल्दी से निकल आइये।”

लेकिन उपदेश सुनने के पहले ही कीचड़ से सना हुआ अशोक सरपट और उस लबी घास के जंगल में गिरते-पड़ते जमीन पर आकर बैठ गया।

भीम ने उसपर एक निगाह डालकर कहा, “डाक चिड़िया बंदूक में काबू में नहीं आती, उन्हें जाल डालकर पकड़ना पड़ता है।”

अशोक ने अपना एक पैर दबाते हुए कहा, “किसी चीज ने काट लिया। बहुत जल रहा है।”

भीम बोला, “आप जिस जंगल में गये थे, उसमें किसीका काट लेना आश्चर्य की बात थोड़े ही है।”

“इसमें सांप-वाप तो नहीं है ?”

सहज भाव से भीम बोला, “हो सकता है।”

अशोक कराह उठा, “क्या ? साप ? कौन-सा साप ?”

“खये-केउटे, काल-केउटे, कालाज<sup>१</sup>। कई तरह के साप होते हैं। फिर

<sup>१</sup> ये घातक सांप हैं।

ढोंड़ा-दाड़ा<sup>१</sup> भी होता है। अगर ढोंड़ा ने काटा है तो नाक में तेल डालकर सो जाइये, कुछ नहीं होगा।”

“पर केउटे नहीं है यह कौन कह सकता है ?”

इसपर भीम ने कधा हिलाते हुए कहा, “जाने भी दीजिये, साहब ! केउटे होता, तो इस समय तक आपके दात लग जाते और मुह में फेन आ जाता। पर कालाज हो सकता है, उसके काटे से कष्ट नहीं होता।”

“कालाज के काटे से आदमी मर जाता है ?”

“क्यों नहीं। वे तो साक्षात् यमराज होते हैं। जितने लोग साप के काटे में मरते हैं, वे सब कालाज-कानड के काटे से ही मरते हैं। आप अच्छे-खासे विस्तरे पर लेटे हैं। उसने जरा-मा छू लिया कि ब्रम धीरे-धीरे नीले पड़ते जायगे।”

अशोक ने व्याकुल होकर कहा, “अरे भाई, जरा पास आकर तो देखो।”

पर इसी बीच लाठी खट में बोली। उसका परिणाम देखे बिना भी वहां में कैसे टलता !

अशोक को जोर से कपकपी लग रही थी।

“क्यों भाई, पैर को बाधना चाहिए क्या ?”

“जी हा।”

इस बीच भीम ने जगल हटाकर एक हाथ जगह साफ कर ली थी और बड़ी सावधानी से लाठी भोक रहा था। फिर लाठी छोड़कर वह कीचड़ में उतर पड़ा। अब वह टटोल रहा था। उसने अशोक को मौखिक तसल्ली देना जारी रखा।

“बाधना शुरू कीजिये, साहब।... (प्रसन्नता से) मालूम होता है, एक कछुआ पकड़ाई में आ रहा है। उसे ढग से लगाकर आ रहा हू।”

अशोक बोला, “भैया कमर में खोसी हुई रस्सी को जरा मेरी तरफ फेंक दो।”

---

<sup>१</sup> ये सांप बिचले नहीं हैं।

“अरे साहब, रस्सी से क्या काम बनेगा ! रस्सी बांधने से जहर नहीं रूकता । आप महीन धोती पहने है । उसकी किनारी फाड़कर बाध लीजिये । किनारी का बंधन जहर नहीं चढ़ने देता ।”

इतनी देर में परिस्थिति की गंभीरता कुछ-कुछ समझकर भीम ने दूसरे आदमी से कहा, “ये खुद नहीं बांध पायेंगे । हाडो भाई, तू बांध दे । कछुए का ठीक-ठाक करके मैं आ रहा हूँ ।”

हाडो ने भट से अशोक की धोती का किनारा फाड़ लिया । फिर बिना कुछ कहे-सुने उसने दो अंगुलियों से जाघ पर चिकोटी काटी । सच तो यह है कि इसे चिकोटी काटना न कहकर लोहे की संडासी से पकड़ना कहना अधिक ठीक होगा । अशोक ने पीड़ा के मारे जोर से कराहते हुए कहा, “छोड़ो-छोड़ो, यह क्या कर रहे हो ?”

हाडो ने चिल्लाकर सूचना देते हुए कहा, “जगह मुन्न नहीं पड़ी है । मालूम होता है, काटे का घाव नहीं है ।”

भीम इस बीच एक बड़ा-सा कछुआ पकड़कर उसे जमीन पर चित्त नैटाकर उसके चारो पैरों में रस्सी बांध रहा था । अच्छी तरह बांधकर वह इधर आ गया । बोला, “कई बार चिकोटी काटने से ठीक पता नहीं चलता ।”

उसने पैर के कुछ रोओं को एक साथ पकड़कर खींचा । खींचते ही रोएं एक साथ उखड़ आये ।

इसपर कड़ुवा-सा मुह बनाकर भीम बोला, “साप ने नहीं काटा तो रोएं कैसे उखड़े आये ?”

अशोक बोला, “तुमने इतने जोर से खींचे कि चमड़ी नहीं उखड़ आई, यही ताज्जुब है ।”

इतने में देखते क्या हैं कि उधर से निर्मल जा रहा है ।

दोनों पुकारने लगे, “मास्टरसाहब, ओ मास्टरसाहब ! जरा यहां तो आइये ।”

कीचड़ में सने, और विचित्र ढंग से लेटे हुए अशोक को देखकर निर्मल

भटपट आ गया।

हाडो बोला, “ऐसा मालूम होता है, सांप ने काट खाया है।”

भीम ने सर्वज्ञता की दृष्टि से एक बार अशोक को फिर निर्मल को देखते हुए कहा, “ये रायबाडी मे आये हुए है। यहा चिडियो का शिकार करने आये तो यह हाल हुआ। जरा मास्टर, देखो तो। खीचने पर रोए उखड आये हैं।”

अशोक के पास भुक्कर निर्मल ने बडे ध्यान से घाव की जगह देखी। फिर उमपर अगुली फेरी। जरा-सा फूल गया था। वह हँसने लगा। हँसी थमने पर बोला, “तुम लोगो ने शरीफ आदमी को नाहक परेशान किया। कुछ नही, कानखजूरे ने काटा है। एक काम करो, भीम। जगह को रगडकर पोछ लो, फिर तुम्हारे पास हुक्के का तबाक् है, उमे लेकर जरा मन दो।”

और भी ध्यान मे देखकर निर्मल ने आशका का निवारण करके बधन खोल दिया। तबाक् लगाकर बोला, “क्यो, तबाक् से दर्द कम हुआ न? जरूर कम होगा। आप कीचड मे गिर पडे थे। कही सरपतो के उम वीहड जगल मे कोई जाता है?”

अशोक ने कहा, “उसमे डाक चिडिया बोल उठी थी।”

निर्मल ने हँसकर कहा, “और आपने पीछा किया। वडी चालाक चिडिया है वह। बटूक से गिराना असभव है। लोग जाल डालकर पकडते हैं। (हाडो को संबोधन करके) क्यो अबकी बार तुम नही पकड रहे हो?”

हाडो बोला, “कभी-कभी पकडता हू।”

निर्मल ने कहा, “यह गाव के मेहमान हैं। व्यर्थ मे इन्हें कष्ट हुआ। अबकी बार जब पकडो तो दो-चार पहुचा आना।”

बटूक बगल मे पडी थी। निर्मल ने उसे उठाकर देखा। अशोक ने सावधान करते हुए कहा, “उसे छोडो मत, मास्टर। भरी हुई है।”

निर्मल बोला, “आप बटूक के साथ गिर पडे थे। खरियत है कि साप के काटे से न सही, बटूक की गोली से घायल हो सकते थे।”

बातचीन चल ही रही थी कि बहुत दूर करेमा के साग के जंगल में बत्तख का एक जोड़ा दिखाई पड़ा। वह जंगल इतनी दूर पर था कि लगभग नहीं के बराबर दिखाई दे रहा था। निर्मल ने बढ़क उठाई। बोला, “इसी जगह दवाने से गोली निकलती है न ?”

अशोक बोला, “जरा दबाकर देखो न। ऐसा धक्का लगेगा कि धड़ाम से धरती पर गिरे पड़ेंगे। हड्डी-पसली टूट जायगी और तब आटे-दाल का भाव मालूम पड जायगा।”

थोड़ी देर चुप रहकर फिर उसने व्यंग करने हुए कहा, “अरे, तुम तो निशाना लगा रहे हो ? यही मे निशाना मारना चाहते हो क्या ?”

निर्मल बोला, “धक्के की बात आपने खूब कही ! पर हा, गिरा तो सूखी जमीन पर ही गिरूंगा। आगे बढ़ा तो कीचड़ में गिरकर आपकी-सी हालत होगी।”

कहते-कहते उसने घोड़ा दबा दिया।

पर यह क्या ! आश्चर्य की बात हुई। एक चिड़िया तो साथ ही गिरी। दूसरी छर्रा खाकर दौड़ी कि कुछ गज पर वह भी नीचे आ रही।

अशोक चकित रह गया। बोला, “तुम तो पक्के निशानेबाज हो, जी। फिर पूछते हो कि कहा दवाने से गोली निकलती है ! तुम्हारा तो हाथ खूब सधा है।”

हँसकर निर्मल बोला, “ठीक कहते हो, मेरा हाथ खूब सधा है, पर बंदूक पर नहीं, लड़कों की पीठ पर।”

अशोक ने गभीरता के साथ कहा, “इतनी मफाई तो हजार में एक के हाथ में होती है।”

निर्मल बोला, “नही जी, यह तो तकदीर में लग गया। बंदूक भी बड़ी अच्छी है।”

अशोक ने कहा, “और एक दफा देखो। गायद तकदीर से दो-एक और लग जाय। तुमने मेरी इज्जत बचा ली। कीचड़ में सन-सनाकर खाली हाथ लौटता तो लोग इतना बनाते, इतना बनाते कि शायद अपनी

छाती पर गोली लेनी पड़ती ।

दोनों का परिचय हुआ । दोनों वहीं द्वार पर बैठ गये ।

निर्मल बोला, “आपका कैसे स्वागत करूँ ? हम लोग गवार आदमी ठहरे । चाय का प्रबंध तो है नहीं । नीरा पी लीजिये । यह कलकत्ते में नहीं मिलती । बहुत मीठी है, और गुणकारी भी ।”

उसने एक लड़के को बुलाकर कहा, “अतुल देखो तो, रम पिलाने का कोई डौल हो सकता है या नहीं ।”

निर्मल की बात सुनते ही अतुल तो दौड़ा ही, साथ ही चार-पाच और दौड़ पड़े । इधर-उधर देखकर अशोक बोला, “बहुत-से कमरे हैं । हाई स्कूल होता तो ठीक था, पर पाठशाला के लिए इतने कमरों की क्या जरूरत है ?”

निर्मल ने उत्तर दिया, “ठीक है । कमरों की उतनी जरूरत नहीं है जितनी कि जमीन की है । रुपये हाथ में नहीं हैं, इसलिए जंगल को काट-काटकर जमीन निकालनी पड़ रही है । पर है यह बड़ा कठिन काम । नाकों चने चबाने पड़ रहे हैं ।”

अतुल थोड़ी देर में लौट आया । उसके साथ अमला और बलवत भी थे । पास आकर वह बोला, “रम अच्छा नहीं है, निर्मल भैया । फेन पैदा हो गया है । गरमी पड़ रही है न ? केनाराम आदि हरा नुरियल ला रहे हैं ।”

“अच्छा ।”

कहकर निर्मल मुस्कराकर अमला का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ आया, बोला, “क्यों स्कूल के कमरे में बैठेंगी ? पर वह ऐसा है कि घास का जंगल उससे कहीं अच्छा है ।”

अमला ने उत्तेजित कंठ से कहा, “आपसे शिकायत करने आई हूँ । नङ्गको ने मेरा अपमान किया है ।”

कुछ परेशान-सा होकर निर्मल बोला, “सो कैसे ?”

अतुल बोला, “नहीं निर्मल भैया, अपमान क्यों होने लगा । हम लोगों

ने अपमान नहीं किया।”

निर्मल ने पूछा, “क्यों, तूने कुछ कहा था?”

“ये लोग नरम-नरम ककड़ी तोड़ रहे थे। मैंने मना किया।”

निर्मल अमला को सबोधित करके बोला, “देखिये, जैसे सबको मना किया जाता है, वैसे ही आप लोगों को भी मना किया। पहचान नह, पाया।”

फिर अतुल की तरफ देखकर बोला, “ये लोग शहर में रहते हैं। तुम लोगों के खेत की चीज खाने की इच्छा हुई। तुम्हारा मना करना ठीक नहीं हुआ।”

अमला ने आवेश में भरकर कहा, “अगर भला चाहते हो तो खेत से निकल जाओ, मैं पूछती हूँ ऐसा कहना कहातक मुनासिब था? क्या पाठशाला में आप केवल ‘क-ख-ग-घ’ सिखाते हैं, शराफत नहीं सिखाते?”

निर्मल ने अमला की तरफ देखा, फिर रुखे लहजे में अतुल से पूछा, “क्यों जी, तुमने ऐसा कहा था?”

अतुल ने रुआसा-सा होकर कहा, “इनमें नहीं।” फिर बलवत की ओर इशारा करके बोला, “उस आदमी से कहा था।”

अमला बोली, “मेरे आदमी का अपमान किया या मेरा किया, एक ही बात है। खेत में तो मैं भी थी।”

निर्मल ने कहा, “गाव के लडके हैं। स्त्रियों का मान करना नहीं जानते। किसे क्या कहना चाहिए, यह इन्हें पता नहीं। इनकी तरफ से मैं माफी माग रहा हूँ।”

अतुल बोला, “निर्मल भैया, खाने के लिए यह एक-आध ककड़ी ले लेता, तो हम कुछ न कहते। इसने तो सारी चोयल ककड़ियां तोड़कर धोती में बांध ली। देखिये न। मना किया तो घुड़ककर मारने दौड़ा और मा-बाप की गालियां देने लगा।”

बलवत ने झिड़कते हुए कहा, “ज़रूर दूंगा। क्या किसीके बाप की ज़मीन है? यह सब ज़मीन राय इस्टेट की है।”

निर्मल बोला, “देखू, कितनी ककडिया तोड़ी है। लाओ, सारी ककडिया यहाँ डाल दो।”

वलवन्त ने ककडिया पटक दी। निर्मल ने उनका परिमाण देखा तो चेहरा तमतमा गया। अमला की ओर देखकर बोला, “आप शायद भूली नहीं होगी कि मडली के उम लडके ने आपके पेड में बेर तोड़ लिया था तो कैसी गत बनाई गई थी। उसे रस्मी में बांधकर थाने भेज रहे थे।”

अगोक अवतक चुप था। वह कहकहा लगाकर बोला, “मास्टर, बाधने-बूधने के फेर में मत पड़ो। तुम्हें रुपयों की जरूरत है। लो मैं इसका रिहाई के दाम दिये दे रहा हूँ।”

अमला का चेहरा तमतमा आया। बोली, “बेर खाने के लिए किमीने कुछ नहीं कहा था। उसने बेर फेंककर मारा था।”

आग में घी का काम करते हुए वलवन्त ने कहा, “ऐसा मारा था, ऐसा मारा था कि दीदी बेहोश हो गई थी और माथा फूलकर ऐ...सा हो गया था।”

निर्मल ने व्यग्यभरे स्वर में कहा, “मक्खन की तरह मुलायम शरीर है। फूल की मार में सुध-बुध खो बैठती है, बेर तो फिर बहुत बड़ी चीज हुई! पर यह कोमलता महज बाहरी ही है? क्या भीतर कुछ भी कोमलता नहीं है? लडको ने जंगल काटकर सब्जी लगाई है, उसे उजाड़ते दर्द नहीं आया, लज्जा अनुभव नहीं हुई?”

इस व्यग से अमला तिलमिला गई। बोली, “आप कह रहे थे कि लडके स्त्रियों का सम्मान करना नहीं जानते, पर उनके गुरुजी भी कुछ कम नहीं है। गवार छात्रों के गंवार मास्टर—न शिक्षा, न सम्भयता।”

फिर कुछ रुककर क्रोध-कपित कंठ में अगोक से बोली, “ककडी के जो दाम हों, दे दीजिये।”

वलवन्त ने ककडियों को हिला-डुलाकर कहा, “क्या दाम होंगे। यह दस-बारह आने, और क्या?”

निर्मल कंधा हिलाकर बोला, “वान इन ककडियों के दाम की नहीं

है। अगर ये बड़ी हो गई होनी तो दक्षिण से दूकानदार आकर इनके अच्छे दाम दे जाते।”

फिर उसने अशोक से कहा, “लडके मेहनत-मजदूरी करके खर्च चलाते हैं, न कि बड़े आदमियों के धन से। यही उनकी जीविका और भविष्य है। पुस्तक, स्लेट, पेंसिल, सब इसी पैसे से खरीदे जाते हैं।”

बलवन्त बोला, “अच्छे भगडालू में पाला पड़ गया। तो तुम लोग ककड़ी का दाम दो-चार सौ लोगे क्या?”

इसी समय केनाराम ने हरे नारियलों का एक गुच्छा नीचे लाकर उतारा। निर्मल मन-ही-मन हिसाब लगाकर बोला, “दक्षिण के दूकानदारों की बान जाने दीजिये। बड़ी होने पर बनिया ही तीन रुपये दे देता। क्यों अतुल, है न ठीक? क्यों भाई केना, क्या कहते हो?”

मुह उठाकर अमला की तरफ देखकर वह बोला, “लाइये, तीन रुपये।”

अमला बोली, “अशोक भैया, इनके मुह पर दस रुपये फेंक दीजिए।”

निर्मल बोला, “जब दस रुपये निकलते ही नहीं, तो मैं उतने क्यों लेने लगा?”

अमला बोली, “बड़े आदमी मुफ्त में दिया करते हैं।”

निर्मल बोला, “देते होंगे, पर हमें तो तीन ही दीजिये। दूकानदारी के मामले में लोगों को ठगना हम लोगों का पेशा नहीं है। बाकी रुपये नहर में डाल दीजिये। बड़े लोग ऐसा भी तो करते हैं।”

अशोक ने बीच में पड़कर कहा, “अच्छा, जो कुछ देना है, मैं दूंगा। भगडा खत्म करो। शांति; शांति:!”

निर्मल छुरी से हरा नारियल काटकर अमला के सामने ले आया, पर उसने मुह फेर रखा था।

“लीजिये, यह नारियल।”

“नहीं।” अमला ने रुखाई से कहा।

“इसे ले लीजिये। दिमाग और मिजाज ठंडा हो जायगा। बाद में सोचकर देखें कि अन्याय हुआ था या नहीं। ये लड़के बहुत ही गरीब

है। इनके मा-बाप पढाई-लिखाई का खर्च नहीं देते, इतना ही नहीं, बल्कि नाराज भी होते हैं कि लडको ने पाठशाला जाने में उनके काम में हर्ज होता है।”

अमला ने उत्तर नहीं दिया।

उमें चुप देखकर निर्मल ने कहा, “अच्छा, मैंने जो कुछ कहा, उसे वापस लेता हूँ। आप बाहर से कोमल हैं और भीतर से भी। आपने भी तो मुझे बहुत-कुछ कहा—गवार मास्टर, न शिक्षा, न मभ्यता।”

अमला को प्यास लगी थी। कुछ बुरी-भली बातें मुह में निकल गई थी, इसलिए शायद कुछ लज्जा भी आई। उसने नारियल ले लिया, फिर अशोक में बोली, “इस नारियल का दाम भी चुकता कर दीजियेगा।”

निर्मल ने कहा, “हां, दे दीजियेगा। तीन रुपये और नारियल का एक आना।”

अमला ने सशोधन करते हुए कहा, “नहीं, तीन रुपये दो आने। दे दीजियेगा, अशोक भैया। आपने भी लिया है।”

निर्मल बोला, “अपने नारियल का दाम वह कभी नहीं देना चाहेंगे। उनके माथ दोस्ती है, खूट्टी थोड़े ही है।”

अमला बोली, “मेरा अपमान हुआ और अशोक भैया आप इनमें दोरती कर रहे हैं?”

अमला का स्वर अभिमान के मारे थर-थर कांप रहा था।

अशोक ने परेशान होकर कहा, “अरे, दोस्ती कहा! भगड़। करूंगा। एक दिन पूरी ताकत से आकर इस खटमल के टीले को तोड़ दूंगा। आज तो हम बस तीन आदमी हैं। इतने लोगों के साथ कैसे पूरा पायेंगे? अभी तो चले। शाम हो रही है।”

निर्मल ने अशोक को अलग ले जाकर उसके हाथ में दस रुपये के तीन नोट थमा दिये। निर्मल ने आश्चर्य के साथ कहा, “दाम तीन रुपये मांगे थे, तीन नोट नहीं।”

“कोई बात नहीं है। मास्टर, तुमने बहुत मेहनत की है। इतनी चिड़ियां

मार दी। लडके पेड पर चढकर नारियल लाये।”

“अच्छा, तो मेहनत की मजदूरी दे रहे है ?”

अशोक भेपकर बोला, “नही-नही, यह क्या कहते हो ? बच्चे मिठाई खायेगे।”

“यहा मिठाई नही मिलती।”

“जो मिलेगा, वही खायगे, नही तो समझ लो स्कूल की सहायता के लिए है।”

निर्मल मुस्कराकर बोला, “ये नोट रख लीजिये। किसी दिन स्कूल मे आइये, देखिये, सुनिये। बिना देखे सहायता कैसी ?”

“यह क्या कहते हो !”

अशोक निर्वाक विस्मय से उसके चारों तरफ देखता रहा। फिर बोला, “अच्छी बात है। एक दिन देखने आऊंगा। पर तुम भी अजीब आदमी हो। मैंने खुशामद करके तुम्हे चढा देना चाहा, तुमने इन्कार कर दिया। नही, तुम्हारा स्कूल नही चलने का !”

भवतारण डब्राणी के हुक्म का अक्षरशः पालन कर रहा था। जिस कमरे में संघ लगी थी, उसीके फर्श पर अमूल्य के सोने की व्यवस्था थी। व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर थी। दिन में लठैत-दरबान और प्रमन्न पंडित की आख वचाकर भागना भले ही सम्भव हो, पर रात को जरा तेज मास ली कि भवतारण फौरन डटकर बैठ जाता था।

अमूल्य दीवार से सटकर सोता था। उसके इधर बलवत अपने पर्वत-कार शरीर को लेकर डटा रहता था। इस हिमालय को पार करना असम्भव था। फिर बलवत और अमूल्य की एक ही मसहरी थी। एक हाथ छोड़कर दरवाजा रोकते हुए भवतारण की मसहरी लगती थी। मसहरी के बाहर हाथ के पास हुक्का, चिलम, तम्बाकू, टिकिया, ढिबरी, दियासलाई आदि रात काटने के सज्जाम थे। उसने डब्राणी में कहा था, “हर घण्टे उठना होता है।”

नम्रतावश उसने कुछ घटाकर ही कहा था। असल में वह घण्टे में एक से अधिक बार तम्बाकू पीने उठता था। ढिबरी जलाकर, चिलम मुलगाकर वह सुडुक्-मुडुक् देर तक तम्बाकू पीता रहता था।

इधर अमूल्य की ऐसी बुरी आदत थी कि रोशनी में किसी तरह सो नहीं पाता था। वह भवतारण के निहोरे करते हुए कहता था, ‘भैया, दिन में तो कोल्हू के बैल की तरह पाठशाला की घानी चलाता हूँ, रात में सो नहीं पाऊंगा तो कैसे काम चलेगा?’

हुक्के का जोर से लम्बा कश खींचकर नाक और मुह से धुआँ उड़ाने लगा भवतारण निर्विकार ढग से कहता था, “तू सोता क्यों नहीं? तुझे सोने से कौन रोकता है? तू सोये यही अच्छा है।”

अमूल्य बोला, “आप घड़ी-घड़ी पर उठकर नाक में दम करते रहने हैं। सोऊ कैसे?”

भवतारण ने आखें लाल-पीली करते हुए कहा, “तो क्या तेरी नीद के लिए मैं तीस साल की अपनी आदत छोड़ दूँ ?”

अमूल्य बोला, “तम्बाकू पीने से कोई मना थोड़े ही करता है। बस इतनी-सी अरज है कि ढिबरी न जलाया करे। आखों पर रोशनी पड़ने से नीद नहीं आती। ऐसा लगता है, मानो मजलिस के बीच में खड़ा हूँ।”

भवतारण बोला, “ढिबरी न जलाऊ तो क्या अगुली से तम्बाकू मुल-गाऊ ? बक-बक मत कर, आखें मूदकर पड़ा रह।”

यही एक मुसीबत थोड़े ही थी। इधर बलवत खरटि भरना शुरू कर देता था। उसकी नीद जितनी गाढ़ी होती थी, खरटि भी उतने ही तेज होते थे।

अमूल्य ने बलवत को हिलाया, बोला, “यह भी खूब रही। अब तुमने यह नाक का बाजा बजाना शुरू कर दिया।”

भवतारण ने मजाक करते हुए कहा, “तू तो मजलिस के बीच में खड़ा है, बाजा शुरू है तो तू फिरकइया लगाना शुरू कर।”

यह सब होने पर भी बलवत की नीद नहीं टूटी। पहले अमूल्य ने उसे धीरे-से हिला दिया था, अब उसने उसे झकझोर डाला, फिर भी वह जगा नहीं। शायद मुगदर में पीटा जाय तो भी नीद नहीं टूटेगी।

आले में कड़वे तेल की बोतल रखी है। बलवत ठहरा पहलवान। प्रति-दिन दो घण्टे मालिश होती है। तेल उसी का है। अमूल्य के जी में आया कि वह तेज-सहित बोतल उठाकर बलवत के सिर पर दे मारे। उसने हाथ बढ़ाकर बोतल की डाट खोली और उसे बलवत की नाक में लगा दिया कि शायद खरटि बन्द हो जाय, पर यह क्या ? सास के वेग के कारण डाट गोली की तरह छिटक गई।

अमूल्य ने मन-ही-मन कहा, “हे माता वीणापाणि, यह तुमने किस मुसीबत में फसा दिया ! यह कैसी भयंकर परीक्षा है।”

यह तो रही रात की हालत। दिनभर वह प्रसन्न पंडित के जिम्मे रहता है। पंडित के स्कूल में बस ये ही दो छात्र बढ़ पाये थे। इतने दिनों

मे तीसरा छात्र नहीं मिला। इद्राणी ने कसर नहीं रखी। जो भी मिलता, उसे पाठशाला में छात्र भेजने के लिए कहती। भवतारण में भी कहलवाती। वह रोज सबेरे टहलने जाती है, लौटने समय कभी-कभी पाठशाला में बैठ जाती है। कई दिनों में शाम के समय छात्रों के लिए दूध भी भेज रही है। शाम-सबेरे प्रसन्न पंडित चिल्ला-चिल्लाकर पढ़ाता है। छात्र और दूसरे लोग सुनते हैं, पर किसीके कानों में जू नहीं रेंगती।

पहाड़े रटे जा रहे थे। वरामदे में कैश बक्स के पीछे उकड़ू बैठकर हिसाब लिखते-लिखते भवतारण ने मुह बनाकर एक छात्र से कहा, “यह ची-ची करके रटाई कर रहा है, जैसे बीजगणित पढ़ रहा हो ! क्यों, चिल्ला नहीं सकता ? गले में जोर नहीं है ? चावल खाता है या साबूदाना ! अरे जोर से पढ़। लोग जानें तो कि पाठशाला है। हो-हल्ला सुनकर दस-पाच लडके और आयगे।”

कुछ देर बाद सीढ़ी में उतरकर जमुहाई लेने हुए भवतारण पाठशाला में जाकर खड़ा हो गया। अचरज के साथ बोला, “अरे, पंडितजी यह क्या मामला है ? वस इतने ही लडके रह गये ?”

प्रसन्न ने दुखी होकर कहा, “नया कोई आता नहीं, उल्टे रोज दो-एक घटते जाते हैं। मैं सोच में पड़ गया हूँ, चटर्जी बाबू। माताजी ने स्कूल का भार तो ले लिया, पर लडके ही नहीं आते तो क्या किया जाय ?”

भवतारण बोला, “वह मास्टर हाथ धोकर पीछे पड़ गया है।”

प्रसन्न ने सिर हिलाकर समर्थन किया। बोला, “खबर मिली है कि इस बीच कई लडके उस स्कूल में बढ़ गये हैं।”

भवतारण ने गरजकर कहा, “स्कूल नहीं, अड्डा कहो।”

प्रसन्न बोला, “सच है, पर यह भी कहे देता हूँ कि खेती के दिन आ रहे हैं। और अब किमान अपने लडकों को स्कूल से छुड़ाकर उनसे खेतों में पान्ना<sup>१</sup> मगायेगे।”

<sup>१</sup> पानी में रखा हुआ भात।

थोड़ा-सा हुलास सूँघकर नाक भाडते हुए मुह बनाकर प्रसन्न बोला, “रही, निहायत रही स्थान है। बीस साल से देख रहा हूँ।”

भवतारण ने एकाएक बड़ी आश्चर्यजनक बात कही, “पंडित, तुम्हे छात्रों की फिक्र है! कहो तो मैं तुम्हारी पाठशाला को लडको से भर दूँ।”

अमूल्य स्लेट लेकर पंडितजी की चौकी के सामने खड़ा हो गया। प्रसन्न बोला, “पर मुझे ऐसे लडके नहीं चाहिए।”

भवतारण ने शरारत से कहा, “दुलार का बिगड़ा उल्टा चलता है। यह दुलारा लडका है। पंडित, जरा होशियार रहना।”

प्रसन्न ने भयचकित दृष्टि से डधर-उधर देखा। फिर बोला, “मुझे बोलने का कोई शौक थोड़े है। पर दुःख के मारे अपनी बात कह डालता हूँ। मुह अंधरे कसम खाकर आया था कि आज इस लडके को अ-आ, इ-ई सिखाकर ही दम लूँगा। पर डेढ़ पहर हो गया, अभी तक वही के वही है। भैया, अथाह समुंदर है। बड़े-बड़े हरफ बना दिये थे कि वेटा इन्हे देखकर लिख। इतनी देर बाद यह चित्रकारी बनाकर लाया है।”

इतना कहकर पंडित ने जोर से अमूल्य का कान पकड़कर अपनी तरफ झुका दिया। बोला, “इनमें कौन हरफ हड़िया है, कौन कलमा, कौन जलेबी, कौन बालूशाही, यह मुझे समझा।”

भवतारण हँस पड़ा। प्रसन्न ने अबकी बार ‘अ-आ’ केवल दो हरफ लिख दिये और कहा, “इन्हीपर पेसिल फेरो। जब बिना देखे इन्हे लिखने लगेगा, तब छोड़ूँगा। देखता हूँ कितने महीने लगते हैं। तेरे साथ मैं भी बैठा रहूँगा। पंद्रह-बीस दिन हो गये, माताजी को कैसे मुह दिखाऊँगा?”

अमूल्य अपनी जगह पर जाकर बैठ गया। पहाड़े की रटाई बंद हुई। प्रसन्न ने हुक्म दिया, “अब बुडिकिया<sup>१</sup> की पढाई होगी।”

आदेश देकर वह भवतारण के पास आ गया। बोला, “भई, लड़कों

<sup>१</sup> कौड़ियों का पहाड़ा। पहले यह भी पढ़ना पड़ता था।

की क्या बात कह रहे थे ?”

तिरछी हँसी हँसकर भवतारण बोला, “ऐसा कर सकता हूँ कि कमरा-वरामदा सब भर जाय और आगन में लडको को बिठाना पड़े।”

प्रसन्न ने उसके हाथ पकड़ लिये, बोला, “तुम ऐसा कर सकते हो। तुम्हारी बुद्धि बड़ी विलक्षण है।”

भवतारण ने धीरे-धीरे हाथ छुड़ा लिया। फिर गभीर लहजे में बोला, “बुद्धि है और सभव भी है। पर टाल रहा हूँ कि पहले ही सूचिकाभरण का प्रयोग अच्छा नहीं लगता।”

मृतप्राय रोगी को अंतिम प्रयाम के रूप में सूचिकाभरण देने का नियम है। पर पाठशाला के प्रसंग में इसका अर्थ क्या है, यह प्रसन्न की समझ में नहीं आ रहा था। पूछने का भी मौका नहीं मिला। इद्राणी टहलकर लोट रही थी। प्रसन्न सीढ़ी चढ़कर यथारीति गुरु की चौकी पर बैठ गया और भवतारण आगे बढ़कर स्वागत करने गया, बोला, “आज माजी, बहुत देर हो गई, धूप चढ़ आई।”

इद्राणी बोली, “आज चलते-चलते उम बुनोपाडा (जगली टोला) तक चली गई थी। वे बड़े अच्छे लोग हैं। बड़ी आवभगत करते हैं। बात-बान में देर हो गई। छाता था, कोई तकलीफ नहीं हुई।”

इद्राणी ने डचोढी पारकर छाता बलवत को थमा दिया था। बलवत काफी पीछे किमीसे बात कर रहा था।

अमला बोली, “चटर्जी महाशय, बलवत कह रहा था कि बुनोपाडा से आगे जो गढ़वाली नहर है, यहातक हमारा इलाका है। क्या यह सच है ?”

भवतारण ने कान तक फैली हुई हँसी हँसकर कहा, “बलवत ने सच ही कहा है। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, जहातक दोनो आखे जाती है, सब आप लोगो का है। इसकी चौहद्दी में कोई आकर कुछ कहे तो सही !”

निर्मल ने उस दिन जो अपमान किया था, वह उसे दिन-रात काटे की तरह चुभ रहा था।

“कोठी का जगल भी तो हमारा ही है ?” अमला ने पूछा ।

भवतारण बोला, “बिल्कुल । वह तो आपकी पक्की मिल्कियत है । ग्रेट कोठीवाले के भाजे टमाससाहब ने पट्टा लिखा था और स्वर्गीय बड़े मालिक राजकिशोर रायसाहब ने उसे खरीदा था ।

“पर उम दिन मैं देख आई कि वे लोग जगल काटकर कमरे-पर-कमरे बनाते चले जा रहे हैं, खेतीबारी कर रहे हैं ।”

भवतारण की वाछे खिल गई । जो बात इद्राणी में कहते-कहते नहीं कह पाया था, हिम्मत नहीं पड़ती थी, अमला ने उसीपर बातचीत के लिए मौका ला दिया ।

भवतारण ने इद्राणी की तरफ कनखियो में देखकर कहा, “इसके लिए एक अधेला भी सरकार में नहीं देते हैं । खाते हैं सो भी मुफ्त ।”

इद्राणी ने आश्चर्य के साथ कहा, “यह क्या ? आप लोग इसपर कुछ नहीं कहते ?”

“मैं पिट्टी-न-पिट्टी का शोरवा ! क्या कह सकता हूँ ? आपमें कहता तो आप भी क्यों सुनती ?”

इद्राणी बोली, “इतने दिनों में यहाँ हूँ, पर कभी कानों में इसकी भनक भी नहीं पड़ी ?”

भवतारण ने कहा, “देखिये न । आप तक को एक दफे भी नहीं पूछा ! तभी तो मैं कहता हूँ, ऐसे कोई जान-बूझकर छाती पर बैठकर मूँग थोड़े ही दलने देता है । न मालूम, उस दुष्ट ने मैंनेजरबाबू को क्या पट्टी पढा रखी है ?”

“मैंनेजर ! कौन मैंनेजर ?”

इद्राणी की भीहे तन गई ।

सहमकर भवतारण बोला, “मैं हरितोषबाबू की बात कह रहा था ।”

इद्राणी ने कहा, “वह मैंनेजर नहीं, अमला और मलय के ताऊ हैं । आप लोगो के बाबूजी के बड़े मित्र हैं । यह उनकी कृपा है कि जायदाद की देखभाल करते हैं ।”

चाल गलत पड़ गई, यह देखकर भवतारण मम्हल गया। बोला, “वह मास्टर पैरों पर गिरकर मिन्नत कर रहा था, इसलिए मैंनेजरबाबू, नहीं-नही हरितोषबाबू, ने भोलेपन में पसीजकर एक कुटिया बनाने की छूट दी थी। पर वह तो यहां रहते नहीं; इससे देखिये, क्या काड कर रखा है। कम-से-कम दस बीघे जमीन बेदखल करके उसपर धान, ईख, सब्जिया पंदा कर रहा है और मनमाने ढंग से बास के जंगलों को उजाड रहा है ?”

इद्राणी निर्मल पर नाराज थी। बोलीं, “मैं यह सब अपनी आखों में देखना चाहती हूँ। जैसा आप कह रहे हैं, अगर वैसा ही है तो कुछ-न-कुछ कार्रवाई करनी पड़ेगी।”

भवतारण ने मन-ही-मन प्रसन्न होकर कहा, “इसमें अब देर नहीं होनी चाहिए। मैं तो कहता हूँ कि कल ही चले। कानून बड़ा बेठब है। एक बार कोई जड जमाकर बैठ जाय, तो उसे हटाना मुश्किल है। बड़ी कीमती जायदाद है, माजी। मैं तो देखता हूँ और अपनेको कोसता हूँ। प्रसन्न आकर रो-पीट रहा था कि लड़को को बहकाकर ले जा रहा है। कहता है कि तुम्हारी जरा-सी पाठशाला है। और उधर खुद जायदाद के सारे रुपये उडा रहा है ?”

इतने में डाक चिड़िया की बोली सुनकर आलोचना बद हो गई। भीम और हाड़ो ने आकर इद्राणी को साष्टांग प्रणाम किया।

अमला बोली, “उस दिन मैंने तुम लोगों को देखा था न ?”

“जीहां, मास्टर के यहां। मास्टर ने हमें भेजा है। वह बाबूजी कहा हैं ?”

इद्राणी ने पूछा, “कौन ?”

“उस दिन जो बटूक लेकर गये थे।”

भीम बोला, “हम लोग सोच रहे थे कि वह शायद चले गए। चिड़िया पकड़ने में बहुत दिन लग गये। जबरदस्ती का काम नहीं है। बहकाकर जाल में फसाना पड़ता है। मर्जी हो तभी फंसती है।”

एकसाथ रस्सी में बधी हुई चार चिड़ियां थी। एक चिड़िया बास

के पिजड़े में अलग थी ।

अमला ने पूछा, “यह अलग क्यों है ?”

भवतारण ने चिड़िया फसाने का तरीका समझा दिया । बोला, “यह पिजड़ेवाली चिड़िया ही तो असली चीज है, दीदी । सीटी देती है, जिसे सुनकर जंगल की चिड़ियां दौड़ पड़ती हैं और वे जाल में फस जाती हैं । इस चिड़िया को बड़ी हिंमत से सिखाया जाता है । यही उनकी रोटी का जरिया है, ये इसे बेच नहीं सकते ।”

हाडो बोला, “बेचना किसीको भी नहीं है । बेचना होता तो हाट में जाता । योही देने आया हूँ ।”

आगन में एकाएक डाक चिड़ियों की आवाज सुनकर अशोक भी निकल आया । हाडो बोला, “यह लीजिये बाबूजी । उस दिन खा-म-खा कीचड़-पानी से पाला पड़ा, कितनी मुसीबत उठानी पड़ी ?”

भवतारण बोला, “खा-म-खा क्यों ? कितनी चिड़िया जो मार लाये ।”

हाडो और भीम ने एक-दूसरे का मुह देखा । भीम बोला, इन्होंने एक भी नहीं मारी ।”

अमला मदिग्ध स्वर में बोली, “तो फिर किसने मारी थी ?”

“मास्टर ने ।”

अमला खिलखिलाकर हँस पड़ी, पर अशोक भेंपा नहीं । बोला, “मान लो बात ऐसी ही हो तो इसमें हमने काँ क्या बात है ! साहित्यिक पुस्तक लिखकर देता है, निजी मंत्री व्याख्यान देने की शिक्षा देता है, शिकारी शिकार कर देता है, चोर और बेईमान लोग बड़ी चोरी की आशा में नेपथ्य में दान देते हैं और भाग्यवान यश लूटते हैं । यही तो जग की रीत है !”

अमला ने भीम की तरफ देखकर प्रश्न किया, “मास्टर शिकार कर लेता है ? पाठशाला के पंडित के ये करतब ! यह कहते क्या हो !”

हँसकर भीम बोला, “अजी यह कोई ऐसा-वैसा मास्टर थोड़े ही है । जिधर से भी बड़क छोड़ता गया, चिड़ियां पके आमों की तरह टप-टप गिरती गईं । मास्टर पहले जन्म में बहेलिये का लडका रहा होगा ।”

भवतारण बोला, “सत्यानाशी है मास्टर। आप नहीं जानते ? जो आदमी मार सकता है, वह दो-चार चिड़िया मारेगा, डममे आश्चर्य की क्या बात है ?”

इद्राणी सिहरकर बोली, “तो क्या वह खूनी है।”

मौका पाकर भवतारण ने निर्मल के विरुद्ध और थोड़ा जहर उगल दिया। बोला, “उसने खून की पूरी तैयारी कर ली थी। किसी ऐं-गैरे की नहीं, राजा के खानदानी गोरो के खून की। जरा समझिये। अदर चं-वच्चे, वमो के ढेर। और यह तो तबकी बात है, जब इसके दूध के दात भी नहीं गिरे थे। अब जहर खोकर गऊ बन गया है। कोई रास्ता न देख-कर पाठशाला खोल दी है। अब गोरो को मारना छोड़कर प्रसन्न की रोटी मारने पर तुल गया है।”

इद्राणी ने जाने के पहले कहा, “तो फिर कल ही उधर चलूगी।”

अमला ने अशोक से कहा, “शिकार खेलने चलना है। बटूक में तेल-बेल डालिये।”

मुस्कराकर अशोक बोला, “तुम तो सब-कुछ जान गई हो। एक शिकार का दर्द अभी मिटा नहीं कि ..”

बीच में ही बात काटकर अमला बोली, “अब की चिड़ियों का नहीं, आदमी का शिकार है, उसीका, जिसमे इतनी दोस्ती कर आये हो।”

अशोक बोला, “पर तुम्हारी बटूक बहुत रद्दी है। जहा निशाना लो, वहा मे बीस हाथ पर गोली लगती है।”

अमला बोली, “तो बीस हाथ दूर पर निशाना कीजियेगा। गोली ठीक बैठेगी।”

“क्यों, गुस्सा किसी तरह कम नहीं हुआ ?”

“कम ! उल्टे बढ़ रहा है। मुना न कि इतने काड करके अब स्कूल की मास्टरी सम्भाली है। बिल्कुल बेकार आदमी है। ऐंमे आदमी को मनुष्य-समाज में नहीं रहना चाहिए।”

भवतारण टोकरे में सामान लेकर घर आ रहा था। बलवंत राय-घराने के लिए पहले ही सौदा ले जा चुका था।

दो परिवारों का सौदा एक साथ लिया जाता है। हा, सारा खर्च राय-एस्टेट का ही है। आज की बात नहीं, मुद्दत से ऐसा होता आ रहा है। मछली तथा तरकारिया खरीदकर भूषणदास की दूकान में रखी जाती है। यहाँ एक अलग टोकरा रहता है। जो कुछ भी खरीदा जाय, उसका कुछ हिस्सा उस टोकरे में डलता जाता है। बलवंत को सारी बातें मालूम है। वह इसपर उच्च नहीं करता। हा, बीच-बीचमें मजाक करता है। इस प्रक्रिया को उठाई-दान<sup>१</sup> कहा जाता है। हाट का इजारेदार प्रत्येक व्यापारी की दूकान से जैसे एक-दो चीजे उठा लेता है, इसी प्रकार इसे उठाई (असल में उठाईगीरी) कहते हैं। कोई तीन कोड़ी मछलिया खरीदी गई, उनमें से पांच-सात भवतारण के टोकरे में पड़ गई। पान खरीदे गए, उनमें से तीन-चार गड़े भवतारण के टोकरे में पहुँच गये। कच्चे केलों के गुच्छे में से दो-चार तोड़कर टोकरे में डाल दिये गए। इस प्रकार हर चीज का हिस्सा लिया गया।

भवतारण का काम ही यह था कि रायबाड़ी में पड़े रहना। पर इद्राणी आदि के आने के बाद उसका घर जाना बिल्कुल ही बंद हो गया था। जाने कब किस बात की ज़रूरत पड़ जाय। मैनेजर के न रहने के कारण उसकी जिम्मेदारी अधिक है। 'मैनेजर' कहने पर इद्राणी आग-बबूला हो जाती हैं। सो भवतारण 'हरितोष' शब्द की रट लगा रहा है। उसने प्रण किया है कि केवल निर्मल का ही नहीं, हरितोष का भी कच्चा चिट्ठा सबके सामने रख देगा। बातचीत में ऐसा जान पड़ता है कि हरितोष

---

<sup>१</sup>बंगला में तोला-दान। यह शब्द तुलादान से मिलता है।

धर्म का ठेकेदार है, पर है वह एक ही घाघ । अकेले ही सबकुछ भोगना चाहता है, किसीको कुछ हिस्सा देना नहीं चाहता । सरकारी नौकर रहा है, इस कारण गोरे साहबों को उल्लू बनाता रहा । चौकस इतना रहता है कि कहीं से पकड़ में नहीं आ सकता । पर भवतारण भी कच्ची गोली का नहीं है, वह उसे शिकस्त देकर ही मानेगा ।

निर्मल ही को देखो । गाव में लौटकर उसने सबसे पहले भवतारण को ही भक्तिपूर्ण प्रणाम किया था । करना तो था ही, आखिर उस युग के बुजुर्गों में एक वही तो रह गया था । भवतारण ने भी मीठी बातें कहकर उसका स्वागत किया ।

×

×

×

“लौट आये बेटा ? आओ, आओ । तुमने कितने कष्ट सहकर अग्रजों को सागर-पार कर दिया । अब तुम्हीं लोग मालिक हो । दोनों हाथ उठाकर तुम्हींको सलाम करेंगे । अच्छा ही हुआ, बेटा । ललमुहे सब हमारे दुश्मन थे, उनकी गिटपिट कुछ भी समझ में नहीं आती थी, सामने पड़ते ही छाती धड़कने लगती थी । अच्छा हुआ, उनसे पीछा छूटा ।”

निर्मल बोला, “एक स्कूल खोल रहा हूँ । कोठी के पाम पड़ती जमीन है, वही कमरे बनाऊंगा ।”

स्कूल की बात सुनकर भवतारण का उत्साह मंद पड़ गया । बोला, “यह क्या, बेटा । राम-राज्य हो गया, तो क्या इसलिए कि सारे केले बदरो के हिस्से में आ जाय ? तुमने देश की इतनी सेवा की, अब तुम्हारी यह दुर्दशा ।”

“दुर्दशा कैसी ?”

“कितने लोग लाटसाहब हुए जा रहे हैं, तुम इसे ठेठ गाव में रहकर मास्टरी करोगे ?”

“मैंने वह विद्या सीखी ही नहीं ।”

भवतारण ने बात का पूरा अर्थ नहीं समझा, सहानुभूति के साथ सिर हिलाकर बाला, “तो समझो कि तुमने कितनी बड़ी गलती की । अगर विद्या

न हो, तो कही कद्र नहीं होती है। तुम जेल गये थे, इसलिए जिले की गद्दी पर थोड़े ही बिठाये जाओगे। शासन का काम चलाने के लिए हर वक्त अंग्रेजी बोलनी पड़ेगी। कोई मामूली बात नहीं है।”

निर्मल बोला, “आपने बिल्कुल ठीक समझा।”

प्रोत्साहन पाकर भवतारण बोला, “आज दो तरह के देशसेवक है। एक तो वे, जो मेज-कुर्सी लगाते हैं, गैस में हवा भरते हैं। हमेशा मे देख रहा हूँ, वे सब इतने ही काम के हैं। दूसरे वे हैं, जो कार में बैठकर व्याख्यान देकर चलते बने। उनके एक-एक शब्द पर पड-पड तालिया बजती हैं। तुम लोग बेटे, कुर्सी-मेज लगानेवालों में हो। हमेशा यही करते रहोगे।”

निर्मल बोला, “चाचाजी, सारी बात किस्मत की है। कुछ भी हो, स्कूल के लिए कुछ जमीन चाहिए, उसीके लिए आया हूँ।”

“अच्छी बात है। मैं हूँ फिर चिन्ता किस बात की। कुछ अटकेगा नहीं।”

निर्मल बोला, “मैनेजरबाबू कैसे आदमी है?”

भवतारण ने उदासी के साथ कहा, “बड़ आदमी है। बड़े सरकारी नौकर थे। सुनता हूँ कि विद्या-बुद्धि में पहाड़ है। बुरे आदमी क्यों होने लगे!”

“तो एक दिन उनसे मिल लूँ? क्या कहते हैं?”

भवतारण बोला, “उनकी माग भी शरीर के ही बराबर बड़ी होगी। मिलने को मिलेगी जरा-सी जंगलवाली जमीन। इससे बेहतर यह है कि खुशी-खुशी हमें पान खाने के लिए कुछ दो, जिससे जो कुछ कहना-सुनना होगा, मैं कह-सुन लूँगा। तुम हाय-हत्या में बचे रहोगे।”

पर निर्मल ने इस अच्छी युक्ति से मुँह फेर लिया। उसने सीधे जाकर हरितोष से भेट की। अच्छे-भले आदमी थे, देखकर श्रद्धा होती है। जंगल काटकर स्कूल खोलने के प्रस्ताव पर वह हँसकर बोले, “तुमने इतनी दूर पर कोठीवाला स्थान क्यों पसंद किया? रायबाड़ी के हाते के अदर कितना बड़ा जंगल है, उसे काट-कूटकर वही स्कूल क्यों नहीं जमाते?”

निर्मल बोला, “रायबाडी में एक स्कूल है। उसे जमींदार का सहारा है। उस स्कूल का बड़ा नाम है। हम लोगों का मामूली आयोजन ठहरा ! ऐसी बड़ी जगह में बैठकर हमें शांति नहीं मिलेगी।”

हरितोष बोले, “ठीक है। प्रसन्न पंडित किसी-किसी दिन सवेरे लडको को लेकर बैठते तो हैं। मैं भूल गया था। अच्छी बात है, तो कोठीवाले स्थान को ही आबाद करो।”

हरितोष को निर्मल का पूर्व इतिहास मालूम था। उन्होंने परिहास में कहा, “फिर कहीं जंगल में बम-पिस्तौल तो नहीं निकलेंगे, ठीक बताओ।”

निर्मल बोला, “हाईड्रोजन बम के युग में हाथ बम किस काम का ? असली चीज तो इन्सान है, जिसने हाईड्रोजन बम बनाया है। आशीर्वाद दीजिये कि हमारे स्कूल से इन्सान निकले।”

“ऐसा इन्सान जो हाईड्रोजन बम बनाये ?”

निर्मल हँसकर बोला, “जी नहीं, ऐसा इन्सान जो हत्या के युग की समाप्ति कर दे।”

बातचीत तो इतनी ही हुई, पर बातों से काम बड़ा बन गया। कारिदा-गिरी में जिसके बाल पक गये थे, वह भवतारण इस अनहोनी बात पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था। और कोई बात नहीं, भवतारण को इस बात का मलाल था कि हरितोष अकेले ही सारा माल डकार गया, किसीको भी एक धेले का हिस्सा नहीं दिया। बहुत प्रयास करने पर भी लेन-देन का कुछ पता नहीं लगा। भवतारण बिल्कुल बौखलाया हुआ था। इन्द्राणी को आज उकसाकर वह बड़ा खुश था। मालकिन अपनी आंखों से देख ले कि किस प्रकार बास, रबर और मिल्कियत की दूसरी चीजों की बरबादी हुई है। देखकर आत्मा जल उठती है या नहीं ? और हरितोष पर कितना विश्वास रह जाता है, यह देखने की बात है। निर्मल को इस बात का मजा तो चखा ही देना है कि घोड़े को लांघकर घास खाने का क्या नतीजा होता है।

बात-बात में शकरीबाला पर मन की बात खुल गई। भवतारण बोला, “कल हम लोग जा रहे हैं।”

शकरी ने उत्सुक होकर पूछा, “क्यों-क्यों?”

भवतारण ने मुस्कराते हुए कहा, “खोज-खबर करने और क्या? सरपरस्त हरितोषवा चला गया न, इसलिए बेचारा बहुत अकेला पड़ गया है।”

थोड़ी देर तक शकरीबाला कुछ सोचती रही। फिर बोली, “लप लेकर मेरे साथ चलना पड़ेगा, अभी।”

“कहां?”

“निर्मल को जरा खबर कर आऊ। मालूम होता है, राय-गृहिणी दश-यज्ञ करने जा रही है। वह भी तो तैयार रहे।”

भवतारण को चिंता हुई कि अच्छी मुसीबत में फस गये। यहाँ तो घर में ही विभीषण है। वह बोला, “क्या तुम दगा मचवाना चाहती हो? दो कौड़ी का मास्टर! क्या खाकर वह राय-एस्टेट से टक्कर लेगा!”

शकरी कड़वे लहजे में बोली, “जगल काटकर उसने एक अच्छी चीज बनाई, इसपर बुरा मानने की क्या बात है? तुम लोग आदमी हो कि क्या! कल मालकिन की दोनों टांगें तोड़ दो, तो मैं समझूँ कि तुम बहादुर हो।”

भवतारण को अफसोस हुआ कि इस तरह घर को ढाहनेवाले विभीषण पर उसने भेद प्रकट कर दिया। एस्टेट का अमला मालकिन की टांग तोड़ने में भाग नहीं ले सकता। इस कारण शकरी जब मछलियों को जिलाकर रखने के लिए गई, भवतारण मौका पाकर तिडी हो गया।

×

×

×

तैयारी पूरी थी, यहाँ तक कि प्रसन्न पंडित भी सबके पीछे धीरे-धीरे चल रहा था। आज रविवार होने के कारण पाठशाला बन्द थी।

दलदलवाली जमीन में अभी दाखिल नहीं हो पाये थे कि भीम दौड़ता-

दौड़ता आया। प्रणाम करने की तो बात दूर रही, उसने इद्राणी की तरफ सिर भी नहीं झुकाया। बोला, “मालकिन, वहां न जायें।”

“क्यों?”

“आप, जायगी तो घरद्वार गिरा देगी, ककड़ी के पौधे तोड़ देगी, भरे खेत पर हल चला देगी।”

इद्राणी की दोनों आंखें जल उठी। बोली “मालूम होता है कि तुमको सारी खबर मिल गई। एस्टेट की खास जमीन पर हम जो चाहे सो करेगी। बाहरवालों को इसपर कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है।”

भीम सहम गया। कुछ नरम पड़ता हुआ बोला, “हम लोगो के जगली-टोला के छोकरे उछल-कूद कर रहे हैं। कहीं वे कुछ कर न बैठें, इसलिए बताने आया था।”

“बताना तो हो गया। अब जाओ, मास्टर को खबर करो कि जिस-जिसको बुलाना चाहे बुला ले।”

“मास्टर जानता क्या है? मैं मास्टर को बताकर नहीं आया।”

लबी डगे भरकर भीम चला गया। भवतारण बोला, “मास्टर यही सब खुराफात करता रहता है। स्कूल तो बहाना मात्र है। बस किसानों को इकट्ठा करके मालिकों के विरुद्ध बहकाता रहता है।”

इद्राणी ने पूछा, “सदर में कितने बरकदाज है?”

“बलवत के अलावा आठ है।”

“बलवत, जाओ, सबको लिवा लाओ। जल्दी की कोई बात नहीं है। तुम लोग धीरे-धीरे आओ।”

मालूम होता था कि आधी आने ही वाली है। भवतारण की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। चुपचाप के काम में सुख नहीं है। पेट भी नहीं भरता। हाथ खुजला रहे हैं। एक बार हुक्म-भर मिल जाय। बरकंदाजों की सहायता से पलक मारते ही फूस का घर तहस-नहस कर दिया जायगा। ककड़ी का खेत और धान के बीजों का खेत गायों से चरवा दिया जायगा। जो दो-चार जगली छोकरे आ भी जाय, तो उनकी बिसात ही

क्या है ! अकेले बलवत की लाठी के सामने हवा हो जायगे । यह मालूम हो रहा है कि सारी बात प्रकट हो गई है । भला शकरीवाला के अलावा और किसने यह भेद दिया होगा ?

निर्मल तिमुहानी तक आकर खड़ा है । और कोई दिखाई नहीं पड़ता । अगर कुछ आदमी बटोर भी लिये हो, तो उन्हें इधर-उधर हटा रखा होगा । अकेला ही खड़ा है । इसमें शक नहीं कि हिम्मतवाला है । वचन से ही वह ऐसा था । देखो, कितना शैतान है कि दिल के जहर को छिपाकर बड़े तपाक से स्वागत कर रहा है—

“आइये, पधारिये ।”

भील के बीच में पगडंडी है । उत्तरी किनारे पर कोठी है । पहले के जमाने के मकान खडहर बन गये थे, पतली-पतली ईंटों का पहाड़ था । सारे नीलखोला में सरपन का जंगल था । कभी पक्का खुला स्थान था, अब वहाँ साप और जंगली सूअरों का अड्डा है । के उड़े साप रास्तों में घूमते रहते हैं । हर साल कितने ही लोग इसके काटे से प्राण खोते हैं । हा, साप भी दस-बीस मारे जाते हैं । छोटी जात के बाघ भी बीच-बीच में आ जाते हैं, जो लोगों की गाय या बकरी मारकर यहाँ तक घसीट लाते हैं ।

जानवरों के अतिरिक्त भूत-प्रेत भी हैं । कहते हैं कि साधुवर नाम का एक किसान मुखिया ग्रैंट कोठीवाले की मार में खून की कै करके मर गया था । पता नहीं, किन लोगों ने घर में आग लगाकर इस जुल्म का बदला लिया था । बूढ़ा ग्रैंट जलकर मर गया था । ये ही लोग भूत-प्रेत बनकर यहाँ विराज रहे हैं । मृत्यु के उस पार लड़ाई कैसी चल रही थी, इसका किसीको ठीक पता नहीं था । हम जब सो जाते हैं, तब उनका दिन शुरू होता है, उसी समय वे चलते-फिरते हैं । रात को नींद खराब करके उधर कौन जाय ? जहाँ तक हो सकता है, लोग दिन में भी उधर का रास्ता बचकर चलते हैं । कभी लोग उधर से आते-जाते थे । कोई बीस साल पहले ।

अशोक बोला, “वह हौज किधर है ? क्या मैं देख सकता हूँ ?”

“कौन-सा होज ?”

“जिसमें आपके हथियार रहते थे।”

“उन दिनों किसीने पुलिस को यह खबर दी थी। ऐसा मालूम होता है कि उनमें से कुछ लोग अब भी मौजूद हैं।”

अशोक बोला, “इस जमाने में सभी यह डींग मारते फिर रहे हैं कि मैंने यह मारा, वह मारा। सभी तीसमारखा बनते हैं, पर आप तो अजीब आदमी हैं !”

फिर कुछ रुककर बोला, “उस दिन मैंने आपको तुम करके सबोधित किया था, उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।”

निर्मल बोला, “आखिर ऐसी क्या बात हुई ? अकस्मात् मैंने क्या अपराध कर डाला ?”

“आपके विषय में बहुत-कुछ मालूम हो गया है।”

“अजी, जान-पहचान हो जाने पर तो आपसे तुम हो जाता है। यही जगत की रीत है। मेरे लिए यह उल्टी गंगा कैसी ?”

“उस दिन रुपये हाथ में पाकर भी लौटा दिये तभी मेरे कान खड़े हुए। समझ गया कि आप कोई दूसरे ही ढंग के आदमी हैं।”

“लौटा इसलिए दिये कि आगे बहुत अधिक मिलेंगे। मेरा लोभ बहुत ज्यादा है।”

“अशोक हँसकर बोला, “क्या ऐसा हमेशा से है ?”

निर्मल ने कहा, “जीहा, बचपन से ही। साध्य में भले ही न हो, साध बहुत ही प्रकांड रही है।”

वे लोग जगली रास्ते के दुर्गम भाग से जा रहे थे। सभी नहीं, तीन जने—अशोक, अमला और निर्मल। अमला अशोक और निर्मल के साथ न जाने कब हो गई थी, पर उसने एक भी बात नहीं कही। चुपचाप चलती रही।

नीलवालों की कोठी गिर गई थी, पर नील सडाने का होज ज्यो-का-त्यो बना था। काटो और दूसरे भांड-भूखांडो के कारण उसका निचला

हिस्सा ढक गया था। वहाँ ताजा बम और बम बनाने के मसाले बरामद हुए थे। हौज के बाहर जैसे-का-तैसा जंगल था, अदर सफाई कर ली गई थी। इस इलाके के लोग दातो तले अगुली दबाकर रह गये थे। रोजवाला कोठी का जंगल एकाएक उनकी आखों में रहस्यपूर्ण हो गया था। आस-पाम के गावों में आ-आकर लोग चुपचाप इस जंगल का दर्शन करने लगे। वे उसे अच्छी तरह नहीं देखते थे। डर था कि कहीं पुलिस की निगाह न पड़ जाय। बेशुमार पुलिस आगई थी। सारे जंगल में उथल-पुथल मच गई थी। जंगली सूअर भील से बास के जंगल की ओर भाग रहे थे। कई दिनों तक खूब धर-पकड़ रही। नौजवानों के मा-बाप डर के मारे हैरान हो रहे थे कि न जाने कब पुलिस घर पर छापा मारे।

निर्मल उन दिनों स्कूली लड़का था। वह भी पकड़ा गया। घोष-टोला में उसका घर था। पिता कभी धनी थे, पर सब-कुछ छोड़-छोड़कर वह कलकत्ते के एक दफ्तर में नौकरी करते थे। खबर पाकर वह आये और जमीन बेचकर, घर-द्वार गिरवी रखकर बहुत दिनों तक मुकदमा लड़ते रहे।

उम्र कम होने तथा ठौर-कुठौर उसके पिता द्वारा पैसे बिखराये जाने के कारण अततो गत्वा निर्मल छोड़ दिया गया, पर अंग्रेज मालिक निर्मल-जैसे बेटे के बाप को अपने यहाँ कैसे रख सकते थे ? उन्होंने उन्हें बरखास्त कर दिया। इसके बाद वह गाव छोड़कर चले गए। अपनी एकमात्र सतान को विषैले ससर्ग से बचाने के लिए वह जाने कहां चले गए, किसीको पता भी न लगा।

सब लोग उनकी बात भूल चुके थे। अचानक कोई छः महीने पहले निर्मल प्रकट हो गया। कहते हैं, गाव छोड़ जाने के बाद पिता का देहात हो गया, मां हाल ही में मरी। मा का क्रिया-कर्म करने के बाद निरकुश होकर सिरमुड़ा निर्मल अपने पुरखों के गाव में लौट आया। उस जमाने का शरारती लड़का अब भलामानुस होकर पाठशाला का पंडित बन गया था।

हौज के पास जाकर निर्मल समझा रहा था, “बैलगाड़ियों में नील भर कर नीलखोला में लाते थे। फिर यहाँ वजन होता था। इसके बाद नील के गट्टे लाकर हौज में डाल देते थे।”

अशोक ने भाककर देखा। ईंटों का बना हुआ छोटा-मोटा तालाब-जैसा था।

निर्मल बोला, “बात यह है कि मैकडो गट्टे सड़ाये जाते थे। भील से पानी लाकर हौज को भरते थे।”

अशोक बोला, “पर यह तो बताइये कि आप लोग हौज में कैसे आते-जाते थे? क्या आप लोग पानी की गगारी से उतरते-चढ़ते थे?”

निर्मल हँसने लगा।

अशोक ने अपनी बात जारी रखते हुये कहा, “भले आदमी के लायक कोई रास्ता मैं नहीं देख रहा हूँ। बताइये, निर्मल बाबू! जाने और निकलने का रास्ता क्या था?”

निर्मल बोला, “जिसने इतनी सारी बातें बताई, उससे यह बात भी मालूम कर लेते।”

इतनी देर से अमला चुप थी। अब बोली, “मंत्र को गुप्त रखने की क्या जरूरत है?”

निर्मल ने प्रशांत आँखों से उसकी ओर देखा। मन-ही-मन सोचने लगा कि जिन बातों की समाप्ति हो चुकी, उनकी रट लगाने से क्या लाभ! थोड़ी देर तक स्तब्ध रहने के बाद उसने दृढ़ कंठ से कहा, “अब उन जनूनी बातों की रोमांटिक तसवीरे पेश करना गैर-जरूरी ही नहीं, बल्कि अनुचित भी है।”

“अनुचित क्यों?”

निर्मल बोला, “उस समय अंग्रेजों का राज्य था। पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए संग्राम करना पड़ा। उस समय सबको सिखाया जा रहा था कि व्यवस्था को भंग करो। सबने सीखा भी यही। अब उल्टी बात कह रहा हूँ—भंग मत करो, निर्माण करो, निर्माण करो, भाई। पर अभ्यास

तो जाता रहा। नई बात किसीको पसंद नहीं आती। अंतरंग मित्र तक अफसोस करते हैं। कहते हैं कि मैं बूढ़ा हो गया हूं और कुछ और ही हो गया हूँ।

×

×

✕

बरकदाचो की टोली आ गई—लाठियों से लैस जैसे एक छोटी-सी सैनिक टुकड़ी। पर भवतारण के चेहरे पर उदासी थी। वह निर्लिप्ता-सा दूर खड़ा था। बात यह थी कि उसे लड़ने को कोई नहीं मिला। इसी बीच स्कूल के लड़कों के साथ इद्राणी की दोस्ती जम गई। प्रसन्न भी उसीमें जुट पड़ा। होड़ चाहे जितनी भी हो, प्रसन्न इस बात से कैसे मुह मोड़ सकता था कि यह दूसरा आदमी लड़कों को लेकर ही यहा पड़ा है। कुशल-मंगल की दो बातें बिना कहे कैसे रह सकता था !

लड़के घुमा-फिराकर दिखा रहे थे। निर्मल ने देखा तो वह जल्दी आ गया। बोला, “इन लड़कों ने खूब बक-बक लगा रखी है। ये लोग सोचते हैं कि सारी दुनिया में इनके स्कूल की तरह कोई स्कूल ही नहीं है। पर आप लोग देख रहे हैं कि मैं कुछ भी नहीं बना पाया, एकदम कुछ नहीं।”

एक कतार में चार फूस के कमरे हैं। कोई खास देखने की बात नहीं है। स्कूल के लड़के तो ऐसी कारीगरी हमेशा दिखलाया करते हैं। खेती के यंत्र, करघा, चरखा, बढई-खाना, अभी खतम किया हुआ स्टूल और तख्त, स्वास्थ्य-संबंधी कुछ चार्ट, कुछ मधुमक्खी के बक्स, उनमें नये छत्ते।

मधुमक्खी के बक्स को खोलकर अतुल बड़े उत्साह में दिखा रहा था कि किस प्रकार मधुमक्खियाँ छत्ते बनाती हैं और शहद जमा होने पर उसे किस तरकीब में लेना पड़ता है।

भवतारण ने अमला को अपनी तरफ करने के लिए कहा, “हैं तो महज एक पाठशाला। इसके लिए इतनी जगह-जमीन की क्या जरूरत ? इतने कमरों का क्या होगा ? जरा पूछो तो, दीदी। एक हाट या बाजार जमाने में भी इतनी जमीन नहीं धिरेगी।

भवतारण को विस्मित करते हुए अमला बोली, “आप ही पूछ लीजिये

न। मुझे क्यों बीच में डालते हैं ?”

भवतारण रुका नहीं। बोला, “मैं कौन होता हूँ। आप सारी एस्टेट को दान करके दे दीजिये, मुझे क्या ? पुराना नौकर ठहरा, इस कारण थोड़ा अखरता है। तभी कहता हूँ।”

निर्मल के कानों यह बात पहुँची तो उसने कहा, “आपके शरीफ महल्लो में जो लोग खारिज हैं, यानी जिन्हें आपने उस दिन भूत-प्रेत कहा, वे आकर जुट रहे हैं। वे कपड़ा बुनेंगे, लकड़ी, बेत, लोहे का काम करेंगे। और क्या सिखाया जायगा, अभी तक तय नहीं कर पाया। इतने कामों में जमीन अधिक तो लगेगी ही। पानी पड़ने में पहले ही कमरों का प्रबन्ध करना पड़ेगा। उस समय किसी चीज को बाहर रखना सम्भव न होगा। इसीलिए मैनेजर बाबू से बास वगैरा मांगा था।”

करघाघर में वच्चो ने इद्राणी को घेर रखा था। भवतारण ने उस ओर ताककर कहा, “मैनेजर नहीं, हरिनोषवावू।”

निर्मल बोला, “जितना बहुत जरूरी है, उसमें एक कण भी ज्यादा नहीं लूंगा। खर तो गाय-भैंस खाकर या रौद-रादकर खराब कर देते हैं। सूख जाता है, बरसात के पानी में सड़ जाता है। पर यहाँ कमरों को छाने के काम आ रहा है। घानीघर, लुहारघर, गोशाला अभी तीनों बनी बाकी है। एक बिजलीघर भी बनाना है। मैं लड़कों को बिजली के बारे में शिक्षा दूंगा, पर इस साल शायद हो न सके।”

भवतारण ने व्यंग में कहा, “समझ गया।”

अशोक ने शरारत करते हुए कहा, “भला क्या समझे, चटर्जी महाशय ?”

“छोटे मुह बड़ी बात। यह हसिया तोड़कर करताल बनायेंगे। किसानों के लड़के विद्यासागर नहीं बनेंगे।”

अतुल करघाघर में समझा रहा था कि किस प्रकार रस्सी खींचकर ढरकी चलाई जाती है। निर्मल दौड़कर आ गया। बोला, “चलाओ मत। सूत टूट जायगा।”

प्रसन्न बोला, “दो करघे खुले में पड़े हैं। कोई बन्दोबस्त करो, नहीं

तो नास हो जायगा ।”

निर्मल ने कहा, “इसीलिए तो रुमरे बढ़ाने को छटपटा रहा हूँ। उधर चटर्जी महाशय गालियो की बौछार कर रहे हैं।”

फिर इन्द्राणी से बोला, ‘लीजिये हरा नारियल।’

अमला बोली, “आज फिर ?”

निर्मल ने धीरे-से कहा, “इसी तरह कुछ बिक जाता है, जैसे उस दिन बिका था।”

इन्द्राणी ने कहा, “समय-बेसमय या जहा-तहा मैं थोड़े ही खा सकती हूँ। इतने लोगो को नारियल पिलाने की कोई जरूरत नहीं। लडको की बात सुन रही हूँ। बहुत अच्छा लग रहा है।”

निर्मल बोला, “जरूरत आपको नहीं है, पर मुझे तो है। और चीजे न देखे, इसीमें भलाई है, नहीं तो हँसेगी, इसमें अच्छा है कि हरा नारियल पीकर और ऊचे-ऊचे आदर्शों की बातचीत करके लौट जाय, जैसे हरा नारियल पिलाकर मैंने इन लोगो को भील में लौटा दिया था। यह मेरा पुराना कौशल है।”

इतना कहकर उसने बड़ जोर का कहकहा लगाया। उसके दातो की पकितया मोती की तरह चमक उठी।

अमला बोली, “रुकिये-रुकिये। आपकी हँसी बहुत खराब है। कान के पर्दे फट जाते हैं।”

निर्मल ने भेपकर हँसी रोक दी।

इन्द्राणी बोली, “नहीं जी, तुम्हारी हँसी बड़ी अच्छी है। हँसी की ज्योति से भीतर तक दिखाई पड़ता है। मुझे बड़ी अच्छी लगती है।”

फिर करघे की ओर अगुली दिखाकर बोली, “इसपर धूल क्यों जमी है ?”

“यही तो मुसीबत है।”

“क्या ठीक से नहीं चलता ?”

“आपने ठीक कहा। रुपयों की कमी तो है ही, इससे भी अधिक यह

परेशानी हो रही है कि सीखे हुए लोग नहीं मिलते। गाव का नाम नाति-हाट (जुलाहा-बाजार) है। कभी यहाँ से कितने ही जहाजों में भरकर करघे का बुना कपड़ा बाहर भेजा जाता था, पर अब करघा चलानेवाला एक आदमी भी ढूँढे नहीं मिलता। एक को पकड़ लाया, पर वह बातें तो बहुत लम्बी-चौड़ी करता था, काम पर बैठाने पर मालूम हुआ कि उसमें हमी लोग अच्छे बुनकर है।”

अमला की आँखें चमक उठी। बोली, “क्या आप करघा चलाना जानते हैं?”

“करघा चलाना मुश्किल क्या है? रस्मी खींचने पर ही ढरकी चलती है।”

अतुल ने बात खोल दी। बोला, “आपको मालूम नहीं, निर्मल भैया अच्छे बुनकर है।”

निर्मल ने फटकार बताई, “जाने दो।”

फिर बोला, “कपड़ा-वपड़ा नहीं, अगोड़ा बुन लेता हूँ।”

निर्मल और इद्राणी में बातचीत हो रही थी, इतने में इधर एक षडयंत्र हुआ। अमला बोली, “भई, मुझे दिखाओ न, क्या-क्या बुना गया है!”

वह अतुल का हाथ पकड़कर चुपचाप खिसक गई।

इद्राणी ने पूछा, “कितने लडके हो गये?”

निर्मल बोला, “बहुत। बस यही एक चीज है जिसकी कमी नहीं है। घर से भाग-भागकर लडके आते हैं। मैं बढ़ावा नहीं देता। काम का डोल जम नहीं पा रहा, चलाऊ कैसे?”

“लडके घर में खर्च नहीं देते?” इद्राणी ने पूछा।

“खर्च कहा से दोगे। उल्टे स्कूल से कुछ मिले तो खुश होगे। यह भी समझता हूँ कि देना चाहिए। गरीब देश है। किसान काम का हर्ज करके कैसे लडकों को पढ़ने भेज सकते हैं? अगर हमारी हैसियत हो तो लडकों की आमदनी का कुछ हिस्सा जरूर उनके घर भेजे। पर आमदनी ही कहा है, जो भेजू!”

कहते-कहते उसका चेहरा म्लान हो आया। बोला, “हमने ईख की खेती की। पतले पौधे निकले, सो भी कीड़े पड़ गये। अच्छी तरह पकने के पहले ही काट देना पड़ा। मूखी भील के अन्दर पूरव की ओर धान रोपे, पर भादों में खेत में इतना पानी हो गया कि फसल सड़ गई। बीज खरीदने के लिए भी रुपये नहीं रहे।”

प्रसन्न बहुत व्यथित होकर बोला, “कौन-सा धान रोपा था ?

“कौन जाने, दूसरो में खरीदकर बोया था। जो धान रोपे जाने है, उन्हीमें से कोई-सा होगा।”

“अगर तुम कालाबयरा धान बोते ...”

बीच में ही रोककर निर्मल बोला, “क्या ?”

“तो तुमने नाम भी नहीं सुना ? इसपर चले हो खेती करने ? धान की खेती बाबू भैया का काम नहीं है। कालाबयरा धान की विशेषता यह है कि जब उसके पत्ते सवा या डेढ़ हाथ बढ़ जाते हैं, तो उसे बीजवाले खेत में हटाकर दूसरी जगह रोपा जाता है। बड़ा मजेदार धान है। पानी जितना बढ़ेगा, धान उतना ही बढ़ेगा। कभी डूबेगा नहीं। आठ-दम हाथ पानी में भी इसका सिर ऊंचा रहता है।”

निर्मल बोला, “पंडितजी, आप तो बहुत-कुछ जानते हैं। पढ़े-लिखे बहुत मिलते हैं, पर गुना हुआ आदमी दुर्लभ है।”

उभरी हुई हड्डियोवाले अपने मीने पर हाथ मारकर गर्व के साथ प्रसन्न बोला, “मैं बगला स्कूल का पढ़ा हुआ हूँ, जहाँ दुनिया की सारी बातें सीखनी पड़ती थी। अबकी तरह बाने बनाकर पूछ नहीं लगा दी जाती थी।”

इसके बाद उन्होंने म्लायम जहजे में निर्मल को तसल्ली देते हुए कहा, “मेरे पास आना। मैं कालाबयरा कहीं से ला दूँगा। रोपकर देखना। पानी में डूबने का खतरा नहीं, फलेगा भी अच्छा।”

शुक्ला त्रयोदशी का चाद निकला हुआ था। जंगल पर शांत ज्योत्स्ना खिल रही थी। नीलकरवालों की उजड़ी हुई बस्ती धीरे-धीरे फिर से

आबाद हो रही थी। नई बस्ती बस रही थी। भन्नाया हुआ भवतारण लौटने को कह रहा था, पर इद्राणी उसकी बात सुन ही नहीं रही थी। वह निर्मल के साथ घूम रही थी और सवाल-पर-सवाल करके स्कूल की सारी बातें जान रही थी।”

अमला के खिलखिलाकर हँसने की आवाज आ रही थी। उसके हाथ में एक रंगीन अगोछा था।

निर्मल ने दिखावटी क्रोध से अनुल से कहा, “यह अगोछा किसने निकाल दिया ? तुमने ?”

“आपकी बुनी क्या चीज है, यह उन्होंने देखना चाहा, फिर यह जोड़ा ले लिया। किसी तरह दे नहीं रही हैं।”

निर्मल बोला, “स्कूल की चीज है, आप कैसे ले सकती है ?”

अमला बोली, “मुफ्त में नहीं मिल सकती, यह तो मैंने ककड़ी के मामले में ही देख लिया था। कितनी कीमत है, बता दीजिये।”

“पर सवाल तो यह है कि यह आपके किस काम आयगे ?”

अमला ने परत खोलकर अगोछा दिखलाया। सब हँस पड़े। क्या बुनाई है ! ताने में सूत गायब। बाने में गाठ-पर-गाठ !”

निर्मल कुछ भेपकर बोला, “सूत तो था। काफी था, पर ढरकी की मार से टूट गया। यह मेरी पहली बुनाई थी, उसीको आपने निकाला है।”

अमला बोली, “जो लोग लबी-चौड़ी बातें करते हैं, वे हाथ के काम में उतने ही अनाड़ी होते हैं। लोगो को यह अगोछा दिखाना पड़ेगा। कीमत ले लीजिये और...”

बैग से एक बिल्कुल सफेद रुमाल निकालते हुए बोली, “लीजिये, यह रुमाल घाते में दे रही हूँ।”

निर्मल बोला, “हम लोग ठहरे किसान-मजूर। रुमाल हम लोगों के किस काम आयगा ?”

“अजी, रख लीजिए। आप भी लोगो को दिखाइयेगा।”

निर्मल ने कहा, “दूकानो पर रुमाल बहुत मिलते हैं, उन्हें तो लोग

देखते ही रहते हैं। अंगोछा चाहे जितना खराब हो, मेरे अपने हाथ का बुना है, आपको वह चीज ढूढ़े भी नहीं मिलेगी।”

इंद्राणी बोली, “रूमाल भी उसके काते हुए सूत का बना है और उसने जो साड़ी पहन रखी है, वह भी खादी की है, पर वैसे लगती नहीं।”

“अच्छा !”

निर्मल आश्चर्यचकित होकर रूमाल के कोने को जरा उमेठकर जाचने लगा।

अमला मुस्कराकर बोली, “जरा अपने करघा-मास्टर को बुलाइये। देखें, वह क्या कहते हैं ?”

“कहेगा क्या ! यही कि आप योंही डींग मार रही है, चरखे से इतना महीन सूत निकलता ही नहीं है।”

“बुलाइये तो उन मास्टरसाहब को !”

“आपके मिजाज की हालत देखकर वह सामने आने की हिम्मत ही नहीं करेगा।”

“पर मेरा संदेह यह है कि यहा जो ‘क, ख’...ग पढ़ाता है, वही करघामास्टर है, वही सब-कुछ है।”

निर्मल हँसकर बोला, “और कुछ ! घटा बजानेवाला दफ्तरी, हिसाब करनेवाला क्लर्क, रदा चलानेवाला बड़ई, सभी इस समय एक ही व्यक्ति है। अगर चरखा सिखाने की नौकरी कोई ले ले, मान लीजिये हफ्ते में दो बार, तो दो हो जाय। घर का खाकर बाहर का काम करने के लिए राजी हो, ऐसा कोई आपकी जान-पहचान में है ?”

सब लौटने के लिए तैयार थे। इंद्राणी एकाग्र होकर कुछ सोच रही थी। एकाएक बोली, “पंडितजी ने तो पूजा की, मैं भी सरस्वती की पूजा करूंगी।”

प्रसन्न ने कंधा हिलाकर बड़ी खुशी से समर्थन किया। बोला, “अच्छी बात है, मां के उपयुक्त। मेरी क्या बिसात है ! अगर माताजी की कृपा न होती तो मैं क्या कर पाता !”

इद्राणी बोली, “ढोल पीटकर केवल एक दिन पूजा नहीं, बल्कि रोज़ !”

भवतारण ने सहज रूप में कहा, “जैसी इच्छा ! पर ऐसी जल्दी क्या है ! अभी पूरा साल बाकी है ।”

अशोक मुस्कराकर बोला, “तबतक यह रह चुकीं । चिट्ठी आते ही मैं भाग जाऊंगा । इनको भी साथ लेता जाऊंगा । पिताजी यहाँ आकर सारी व्यवस्था करेंगे । सब लोगो के यहाँ काले पानी में पड़े रहने का कोई अर्थ ही नहीं ।”

इद्राणी बोली, “मेरा भी यही कहना है । शरीर की जैसी दशा है, उसमें जीने का कोई भरोसा नहीं । जो कुछ करना है, मो अभी किया जाय ।”

प्रसन्न बोला, “माताजी का हुक्म हो जाय तो एक बार बाघिन का दूध भी आ जाय । पर पत्रों में तिथि नहीं मिले तो उसका क्या हो ?”

इद्राणी बोली, “सरस्वती की असली पूजा तो विद्या की चर्चा है । एक आदर्श स्कूल बनाऊंगी । निर्मल के पास दृष्टि है, पर काम उस अकेले के बूते का नहीं है ।”

प्रसन्न बोला, “पर इधर विद्या कहा है !”

भवतारण बोला, “बुद्धि के नाम पर भी शून्य है । सबने इस मौके पर देश-सेवा का फायदा उठा लिया, पर यह कुछ कर पाया ? इसमें बुद्धि-बुद्धि नहीं है, योंही बड़ा बना हुआ है । बना हुआ शैतान है ।”

प्रसन्न सचमुच बहुत खुश था । वह सबके अनादर और उपेक्षा के बावजूद स्कूल चलाता आ रहा था । राय-गृहिणी की कृपा में वह बड़ा स्कूल हो जायगा, यह कितनी खुशी की बात थी । वह उत्साह के साथ बोल उठा, “माताजी ने पूजा का बहुत बढ़िया अर्थ लगाया है । क्या करना पड़ेगा, हुक्म दीजिये, कमर कसकर जुट पड़ूंगा । एक बार पुराने ककाल में जादू कर दूंगा ।”

इद्राणी गंभीर लहजे में बोली, “यह आपका ही काम है, पंडितजी । स्वर्गीय बाबूजी ने किस जमाने में पाठशाला की स्थापना की थी, आप अकेले

होकर भी उसका अलख जगाते रहे है।”

सोच-विचारकर भवतारण भी खुश हुआ। स्कूल कितना विकसित होगा, पता नहीं, पर बेदखल जमीन बिना भंभट के कब्जे में आ जायगी, यह कोई बुरी बात नहीं। अगर सब लड़के छोड़-छाड़कर चले आये और सब चाहेगे तो ऐसा होकर रहेगा, तब तो निर्मल के स्कूल में चमगीदड़ों का बसेरा होगा। स्रोत में जो सेवार बहकर आया था, वह फिर बहकर चला जायगा। यही मतलब है तो राय-गृहिणी की बुद्धि की दाद देनी पड़ेगी।

“आपने देखा मांजी, मैंने गलत नहीं कहा था।”

इंद्राणी ने अन्यमनस्क होकर कहा, “चटर्जी महाशय, आप जितना कह रहे थे, उससे यह कही ज्यादा है।”

मौका पाकर भवतारण बोला, “अजी, यह बड़ा चकमेबाज है, चालाकी से दखली अधिकार बना रहा है।”

फिर इस उद्देश्य से कि इंद्राणी के मन की बात का पता तो चले, वह बोला, “आपने कुछ कहा नहीं, चुपचाप लौट रही है, इससे बरकदाज बड़े दुःखी हैं।”

इंद्राणी हँसकर बोली, “जगल साफ कर रहे है, करे न। इस समय छेड़ने पर कही लेने के देने न पड जायं और जगल काटने की मजदूरी भी न देनी पड़े ! आपने ठीक ही कहा, वह बड़ा ही चकमेबाज है।”

भवतारण ने इंद्राणी के चेहरे की तरफ देखा। वह जानना चाहता था कि वह जो क्रह रही है, वह सच है या मजाक। कुछ विश्वास होता है, कुछ नहीं। स्त्री होने पर भी अथाह पानी की मछली है।

: १६ :

प्रसन्न पंडित पढा रहे थे। अमूल्य भीगी विल्ली की तरह मुह बनाये पढ रहा था। पंडित के माथे पर पसीना आ गया था। अतः अमूल्य की परीक्षा हो रही थी।

“यह क्या है ?”

“छोटा उ।”

“तेरा सि-र्-र्-र्।”

हद हो गई। दो घंटे लगातार मेहनत का यह नतीजा !

कुछ रुककर बोला, “तेरा सिर्...र् ! सिर् के अंदर भेजा नहीं, जगदल पत्थर। उस पत्थर को हिलाना मुझ-जैसे बूढ़े के बूढ़े का नहीं है।”

अमूल्य बोला, “पंडितजी, पानी...”

“प्यास तो लगनी ही ठहरी। पूरे ग्यारह दिनों से लगातार ‘अ, आ’ का पैतरा जारी है। लक्ष्मी माता के दिमाग में आया कि बकरे से खेती करेंगी। सो हुक्म का बदा हूँ, हल में जोतकर मिर पीट रहा हूँ।”

छुट्टी लेकर अमूल्य पानी पीने चला गया।

मुख्य शिष्य पुटे तीखी दृष्टि में बाहर ताक रहा था। वह चिल्ला पड़ा, “पंडितजी, वह तो भा-गा।”

“क्या ?”

“उधर ताल कहां ! वह तो सड़क पर जा रहा है।”

पंडित ने देखा कि उसकी बात ठीक थी।

“तुम लोग दौड़कर जाओ। यों न आये, तो टांगकर ले आओ।”

स्कूल से वह इतना निराश हो गया था कि वह भागने के लिए आतुर हो उठा। पर वह जानता था कि रात को भवतारण की तेज निगाह से बचकर भागने की संभावना नहीं है। भागा जा सकता है तो दिन-दहाड़े, सबकी आंखों के सामने। रात को भवतारण और बलवंत और दिन में प्रसन्न

पडित, धरती पर बाघ और पानी में घड़ियाल की तरह है। ये लोग यमपुर पठाकर ही दम लेंगे। वचने का यही आखिरी उपाय है। नदी पार कर मैदान में पहुँचेगा और वहाँ से सीधे स्टेशन। जो भी गाड़ी तैयार होगी, उसीपर चढ़ जायगा। अगर पकड़ा गया या इद्राणी ने नाराज होकर पुलिस में हलिया लिखा दी, तो ज्यादा-से-ज्यादा जेल ही तो हो जायगी। वह इससे किसी प्रकार बुरी न होगी।

सोचा था कि खोज शुरू होने से पहले ही वह नहर पार कर चुका होगा, पर पुटे ने दुश्मनी दिखाई। उसे अपने पैरो पर बहुत विश्वास था। उनके कारण वह कई बार बड़ी-बड़ी विपत्तियों में वच चुका था। इस कारण वह सिर पर पाव रखकर दौड़ रहा था। साथ ही इधर-उधर ताकता भी जा रहा था कि कहीं ओट मिल जाय तो जान बचे। पर पाच-छ. लड़कों की पाच-छः जोड़ी आंखों से वचने लायक ओट कहीं नहीं थी। जुते हुए खेत, किसानों के इक्के-दुक्के मकान, सरपत से ढके मैदान !

वह नदी के किनारे पहुँच गया। संयोग से एक नाव खड़ी थी। पर पानी पर कोई और बेलों के मारे पार पहुँचाना मुश्किल था। कोठीवाला जंगल पास ही था। उसमें घुसने के बाद उसकी जान-में-जान आई। पीछा करनेवाले लौट जाय तब नदी पार करने की बात सोचेगा।—जय मा काली !

वह रंगकर नीलखोला के काटेवाले जंगल में पहुँच गया। अच्छी तरह देखने पर उसे पता चला कि छिपने के लिए इससे भी अच्छी जगह है—पक्का होज। पास जाकर भाँककर देखा तो उसे बड़ी खुशी हुई, मानो उसीकी रक्षा के लिए उसकी सृष्टि हुई हो। वह दीवार पर चढ़ गया। वह इस समय चारों तरफ की जमीन में बहुत ऊँचे पर था।

पर इतने में वह सिहर उठा। होज की आड़ के कारण अबतक पता नहीं चला था कि एक बड़े-से इमली के पेड़ के नीचे बहुत-से लड़के थे। पहले तो उसके पीछे पाच-छः ही दौड़े थे, पर ये तो बीसेक थे और बहुत ही पास थे। कहीं देख तो नहीं लिया इन्होंने ?—जय मां काली !

और बिना कुछ सोचे-समझे अमूल्य होज के अंदर कूद पड़ा।

“कौन है रे ? अरे, यह कौन गिरा ? हम लोगों में से तो कोई नहीं है ?”

निर्मल दौड़ा। उसके पीछे-पीछे कई और दौड़े। पर आसानी से कुछ दिखाई नहीं पड़ा ! अमूल्य ने जहातक बन पड़ा, गुड़ीमुड़ी होकर पत्तों में अपनेको ढक लिया।

“अरे, तू कौन है रे ?” निर्मल ने पूछा।

अमूल्य जिस स्थिति में था, देखकर हंसी आती थी ! खरगोश जब दौड़ते-दौड़ते बेकाबू हो जाता है, तो वह भाड़ी के अंदर मुह घुसाकर चुपचाप पड रहता है। आंखे और मुह बंद। वह किसीको नहीं देख पा रहा है तो उसे भी कोई नहीं देख रहा है, यही उसकी धारणा होती है। अमूल्य की भी वही हालत थी।

निर्मल बोला, “मैंने तुम्हें देख लिया है। बोल, तू कौन है ? ऊपर आ। अरे, काटो के जंगल में तू क्यों छिपा है ?”

फिर भी कोई जवाब नहीं।

केनाराम बोला, “बास लाता हूं। जैसे जंगली सूअर को कोंच-कोंच कर निकाला जाता है, उसी प्रकार उठाऊंगा।”

अमूल्य समझ गया कि चुप रहने से कोई फायदा नहीं। फिर उस दिन निर्मल ने जो सहानुभूति दिखाई थी, उससे उसे कुछ दिलासा मिला था। उसने चेहरा ऊपर को किया।

निर्मल ने पहचानते हुए कहा “अरे, तेरी मडली कबकी चली गई। तू कहा पडा है ?”

“मुझे जाने नहीं दिया।”

“क्यों, बेर चुरानेवाला अध्याय अभी जारी है ?”

अमूल्य मुश्किल से खड़ा हो पाया।

निर्मल बोला, “ऊपर आ जा। डर मत। मैं तुम्हें बांधूंगा नहीं।”

अमूल्य नाराज होकर बोला, “खड़े-खड़े हुक्म देना आसान है। पर

मैं यहां से निकलू कैसे ? कूदते समय मैंने निकलने की बात नहीं सोची थी । फिजूल में भिड़की मत दीजिये, निकालने का ढग करिये ।”

निर्मल ने केनाराम ने कहा, “बास ले आ, गाठदार हो ।”

हौज के नीचे तक बास डाला गया । अमूल्य उसे पकड़कर ऊपर आ गया । उसके शरीर में कही-कही खून निकल आया था, खुजली पैदा करने-वाले पौधे के लगने से कही-कही देह फूल भी गई थी ।

निर्मल बोला, “तू आदमी है कि क्या ? उसमें क्या सोचकर तू कूद पड़ा ?”

अमूल्य ने भेपकर खून पोछा । बोला, “कुछ नहीं बाबू, कुछ नहीं, कांटे से जरा कट गया है ।”

निर्मल बोला, “मैंने ऐसा अहमक नहीं देखा । साप-वाप हो सकता था । तू भागा क्यों ? हुआ क्या ?”

अमूल्य रुआंसा होकर बोला, “मुझे स्कूल में दे दिया था ।”

“अच्छा !”

“कहते हैं—अ-आ, क-ख पढो ।”

निर्मल हँस पड़ा ।

सचमुच डर की बात थी । एक तो स्कूल, उसपर अ-आ, क-ख । ऐसे में प्राणों का मोह किसे रह सकता था !

नीलखोला पारकर वे इमली के पेड़ के नीचे आये । इतने में शोर मचाती हुई पुटे की टुकड़ी आ गई ।

“अरे हम लोगों ने सारा गाव छान डाला और तू यहां ।” पुटे ने अमूल्य का हाथ कसकर पकड़ लिया । फिर बोला, “पंडितजी बेत लेकर फुफकारते फिर रहे हैं । आज तेरी शामत आनेवाली है !”

अमूल्य ने एक ही भटके में हाथ छुड़ा लिया । पुटे ने आखें तरेरकर कहा, “चलेगा नहीं ?”

अमूल्य दौड़कर निर्मल के पास जाकर खड़ा हो गया । उसकी ओर कातर दृष्टि से देखकर बोला, “मैं नहीं जाऊंगा, बाबू ।”

निर्मल बोला, “जबरदस्ती मत करो। अब यह हम लोगो के हाथ में आ गया है। जा नहीं पायगा।”

पुटे की टुकड़ी के एक गड़ेरिया लड़के ने कहा, “बिल्कुल नहीं जायगा ? यह तुम्हारे स्कूल में ही पढ़ेगा, निर्मल भैया।”

अमूल्य ने डरते हुए कहा, “यहा भी स्कूल ! अरे बाप रे बाप !”

अतुल बोला, “बड़े मजे का स्कूल है। यहा पढ़ना नहीं पड़ता है।”

निर्मल बोला, “ये लोग पढ़ते नहीं, महज खेलते हैं। काम-काम में खेल। पढ़ाई-पढ़ाई में खेल। खेलों का कोई और-छोर नहीं।”

दो लड़के चूल्हा खोद रहे थे। अगुली दिखाकर निर्मल बोला, ‘आज वनभोज है। सबको न्यौता है, तुम सब खाकर जाना। हा, कुछ देर होगी। तुम लोग ऐसा करो कि अभी जाओ, फिर खा जाना। क्यों ?”

पुटे की टुकड़ी के सब लड़के बड़ी खुशी में और लड़को में शरीक हो गये।

“अब जाने पर फिर कौन आने देगा ? खा-पीकर जायगे।”

पुटे अकेला ही लौटने लगा।

निर्मल बाला, “क्यों, तू अकेला क्यों जा रहा है ?”

पुटे ने कहा, “मेरे सिर जाने कितने काम हैं। जाकर इमला लिखानी है।”

निर्मल ने कहा, “नहीं, खा-पीकर जाना।”

कधा हिलाकर पुटे बोला, “अजी, वक्त कहा है ? उस जून फिर पाठशाला है। यहा खाने आऊगा तो देर हो जायगी।”

इतना कहकर वह जल्दी-जल्दी चल पड़ा।

निर्मल बोला, “क्या यह बहुत अच्छा लड़का है ?”

“खाक अच्छा ! नेतागिरी करता फिरता है। पंडितजी से चुगली करने गया है। सबको पिटवायगा।”

एक और लड़का बोला, “देख लूंगा बच्चू को। दिमाग बहुत ऊंचा हो गया है।”

निर्मल ने कहा, “छिः-छिः तुम लोग एक साथ पढते हो। ऐसे नहीं कहा करते। पंडितजी मेरी गलती पर तुम लोगों को क्यों मारेगे ?”

एक लड़का अगोछे से सिर पोंछते हुए भीगे कपड़ों में आया।

“क्यों, हो गया नकुल ?” निर्मल ने पूछा।

“भील मे एक भी केउटे साप नहीं है। पानी साफ है। निर्मल भैया, क्या आपने सारी सेवार रख छोडने के लिए कहा है ?”

“हां। सूख जाने पर मिट्टी से थोप देगे। बडी अच्छी खाद होती है। दुनिया मे कोई भी चीज बेकार नहीं होती, फेकी नहीं जाती।”

नकुल बोला, “सेवार तो जाती रही। अब कोई और सीगी मछलिया लावे की तरह फडफडा रही हैं। चील और मछली मारनेवाली माछरागा चिड़ियां भपट्टे से शिकार मारकर पेडो पर बैठ रही है।”

निर्मल बोला, “क्या तू जाल डालकर नाव चला सकता है ?”

अमूल्य तडाक से कूद पडा। बोला, “यह काम मै कर सकता हू। केले के तीन पौधो की डोंगी बना दीजिये। फिर देखिये सारी मछलिया पकड-कर ढेर लगा दूगा।”

प्रसन्न रास्ते की तरफ टकटकी लगाकर देख रहा था। न अमूल्य लौटा, न पुटे आदि। इतने प्राणी गये, पर सब गायब ! बड़ी अजीब बात है। जब आख के सामने बुरी मिमाल होती है, तो बड़े-बड़े बिगड़ जाते हैं, फिर ये तो लडके ठहरे। मन बीम से पाठशाला चला रखी है, पर ऐसी मुसीबत में कभी नहीं फसे।

प्रसन्न यह सब सोच ही रहा था कि तभी उसे पुटे दिखाई पड़ा। प्रसन्न व्यग्रता के मारे स्वयं आगे बढ़कर आगन में जाकर खड़ा हो गया। बोला, “क्या हुआ ? तू अकेला ही फुदकता हुआ कैसे आया ?”

पुटे हाफ रहा था। अमूल्य के अलावा साथियों के सम्बन्ध में भी तरह-तरह की शिकायतें थी। सारी बातें यह एक साथ कह देने को उतावला था, इसलिए शब्द ठीक से उसके मुह से नहीं निकलते थे। बोला, “पंडितजी, मैं क्या करूँ ? कोई भी नहीं आया। सब उस जगली पाठशाला में जा जुटे हैं। मुझे भी रोक रहे थे। पर यह मैं कैसे होने देता ? मैं तो अगूठा दिखाकर साफ भाग आया।”

सारी बातें सुनकर प्रसन्न आग-बबूला हो गया। बोला, “चल, मेरे साथ। मालकिन को मारी बातें बतानी पड़ेगी।”

फिर अन्य छात्रों में बोला, “अब पढाई नहीं होगी। अपना-अपना सबक कापी पर स्याही से अच्छी तरह लिखो। बना-बनाकर लिखना। हिज्जे गलत हुए, तो लौटकर चमड़ी उधेड़ दूंगा।”

उत्तेजना के मारे धम-धम पैर रखता हुआ वह पुटे के साथ चला गया।

×

×

×

नये स्कूल की तेजी से तैयारियां हो रही थी। इंद्राणी ने कहा था कि जो कुछ करना है, फौरन करना है। यह केवल कहने की ही बात नहीं थी, स्कूल के पीछे वह पागल हो रही थी। यही उनका स्वभाव था, कोई

बात दिमाग में आई नहीं कि उसे पूरा करके ही दम लेती थी ।

इस बीच बरामदा और पास के दो कमरे खाली किये गए थे । अभी इन्हींमें स्कूल रहेगा । लड़के बढ़ने पर पूरब की ओर के आम-कटहल आदि पेड़ों को काटकर एक लम्बा-सा कमरा बनेगा । उसकी भी पैमाइश हो चुकी थी ।

इंद्राणी सोनेवाली कोठरी में है । वही भवतारण, अशोक, अमला आदि भी मौजूद है । प्रसन्न को देखकर आश्चर्य के साथ इंद्राणी बोली,

“आप असमय में यहाँ कैसे ? क्या पाठशाला बन्द है ?”

प्रसन्न ने नाराज़ होकर कहा, “पाठशाला तो तब चले जब चलने दें !”

उस दिन पंडित ने सहानुभूति में आकर निर्मल को अच्छी-अच्छी बहुत-सी बातें कही थीं, यहाँतक कि कालाबयरा नामक धान के बीज के लिए कई-एक बुजुर्ग किसानों से कह रखा था, पर आज के मामले में उसका मन कड़वा हो गया । विद्या-दान एक व्रत की तरह है, इसके लिए मन का सरल और पवित्र होना जरूरी है । पर जो डम कदर शैतान है, उसे पंडित न बनकर वकील का मुहरिर होना चाहिए ।

प्रसन्न बोला, “जहाँतक बनता है, गड़बड़ी करके लड़कों को बहका ले जाता है, और आज तो माताजी वह लड़कों को दावत दे रहा है । पब मेरी पाठशाला में भला कौन रहने लगा !”

इंद्राणी बोली, “आखिर जो हुआ सो बताइये ।”

“आपके अमूल्यचन्द्र मटक गये हैं ।”

पुटे बोला, “प्यास लगी है, यह कहकर ।”

फर प्रसन्न बोला, “एक दौड़ में वह भील जा पहुँचा । इस इलाके के पानी में उसकी प्यास नहीं बुझती ।”

इंद्राणी अदाज से परिस्थिति समझकर बोलीं, “क्या वह निर्मल के स्कूल में गया ?”

“स्कूल में नहीं ! उसे मछली पकड़ने में लगाया है ।”

अशोक सिहर उठा। बोला, “अरे, वह तो बड़ी भयानक जगह है।”

पुटे ने कहा, “केले की डोगी में चढ़कर जाल फैला रहा है।”

इंद्राणी ने चिल्लाकर पुकारा, “बलवत !”

कोई उत्तर न पाकर भवतारण में बोली, “बलवत को भेजकर अभी अमूल्य को बुलवाइये। सीधे न आये तो जबरदस्ती पकड़ लाये।”

एक क्षण चुप रहकर फिर बोली, “इसमें पहले भी तो वह भागा था?”

“जी हा, आज तीसरी बार है।”

रूखे लहजे में इंद्राणी बोली, “आप उसे स्कूल में रख क्यों नहीं पाते?”

अकारण झिड़की में प्रसन्न अवाक् रह गया। बोला, “मेरा क्या कसूर है? क्या मैं उसे भगा देता हूँ?”

“हां, कमूर आपका ही है। लड़को में पढाई-लिखाई के प्रति प्रेम पैदा हो, आप इसका कोई उपाय करते हैं? केवल बच्चों को गालियाँ देते रहने से काम नहीं बनने का।”

भवतारण बलवत को भेजकर आ गया। बात का अंतिम भाग कान में पड़ा। बोला, “पंडित को डाटकर क्या होगा? लड़का कैसा है, यह भी तो देखिये। इसके किमी पुरखे ने पाठशाला की चौखट पार की हो तो इसका भी दिल लगे, नहीं तो वदर क्या जाने अदरक का स्वाद! वह तो उसे सूघकर फेंक देता है।”

प्रसन्न बोला, “इसपर निर्मल पीछे पड़ा है। दावत देगा, मछली पकड़वायगा, लड़के और बूढ़े एक साथ ही मैदान में खेलेंगे, हर तरह के उल्लूपन को प्रोत्साहन मिलेगा।”

इंद्राणी बोली, “हम उससे अच्छा खिलायेंगे, अधिक खेल करवायेंगे।”

फिर अशोक की ओर देखकर कहा, “लड़के बिना फीस के पढ़ेंगे। सदर महल की सारी पूरब दिशा में स्कूल लगेगा। महल का मैदान खेल का मैदान बनेगा।”

अशोक बोला, “पर चाचीजी, आप धीरे-धीरे बहुत उलझती जा रही

हैं। कलकत्ता लौटने में देर हो जायगी।”

“जिससे देर न हो तुम लोग वही करो। तुम्हारे जैसा काम का आदमी मौजूद है, इसलिए मुझे बड़ा भरोसा है। अपने पिताजी के आ जाने के पहले ही सब ठीक-ठाक कर लो। नये साल के बैसाख में स्कूल शुरू कराकर हम भाग जायेंगे।”

प्रसन्न ने बोली, “चलिये पंडितजी, बैसाख से हम लोगो का हाई स्कूल शुरू होगा। आप आ ही गये हैं तो जरा बैठ जाइये। आपको इस काम में लगाऊंगी।”

प्रसन्न भी रह जाना चाह रहा है। स्कूल के मबध में उत्सुकता थी ही, उसपर बलवत द्वारा गिरफ्तार करके लाये हुए अमून्य को क्या सजा मिलती है, यह भी अपनी आख से देख जाना चाहता था। जमकर बैठते हुए पुटे से बोला, “पुटीराम, तू जा। लिखना खतम होने पर छुट्टी कर देना।”

इंद्राणी ने भवतारण से प्रश्न किया, “कुर्सी और बेचों का क्या हुआ?”

“तख्ते चीरे जा रहे हैं, आप सुन नहीं रही हैं। जामुन के तीन पेड़ काटे गए हैं। कल तो नहीं, परसो से बढ़ई काम पर लग जायेंगे।”

इंद्राणी बोली, “देर हो जायगी। मैं कहती हूँ, शहर में आर्डर दे आइये। लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठे हैं, काम चटपट होगा। दो पैसे अधिक लग जायेंगे तो क्या, हमें जल्दी से गरज है।”

अमला को उत्साह नहीं था। बोली, “मां, कुर्सी-बेंचों से क्या होगा? लड़के कहां हैं जो पढ़ेंगे?”

भवतारण बोला, “अगर मांजी की आज्ञा हो जाय, तो पलक मारते ही गाव के सभी लड़कों को बटोर-बटारकर ला सकता हूँ। खर्च बहुत मामूली होगा, बहुत मामूली।”

इंद्राणी ने भवतारण की ओर विचित्र दृष्टि में देखा। फिर जरा कड़े लहजे में बोली, “नहीं, जबरदस्ती से नहीं। अगर निर्मल लड़कों को खेल से वश में करता है, तो हम उससे डबल ही नहीं, दसगुना खेल करावेंगे। उसके पास है ही क्या! वह क्या खिला सकता है? हम डाक्टरी राय

लेकर अच्छे-से-अच्छा खाना देगे। इन बातों पर देश में और विदेश में बहुत-से लोग साच रहे हैं। वे शिक्षा का नया रास्ता बना रहे हैं। निर्मल की बहुत-सी बातें मुझे बड़ी पसन्द आई हैं।”

भवतारण ने फौरन कहा, “बारह घाट का पानी पी चुका है, सो दो-चार अच्छी बातें भी याद कर ली हैं। आपके सामने उन्हींका छौं लगाकर तीसमारखां बन रहा है। इतनी-सी उम्र से मैं उसे देख रहा हूँ।”

इन्द्राणी बोली, “अखबारों में अच्छे शिक्षक का विज्ञापन दिया जाय। किसी शिक्षा-विशेषज्ञ को हेडमास्टर बनाया जाय। आदर्श स्कूल बनाकर मानूँगी। काम का बीड़ा उठाकर पैसों का मोह नहीं करना है।”

अमला ने कहा, “पर यह जो सुनती हूँ कि एस्टेट की हालत अच्छी नहीं है, सो ?”

लडकी के प्रतिवाद से इन्द्राणी बहुत नाराज हुई। बोली, “तेरे पिताजी इस स्कूल की स्थापना कर गये हैं। उसके बाद न तो गाव में आये, न उन्हें कुछ करने का मौका मिला। पर मन-ही-मन बड़े इच्छुक थे। बातचीत में अक्सर गाव की बात कहा करते थे।”

इन्द्राणी ने इतना कहकर दीवार पर टगी नवकिशोर की तस्वीर देखी। बोली, “उनके काम में उनकी एस्टेट की कुछ आमदनी लग गई तो क्या ? तातिहाट का बहुत-कुछ लेकर खाया है। तातिहाट के लडके कुछ पाये, तो उसपर मुह भारी करने से कैसे काम चलेगा ?”

पुटे ने इस बीच स्कूल की छुट्टी कर दी थी और मलय आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया था। उसकी मूर्ति देखते ही भगड़े का वातावरण दूर हो गया। इन्द्राणी हँस पड़ी।

“अरे वाह ! हाथ में स्याही, मुह में स्याही ! मलयवाबू बहुत पढ़कर आये हैं। अच्छा वे लोग भी तो आ गये।”

बलवन्त अमूल्य का हाथ पकड़कर उसे जैसे हवाई जहाज में उड़ाकर लाया था। प्रसन्न बोला, “देखिये माताजी, यह स्कूल से आये हैं ! वैसा सुन्दर स्कूल रहते मेरी पढ़ाई क्यों पसन्द आने लगी ?”

पानी और कीचड़ से लथपथ चेहरा देखते ही बनता था पर इन्द्राणी को क्रोध नहीं था। वह हँसकर बोली, “अच्छा रहा, एक स्याही पोतकर आया, दूसरा कीचड़ पोतकर। जल्दी से नहलकर आओ। ज्यादा बात न कर।”

मलय चला गया, पर अमूल्य अडियल टट्टू की तरह खड़ा रहा।

इन्द्राणी डपटकर बोली, “जा, तू भी जा।”

दो कदम चलकर ठिठकते हुए अमूल्य बोला, “मालकिन कुछ भी हो, मैं पंडितजी की पाठशाला में नहीं जाऊंगा—चाहे आप मार ही क्यों न डालें।”

उसकी आंखें जल उठी। प्रसन्न सिहर उठा।

थोड़ी देरमें अतुल मछलियों का आधा थैला लेकर आया।

“ये अमूल्य की मछलिया हैं। इसने बड़ी मुसीबत से पकड़ी है। आपने इसे भोजन करने नहीं दिया, इसलिए निर्मल भैया ने इसकी मछलिया भेज दी है।”

इन्द्राणी ने लाल-पीली होकर कहा, “तुम लोगो के स्कूल में यही सब होता है? छोटे-छोटे लड़के भील की कीच में फसकर डूब जाते तो?”

प्रसन्न बोला, “जरा देखिये माताजी, पता नहीं लोग क्यों इसे अपने लड़के सौंप आते हैं?”

भवतारण ने मुह बनाकर कहा, “अपने लड़के कौन सौंपने जाता है? जिनका कहीं कोई नहीं है, वे ही वहां पहुंचते हैं। न मा का पता, न बाप का ठिकाना, ऐसे लोग।”

इन्द्राणी अतुल से बोली, “मछलियां लौटा ले जाओ। अपने मास्टर से कहना कि डोंगी पर चढ़ाकर लड़कों को बीच भील में भेजना मुझे पसंद नहीं। अमूल्य नहाकर वनभोज में जायगा।”

अतुल खुश-खुश चला गया। अमूल्य की कर्म-कुशलता के कारण इस थोड़े-से अरसे में ही वह उसका अनुरागी बन गया था।

भवतारण बोला, “फिर उसे वहां भेजेगी, माजी? सोहबत बड़ी

खराब है। आपने देखा न।”

इद्राणी बोली, “आप ही ने तो कहा कि जिनके मा-बाप का पता नहीं है, उनका वही ठिकाना है।”

भवतारण बगले भाककर रह गया। फिर बोला, “पर आपने तो इस छोकरे को लड़के की तरह माना है।”

इद्राणी बोली, “तो दो लड़के दो जगह पढ़ने जायगे। देखती हूँ कि पंडितजी स्याही पोतकर कितना मिखाते हैं और निर्मल कीचड़ पोतकर कितना सिखाता है।”

प्रमन्न ने शांति की मास ली।

“यही ठीक रहेगा, माताजी, मुझे भी जरा शांति मिले। मैं तो मानता हूँ कि मरखने-बैल से सूनी सार भली। वह मजे में वहाँ मछली पकड़े, हल जोते और रूदा चलाये।”

भवतारण ने उसका अनुमोदन करते हुए कहा, “जिसकी जैसी इच्छा। अमूल्य इस जन्म में ‘क-ख’ नहीं पहचानने का। पूनो का चाद देखकर इमली तिरछी हो गई, और सीप ने होना चाहा शख। पर जो जिस लायक नहीं, वह वैसा कैसे हो सकता है!”

: १८ :

शाम का समय था। सूर्य की तेज धूप आगन में पड़ रही थी। फिर भी निर्मल ध्यान लगाकर पुस्तक पढ़ रहा था। अमूल्य ने एक चादर लाकर छप्पर के बास में टाग दी।

निर्मल की दृष्टि पड़ी तो हँसकर बोला, “यह क्या हो रहा है ?”

वह बोला, “तुम अच्छे खासे आदमी हो, निर्मल भैया। चैत की धूप ले रहे हो। बदन जल रहा है, पर तुम्हें होंग ही नहीं।”

निर्मल ने कहा, “पुस्तक बड़ी बुरी चीज है। एक दफे रम गये कि फिर कुछ भी पता नहीं रहता।”

अमूल्य बोला, “कौन-सी पुस्तक है ? क्या है इसमें ?”

“यह इतिहास है। देश-विदेश की बड़ी मजेदार बातें हैं। अभी थोड़ी देर बाद तुम लोग पढोगे। आज इसी पुस्तक की कहानी होगी।”

अमूल्य कुछ देर चुप रहा। फिर जैसे कोई लज्जा की बात कह रहा हो, बोला, “निर्मल भैया, मैं किताब पढ़ूँगा।”

निर्मल हाथ पकड़कर उसे पास ले आया। चादर टागते समय सिर पर कूड़ा गिर पड़ा था, उसे प्रेमपूर्वक साफ करते हुए हँसकर बोला, “सचमुच पढने की इच्छा है ? पर यह इच्छा कबतक रहेगी ?”

“बराबर रहेगी। इसमें कठिनाई क्या है ? भैया यह तो बताओ कि कौन-सा काम ऐसा है जो मैं नहीं कर सकता ?”

निर्मल हँसकर बोला, “तुम सब-कुछ कर सकते हो—बुरे काम भी और अच्छे भी।”

एकाएक अमूल्य उत्तेजित हो गया। बोला, “प्रसन्न पंडित बुराई करता फिर रहा है, भवतारण भी। कहते हैं कि पढ़ाई-लिखाई मेरे बस की नहीं। पंडित पाठशाला से घर लौटेगा तो ईंट मारकर उसका सिर फोड़ दूँगा।”

अमूल्य का बाया हाथ पीछे छिपा था। निर्मल ने देखा तो पूछा, “हाथ में क्या है ?”

अमूल्य विना दिखाये हट गया।

निर्मल ने जोर में हाथ सामने किया तो देखता क्या है कि वर्णमाला की पहली पोथी है।

हँसकर बोला, “अच्छा, किताब भी ले आये ? मैं तो समझा था कि ईंट है। यह अच्छा है। पढ़-लिख जाओगे, तो ईंट में कहीं अधिक दूसरो को हरा पाओगे। फिर तो लोग सिर उठाकर बात भी नहीं कर सकेंगे। ये हरफ तो समझो, दीवारें हैं। इन्हें पार करके कहानी, इतिहास, नाटक की तरह-तरह की किताबें हैं। उनके पढ़ने में बड़ा मजा आता है।”

अमूल्य अभी तक मन-ही-मन सोचा करता था कि नई मडली बनाने में पुस्तक पढ़ने के अलावा हिसाब की भी जानकारी जरूरी है। महज रुपयों में मडली नहीं बनती। हिमाव का ज्ञान न हो तो दूसरे ठग लेंगे। लछमन को ही देखो, हिमाव में पक्का है। छ रुपयें महीने पगार हो, तो बीस दिन का क्या होगा, खड़े-खड़े बता सकता है। लेनदार को एक पैसा कम ही दे सकता है, ज्यादा नहीं। मडली बनाना कोई हँसी-खेल नहीं है।

मडली की बात याद करके अमूल्य कुछ-कुछ अन्यमनस्क रहता था। उसने अच्छी-अच्छी मडलियों के नाम सुने थे, पर गाने नहीं। उन दिनों एक ‘बहू मास्टर की मडली’ थी। बहू मास्टर बड़ा अजीब-सा नाम था। इसमें यह न समझा जाय कि मडली की मास्टर कोई बहू थी। मथुरा शा की बात भी लोग खूब कहते थे, पर अब उनकी मडली खतम हो चुकी थी। कितनी अच्छी-अच्छी मडलियां उठ गईं। मडली क्यों नहीं टिकती, कौन जाने ? सदर के सरकारी मेले में इस बार एक प्रसिद्ध मडली आई थी। खबर सुनकर अमूल्य गीत सुनने की आशा में सात कोस रास्ता पैदल चलकर गया, पर पहुंचने पर मालूम हुआ कि मडली गाना खतमकर पिछले दिन जा चुकी है।

पढ़-लिखकर वह एक मडली बनायगा—छोटी-मोटी नहीं, मथुरा शा या बहू मास्टर की तरह। दूर-दूर नाम फैल जायगा। 'किसकी मडली है?' लोग कहेंगे, 'अमूल्य अधिकारी की।' कितनी खातिर होगी! मडली का स्वामी बनने के बाद वह ऐक्टिंग नहीं करेगा। तमगो की माला गले में डालकर बस एक या दो गाने गा दिया करेगा। उसीमें लोग धन्य-धन्य कहेंगे। लछमन की तरह वह लोगों के साथ बुरा बर्ताव नहीं करेगा, बल्कि अच्छा बर्ताव करेगा और उनका सुख-दुःख देखकर चलेगा।

पर भरोसा कम है। हरफ कितने है और कितनी डिजाइने है! इतने हरफों ने मिलकर ज्ञान के राज्य को बड़ा मुश्किल बना रखा है। क्या वह वहां पहुंच सकेगा?

वर्ण-माला खोलकर निर्मल बोला, "यह तस्वीर देख रहे हो न, शुरू-वाली। बताओ, यह कौन है?"

कई लड़के पुस्तक पर झुक पड़े।

अतुल बोला, "मैं जानता हूँ, निर्मल भैया। ये ईश्वरचंद्र विद्यामागर है। इन्होंने ही यह पुस्तक लिखी है।"

केनाराम बोला, "विद्यामागर, बाप रे बाप! बड़ी विद्या थी उनके पास।"

निर्मल बोला, "वह विद्या के सागर ही नहीं और बहुत-से गुणों के भी सागर थे। तू नहीं था, मैंने एक बार बहुत देर तक उनकी कहानी सुनाई थी।"

अतुल बोला, "हां, निर्मल भैया, बड़ी अच्छी कहानी थी। बहुत अच्छी लगी।"

नकुल ने बात खोल दी। बोला, "उन कहानियों को लेकर अतुल ने आपका रंग और कूची चुराकर तस्वीर बनाई है।"

निर्मल बोला, "इसमें चोरी की क्या बात है? यहां का जो कुछ है वह जैसे मेरा है, वैसे ही तुम लोगों का है। अपनी चीज लेने पर चोरी नहीं होती।"

फिर अतुल ने बोला, "क्या तस्वीर बनाई है, मुझे दिखाओ देखें?"

अतुल ने सकोच से कहा, “इस समय रहने दीजिये, निर्मल भैया । बहुत ही खराब है, बड़ी रही ।”

वह यह कह ही रहा था कि इतने में नकुल चित्रो को उठा लाया । उसे पता था कि अतुल अपनी ऐमी सपत्ति कहापर रखा करता है ।

निर्मल ने प्रशसापूर्ण दृष्टि से देखकर कहा, “विद्यासागर कुली बनकर छोकरा-बाबू के पीछे-पीछे चल रहे हैं । बहुत मुदर है । कुछ दूरी पर रेल का डिब्बा बनाया, उसमें मालूम होता है कि स्टेशन में आ रहे हैं । पर एक गलती है । घटना रात की है, यह पता लगना चाहिए था । आकाश में चाद या कुछ अधेरा दिखाते ।”

निर्मल की प्रशसा में अतुल का सकोच जाता रहा । उसने दूसरी तस्वीर निकालकर कहा, “इसमें अधेरा, आधी-पानी दिखाया है । देखिये, ‘मा’ कहकर विद्यासागर नदी में कूद पड़े ।”

अमूल्य आश्चर्य के साथ तस्वीर की तरफ देख रहा था । पूछा, “कूद क्यों पड़े ?”

निर्मल ने समझाते हुए कहा, “मा ने घर आने को कहा था । पर ऊपरवाले छुट्टी नहीं दे रहे थे । तब उन्होंने नौकरी छोड़ देनी चाही । अतः छुट्टी मिली तो मौसम बहुत खराब था । नावें चल नहीं रही थी । इस कारण आधी-पानी में तैरकर नदी पार करके आये ।”

अमूल्य का मन विचलित हो उठा । तीन साल पहले की बात थी । वह एक धनी के यहाँ नौकर की भाति रहता था । एक बदमिजाज बाबू उसे बीच-बीच में बुरी तरह पीटता था । एक बार पूजा के दिन उसी बाबू की स्त्री का ‘कानपाशा’ चड़ी-मडप की सीढ़ी के पास पड़ा हुआ मिला । उसने उसे टेंट में खोस लिया । चुराया नहीं था । मालिक एक बड़े भारी ओम्हा को बुला लाया । किसीने कहा कि ओम्हा, जो मंत्र पढ़कर चावल तैयार कर चुके थे, दो-दो चार-चार दाने सबको खिलायेगा । जो चोर है चावल

खाते ही उसके मुह से खून निकलने लगेगा। इसके अलावा मंत्र से कटोरी चलाई जायगी। तुला-राशि में जिसका जन्म है, वह ज्योंही उस मंत्र में पवित्र कटोरी पर हाथ रखेगा, त्योंही वह फौरन तीर की तरह खोई हुई चीज पर जा बैठेगी। यह भी बताया गया कि यह मंत्र कभी भूठा नहीं पड़ता। सुनकर अमूल्य के प्राण सूख गये। जब उत्सव में निवृत्त होकर घर शांत हो गया, तो अमूल्य को मौका मिला। उस दिन बड़े जोर का आधी-पानी था। शौकिया नाटक होनेवाला था, वह न हो सका। मौका पाकर अमूल्य कूदकर नदी पार कर गया, पर वहाव इतना तेज था कि वह एक घाट आगे जाकर कपालीतला के मसान-घाट पर जा पहुँचा। बाहर आकर पता चला कि टेंट की वह चीज पानी में गिर गई। स्टेशन पर आकर देखा तो तीन बजेवाली गाड़ी कुछ ही पहले चली गई। इतनी दौड़ व्यर्थ गई। सात घाटों का पानी पीकर अंत में वह लछमन की मंडली में शामिल हो गया। उसकी माँ नहीं है, इसलिए आधी-पानी में नदी पार करने की कहानी को ढोल पीटकर कौन कहता। अमूल्य ने तो उल्टे उस कहानी को लोगो से छिपाकर रखा था।

नकुल ने एक तस्वीर उठाकर कहा, “क्या वह कंधे पर भंस रखकर जा रहे हैं?”

अनुल ने गुस्से में कहा, “भंस कहा है?”

“यह सींग जो दीख रहा है।”

“अरे, काला कबल ऊँचा होकर सींग की तरह लग रहा है। कबल में आदमी लिपटा है। यह देखो, जरा-सा सिर चमक रहा है। इसे हैजा हो गया है।”

निर्मल ने आगे समझाते हुए कहा, “यह आदमी रास्ते में बेबस पड़ा था। विद्यासागर इतने बड़े पंडित थे, फिर भी एक अनजाने आदमी को कंधे पर उठाकर ले आये। वह मनुष्य को दुखी देखकर पागल हो जाते थे। इसीलिए वह दया के सागर कहलाये।”

अमूल्य बोला, “वह इतने दयालु थे, तो हम लोगों के लिए इतनी मुसी-

बत क्यों कर गये ?”

निर्मल समझ नहीं पाया। मुह उठाकर उसकी ओर ताकने लगा। अमूल्य बोला, “वह अ-आ, क-ख की यह किताब जो बना गये। एक-दो नहीं, इतने सारे हरफ कैसे सीखे जाय ?”

निर्मल ने कहकहा लगाया।

अमूल्य बोला, “इसमे हँसने की क्या बात है ? मुझे तो यह गोरख-धधा मालूम होता है। कुछ सूझता ही नहीं।”

निर्मल बोला, “किसी-न-किसी तरह एक बार इस गोरखधधे में घुस जाओ, फिर बड़ा मजा आयगा। जो नहीं घुस पाये, उन अभागों पर तुम्हें तरस आयगा।”

अमूल्य बोला, “मुझमें तो यह न होगा।”

“क्यों ?”

दुखी होकर कधा हिलाते हुए वह जोर से बोला, “नहीं होगा। मेरे दिमाग में गोबर भरा है।

निर्मल बोला, “गोबर नहीं, गुबरीला कीड़ा होगा। वह तुम्हें काटता रहता है, जिससे तुम छटपटाते रहते हो कि कहा क्या बदमाशी करोगे। विद्यासागर भी बचपन में ऐसे ही थे।”

केनाराम मजाक करते हुए बोला, “तो अमूल्य भी विद्यासागर होगा।”

निर्मल बोला, “आगे चलकर कौन क्या होगा, पहले से यह थोड़ा कहा जा सकता है।”

उसकी निगाह अमूल्य के उतरे हुए चेहरे पर गई। पास खींचकर एक हाथ उसके गले में डालते हुए निर्मल बोला, “विद्यासागर आसमान से नहीं उतरे थे। एक दिन वह भी गाव की पाठशाला के शरारती लड़के थे। तुम सब विद्यासागर बन सकते हो, इसी आशा से मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

वह एक क्षण रुका। फिर भर्राई आवाज़ में बोला, “तुम्हीं लोग देश की आशा हो, नहीं तो कहीं रोशनी की एक रेखा तक नहीं है। तुम बड़े होकर भारतमाता का चेहरा उजला करोगे।”

: १६ :

कई दिनों में वेमौसम की वर्षा हो रही थी। खूब ठंड पड़ रही थी। अगल-बगल दो पलंग थे, जिनपर मच्छरदानी लगी थी। भवतारण मच्छरदानी से बाहर निकलकर ढिबरी जलाकर चिलम भर रहा था। दो फूक में ही खतम हो जाय, ऐसी तबाकू पीने में वर्षा में कुछ काम नहीं बनता। जरा देह तो गरम हो।

वह कश खींचते-खींचते मौज में आ गया। आज शाम को ही तो तबाकू तैयार किया था। बलवत ने गुड मिलाया था। भवतारण ने खड़े होकर हिदायते दी थी। तबाकू के पत्ते कुछ ऐसे ही थे, पर गुड और हुक्के के पानी आदि में वह बड़ा मजेदार बन गया था।

कश खींचते हुए कर्त्तव्यबुद्धि ने जोर मारा।

यह अमूल्य क्या कर रहा है? उसने बगल की मच्छरदानी को जरा ऊंचा कर लिया। ठीक एक तरफ बलवत और दीवार की तरफ अमूल्य। बच्चू खूब काबू में है। बलवत ने अपनी देह की दीवार में उसे घेर रखा है।

उसने ढिबरी बुझा दी। तबाकू तो देर तक चलेगा। फिर मिट्टी का तेल बेकार क्यों जलाया जाय? तेल ज्यादा है भी नहीं। वह नाक और मुह में धुआं छोड़ रहा था। मन और प्राण बड़े खुश थे। उसे बलवत की बात याद आई। बेचारे ने तबाकू की तैयारी में बड़ी मेहनत की थी। उसे कुछ प्रसाद तो मिलना ही चाहिए। उसने पुकारा, “बलवत, ओ बलवत !”

“ऊ !”—मसहरी के अदर में आवाज आई।

“अरे, दम लगायगा।”

“ऊ—हू।”

“ये ले।”

भवतारण ने हुक्का उसकी ओर बढ़ा दिया। बलवत ने मसहरी से

हाथ निकालकर हुक्का पकड़ लिया और कसकर दम लगाया। अघेरे में बार-बार हुक्के की आवाज आ रही थी।

थोड़ी देर में भवतारण को फिर तलब लगी। बोला, “ला, अब मुझे दे दे। एक दम लगाकर सो जाऊ।”

हुक्का उसके सामने आ गया।

अमूल्य की दुर्गति से भवतारण फूला नहीं समाना था। बोला, “शैतान कैसा सो रहा है। दो-दो जने पहरे पर है, डर के मारे करवट भी नहीं लेता।”

बलवत ने कहा, “हा।”

“क्यों और पियेगा?”

उत्साह में बलवत ने कहा, “ह आ-आ।”

“पीकर उधर रख देना।”

हुक्का देकर भवतारण सोने लगा। दूसरी मसहरी के अन्दर में हुक्का पीने का शब्द जोर से उठने लगा। भवतारण को लगा, बलवत पहलवान है, कहीं चिलम न फोड़ डाले। सोचते-सोचते भवतारण की आंख लग गई।

सवेरे बलवत के चिल्लाने पर भवतारण की नींद टूटी। अबकी बार इद्राणी ने बलवत को एक अच्छा-सा विलायती कम्बल दिया था। जाड़ा लग रहा था, इसलिए उसे निकालकर ओढ़ लिया था। उस कीमती कम्बल में एक बड़ा-सा छेद हो गया था।

बलवत तेज हो गया। भवतारण को भकभोरकर बोला, “यह ज़रूर तुम्हारा काम है। हर घड़ी तम्बाकू पीते रहते हो। चिलम की आग से मेरा तो सत्यानाश हो गया।

भवतारण हड़बड़ाकर उठ बैठा। देखा, सचमुच बहुत नुकसान हो गया था।

बलवत बोला, “तुम्हें नया कम्बल खरीदकर देना पड़ेगा। मैं किसी तरह नहीं छोड़ूंगा।”

भवतारण नाराज हो गया। बोला, “क्या चिलम के पैर लगे थे जो

वह तेरी मसहरी में चुपके-चुपके कम्बल जलाने घुस गई ?”

बलवत उसकी बात पर सकपका गया। पर यह हुआ कैसे ?

भवतारण बोला, “कम्बल ओढ़कर पी रहा होगा। उसी समय कम्बल जला होगा। अब दूसरे पर दोष डाल रहा है।”

बलवत चुप, जैसे आसमान से गिरा हो। फिर बोला, “मैं चिलम पी रहा था ?”

“अच्छा, भूल गया। हाथ बढ़ाकर एक बार नहीं, दो-दो बार हुक्का लेकर दम लगाया था।” जरा देर चुप रहकर भवतारण व्यग्र में बोला, “सो-सोकर चिलम उड़ाओ, फिर कहो, याद नहीं आ रहा है !”

बलवत और भी गुस्से में आ गया। मलय बरामदे में दात माज रहा था, शोर सुनकर कमरे में आ गया।

अमूल्य को भी बुरा मालूम हो रहा था। बोला, “तुम लोगों ने यह क्या चे-मे लगा रखी है ! सवेरे के समय जरा आख लगी तो महाभारत कर डाला ! बिना सोये कैसे काम चलेगा ?”

बलवत बोला, “वाह-जी वाह, जरा देखू, यह मुह से बास कैसी आ रही है ? किसने हुक्का लिया था, अब समझ में आया।”

मलय बोला, “देखू सूघकर।”

इतना कहकर वह अमूल्य के पास मुह ले आया। इसके बाद उमने तड़ से उसके गाल पर एक थप्पड़ जमा दिया।

भवतारण बोला, “मा के पेट से निकलते ही सबसे पहले हुक्के पर हाथ पड़ा। कबसे यह चालाकी चल रही है ? ब्राह्मण में चिलम भरवाकर जाने कब से पी रहा है और मुझे कानो-कान खबर ही नहीं हुई !”

भवतारण से इद्राणी से सारी कहानी नमक-मिर्च लगाकर कह दी। अत मे बोला, “पाजी गाय के लिए अलग बाड़ा तय किया, यह बहुत अच्छा रहा। मैं कहता हूँ, इसे घर में ही न रहने दिया जाय। कुछ भी हो, मलय अभी बच्चा है। आख के सामने यह सब अनर्थ होता रहे तो...”

इद्राणी ने गभीर होकर सारी बात सुनी।

“यह रग-ढग अच्छा नहीं है।” जल्दी में भवतारण ने अपनी बात सुधारकर कहा, “पर मलयबाबू की बात अलग है। सोने की थाली में मक्खी नहीं बैठती। अमूल्य के मुँह में तम्बाकू की बाम आते ही देखकर मलयबाबू इतने जोश में आ गये कि आव देखा, न ताव, अमूल्य के गाल पर एक ऐसा थप्पड़ जमाया कि उसे छठी का दूध याद आ गया होगा।”

“मलय ने अमूल्य को मारा ?” इद्राणी ने व्यथा के साथ पूछा।

“जीहा, गंदे काम में उसे बड़ी चिढ़ है।”

इद्राणी बोली, “कहा है मलय ? उसे बुलवाओ।”

भवतारण ने ठंडे पड़कर मलय को बुलवा दिया।

इद्राणी ने पूछा, “क्यों, तैने अमूल्य को मारा ?”

मलय ने गर्व के साथ कहा, “वह तम्बाकू जो पीता है।”

भवतारण ने उसकी बात को बल देते हुए कहा, “वह आदमी नहीं, केउटे साँप का बच्चा है, माजी। छोटा है तो क्या, जहर में भरा है।”

डाकिये के आने के कारण अचानक प्रसंग दब गया। तीन कोस दूर विप्रकोना गाँव में डाकघर है। इससे पहले हाटों में पत्र बाँटे जाते थे, तीन-चार दिनों में एक बार। चिट्ठिया नाम-मात्र की होती थी। एक-एक हाट में चार-पाँच से अधिक नहीं। किसीको चिट्ठियों की परवाह भी नहीं थी। यहाँ के जीवन में चिट्ठिया पुच्छल तारों की तरह बिल्कुल फालतू और गैरजरूरी है।

पर इद्राणी के आने के साथ ही व्यवस्था बदल गई। डाकिया रोज आता था। पिछली शाम तक जो पत्र डाकघर में आते थे, वे सवेरे आठ बजे तक पहुँचा दिये जाते थे। यहाँ की चिट्ठिया पहुँचाकर डाकिया दूर-दूर के गावों में जाता था। लौटते समय दुपहर को यही भोजन करता था। कहना न होगा कि खाना अच्छा होता था। इसपर चवन्नी-दुअन्नी मिलने की भी आशा रहती थी। इन्हीं लाभों के कारण वह रोज तीन कोस रास्ता पारकर यहाँ आता था, यहाँ तक कि पत्र न होने पर भी चक्कर लगा जाता था।

डाकिये को देखकर अशोक दौड़ा आया।

चिट्ठियों का ढेर था। उनमें से वह आग्रह के साथ एक पत्र ले आया।

इद्राणी ने पूछा, “डा० दत्त का है ?”

“नहीं, पिताजी का।”

एक बार पत्र पर दृष्टि डालकर बोला, “डा० दत्त अभी अपना मन स्थिर नहीं कर पाये। लोगों की जाच-पड़ताल कर रहे हैं।”

“तो ? यह बात है—।” इद्राणी ने चिंतित होकर कहा, “तुम वहाँ जाकर दौड़-धूप करोगे ?”

अशोक बोला, “डा० दत्त दौड़-धूप से प्रभावित होनेवाले नहीं है। ऐसा होता तो पिताजी ही कर लेते। उनके पुराने मित्र हैं। मेरा विश्वास है कि चाहे जितनी जाच-पड़ताल कर, कलकत्ते के छात्रों में मुझमें बढ़कर कोई न मिलेगा। हा, बाहर की मैं नहीं कह सकता।”

“क्या हम लोगों के बारे में कुछ लिखा है ?”

अशोक पढ़ने लगा, “एक मौके की ताक में हूँ। कुछ देर होगी। वे परेशान न हों। अगर यह मौका लग गया, तो कलकत्ते में मकान खरीदकर भी खासी रकम बच रहेगी।”

इद्राणी बोली, “पर अब कलकत्ता के मकान के सबंध में विशेष उत्साह नहीं रहा।”

“आप यह क्या कह रही है ?”

“बहुत-सी बाने सोच रही हूँ। कलकत्ता में हमें कौन जानता है ? पर यहाँ पुरखों के समय से समुरजी का खानदान बसा हुआ है। जिस दिन मैंने नाव से धरती पर पैर रखा, लोग कितने खुश हुए थे। लोगों ने कितने ही सवाल किये। यहाँ दिखावे का नहीं, बल्कि अमली प्रेम का स्वाद मिल रहा है।”

अशोक आश्चर्य के साथ बोला, “आप क्या कह रही हैं, चाचीजी ? कहा कलकत्ता और कहा यह पानी और जंगल।”

“नहीं, सोच रही हूँ, लोग यहाँ भी तो रहते ही हैं। फिर हम ही क्यों डरे ?”

दूसरी चिट्ठिया देखी जा रही थी। शिक्षक के लिए दिये गए विज्ञापन के उत्तर में अर्जिया आई थी। एक पत्र को पढ़कर इद्राणी का चेहरा खिल उठा। अशोक के हाथ में उसे देती हुई बोली, “हासि—हामि गागुली का नाम सुना है न ? उसने अर्जी दी है।”

पर अशोक को याद नहीं आया।

“रविवासीय पत्र में जब उसका चित्र निकला था तब मैंने कहा था कि मेरी सहेली है।”

अशोक अर्जी पढ़ रहा था—इद्राणी आनंद के मारे चुप न रह सकी। भवतारण की ओर देखकर बोली, “हामि लीडम विश्वविद्यालय का डिप्लोमा ले आई है। देश-विदेश घूम चुकी है। उसे लिखा था। वह हमारे स्कूल का भार लेने को राजी हो गई है।”

भवतारण दातों की दो पक्तियाँ दिखाते हुए बोला, “यह तो हाथी में खेती कराने जैसी बात हुई। क्या वह इतनी दूर के इस गाँव में आने को तैयार हो गई ?”

इंद्राणी हँसकर बोली, “वह मेरी मित्र हैं न ? बचपन में हम लोगों के बगल के मकान में रहती थी। साथ स्कूल जाया करती थी। वह प्रेम अब भी कायम है। उसे अच्छी सरकारी नौकरी मिल सकती थी, उस लोभ को छोड़कर आ रही है। मैंने लिखा था, एक अच्छा आदमी तलाश कर

दे; उसके आने की बात नहीं लिखी थी। वह स्वयं आना चाह रही है। मैं हूँ, इस कारण आ रही है, नहीं तो उसे कौन बुला पाता ?”

अशोक मुस्कराकर बोला, “आपने भी तो सरकारी नौकरी से दूना वेतन देना कबूल किया है। इतने रुपये और कौन देने लगा ?”

पत्र पढ़कर उसने इद्राणी को दे दिया। बोला, “पर मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि वह एक गलत धारणा लेकर आ रही है। वह समझ रही है कि यहां एक स्कूल चालू है, पर उन्हें तो बिल्कुल शून्य पर इमारत बनानी है।”

“स्कूल है तो।”

“यह स्कूल है। बरामदे में चटाई पर बैठकर कुछलड के गुल-गपाडा करके चले जाते हैं। आपके कहने पर मैंने जाकर ध्यान में सारी बात देखी। तख्ता काले-का-काला पड़ा रहता है। पड़ितजी भूलकर भी उसपर खडिया नहीं छुआते। कापियों का भी यही हाल है। हाजिरी का रजिस्टर भी नहीं है। उनका हिसाब-किताब में कोई वास्ता नहीं।”

भवतारण टिप्पणी करते हुए बोला, “उसके बंगला स्कूल में यह सब नहीं था, यही प्रसन्न का कहना है।”

इद्राणी ने हासि गागुली का पत्र फिर एक बार पढ़ा। अशोक ने ठीक ही कहा था। इस ढंग का स्कूल है, यह जानने पर वह कभी इतना जोश नहीं दिखाती।

फिर बोली, “उसने लिखा है कि तेईस को खाना होगी। मैं लिख दू कि गर्मियों की छुट्टी के बाद आये। इस प्रकार तीन महीने मिल जायेंगे। इस बीच एक ढंग का स्कूल स्थापित कर लिया जाय। बैशाख तक न हो तो न सही। ऐसी जल्दी भी क्या है ?”

अशोक हँसकर बोला, “नहीं, आप लोगों के उद्धार की कोई आशा नहीं। तांतिहाट आक्टोपस (अष्टपाद) की तरह आपको चारों तरफ से बांध रहा है। चाचीजी, मैं तो भागूंगा।”

“चाहने पर भाग थोड़े ही सकते हो। हम गांव के जमींदार हैं।

आख का इशारा कर देगे तो कोई मल्लाह नाव पर सवार नहीं करायेगा। हाईस्कूल बन जाने तक छुट्टी कहा ?”

“पर इतने लडके है कहा जो हाई स्कूल बने ?”

भवतारण तेज होकर बोला, “मै तो यही चिल्ला रहा हू कि माताजी हुक्म दे दे तो लडके कैसे इकट्ठे किये जाते है, दिखा दू।”

इद्राणी शात लहजे मे बोली, “वच्चे जरूर मिल जायगे, आप चिंता न करे। सब इस गाव के ही है। आखिर हमारी ही तो रियाया हैं।”

अशोक ने मदेह से कहा, “इसके अलावा उस मबध में हमे कुछ तजुर्बा भी तो नही है।”

“तजुर्बा योंही नही होता। काम करने मे होता है। आज भी अजियो का ढेर आया। चटपट चार-पाच तजुर्बेकार और विद्वान मास्टर चुन डालो।”

“कई अजिया पढी। इनमे वास्तविक रूप मे काम का आदमी कोई मालूम नही होता। कही काम न मिलने के कारण रोटी के लिए आते जान पडते है।”

इद्राणी कुछ रुखाई के साथ बोली, “पर कुछ तो करना ही है। काम का बीडा उठाकर उसे बीच में छोड देना मेरा स्वभाव नही है। तुम लोग हो, इसलिए सहायता चाहती हू।”

अशोक बोला, “पास ही एक आदमी है, जिसमे स्कूल खडा करने की अद्भुत क्षमता है। आप उसकी सहायता क्यों नही लेती ?”

इद्राणी समझ गई। बोली, “निर्मल की बात कर रहे हो। ऐसी कोई खास शिक्षा-दीक्षा नही है, फिर भी मैंने एक बार कहा था।”

भवतारण बोला, “ऐमे कहने से वह भला क्यों मानने लगा ? टेढा अंगुली से ही घो निकलता है। कहिये कि जगह-जमीन नही दी जायगी। स्कूल यहा ले आ। जरा मे गाव मे लडके दो हिस्सों मे बंटने नही दिये जायंगे। आप जरा जोर से कहिये।”

इद्राणी भौंहे तानकर सोचने लगीं।

कोई आदमी, न आदमजाद । न छात्र, न मास्टर । पर अमूल्य इद्राणी के उठने के बहुत पहले चला आया । इन दिनों उसे स्कूल जाने का ऐसा ही चस्का लग गया था ।

इद्राणी, अशोक और अमला घूम रही थी । बलवत भी था । आज मवेरे इधर का ही दौरा था ।

घूमते-घूमते अतुल मिला । वह बढईखाने के एक कोने में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था । पैरों की आहट पाकर उसने जल्दी में पुस्तक ढक ली ।

“तुम्हारे मास्टरजी कहा हैं ?”

“जगली टोले में गये हैं । रविवार है न, इस कारण रास्तों की सफाई हो रही है । सब वही है ।”

“तुम नहीं गये ?”

अतुल ने व्यथित स्वर में कहा, “जुकाम हुआ है, इससे धूप में नहीं ले गये । बुला लाऊं निर्मल भैया को ?”

इद्राणी ने इस बीच में प्रश्न किया, “तुम लोगो को स्कूल पसंद है ?”

कधा हिलाकर मुस्कराते हुए अतुल ने कहा, “बहुत ही, क्योंकि पढ़ना जो नहीं पड़ता ।”

अमला बोली, “पर तुम तो पढ़ रहे थे ।”

“देखू ।”

इद्राणी ने हाथ में पुस्तक ली । पुस्तक का नाम था, ‘सीता-वनवास’ ।

आश्चर्य के साथ उन्होंने प्रश्न किया, “समझ पाते हो ?”

“क्यों नहीं । कहानी है, कोई पाठ्य-पुस्तक तो है नहीं ।”

इद्राणी न स्नेहपूर्ण कठ से कहा, “दुनिया में ऐसी ही पुस्तकें तो अधिक हैं । पाठ्य-पुस्तकें कितनी हैं ? पढ़ना भी कितने दिन पड़ता है ? अच्छा,

बेटा, मैं बहुत खुश हुई।”

पर अतुल को इतनी बातें सुनने का धैर्य नहीं था। बोला, “आप बैठिये। मैं एक ही दौड़ में निर्मल भैया को बुला लाऊंगा।”

निर्मल के आने पर इंद्राणी बोली, “इधर किसलिए आना हुआ सो सुनो। पहले चिट्ठी पढो, फिर बता रही हूँ।”

“उन्होंने हासि गागुली की चिट्ठी दी। निर्मल ने पढ़कर कहा, “वाह, यह तो बहुत सुंदर है।”

“इंद्राणी बोली, “जबानी तारीफ से क्या होने का! इतनी बड़ी शिक्षाशास्त्री को बुलवा रही हूँ, रुपये-पैसे की जिम्मेदारी ले रही हूँ, पर उसे प्रोत्साहन मिले, कार्य में रुचि बनी रहे, यह सब गांव के लोगों को देखना पड़ेगा।”

निर्मल ने नम्रता के साथ कहा, “आप लोगों के इतने बड़े काम में मैं क्या हाथ बटा पाऊंगा, समझ में नहीं आता। हासिदेवी जिस तरह से जो बातें मिलायेंगी, मैं उन्हें क्या समझूंगा!”

इंद्राणी इस सरल स्वीकृति से खुश हुई। बोली, “कुछ भी हो, तुम हमारे हाई स्कूल में आ जाओ। इस छोटे-से तांतिहाट में दो स्कूलों की जरूरत नहीं है।”

अमला बोली, “नगाड़े के सामने डुंगी। यह क्या तमाशा है?”

निर्मल के चेहरे पर मृदु हँसी दिखाई पड़ी। बोली, “ठीक है। चिट्ठी पढ़कर सचमुच पसीना छूट रहा है। क्या इतना जगल साफ करना व्यर्थ जायगा?”

इंद्राणी बोली, “इसीलिए तो कह रही हूँ। जगल में पड़े रहना नहीं पड़ेगा। चले आओ, अपने लडको के साथ।”

“आप स्कूल में मुझे क्या काम देगी?”

इंद्राणी बोली, “यह सोचकर देखना पड़ेगा। हासि ही आकर बता सकेगी कि तुम्हारी खेतीबारी और कारीगरी का कितना क्या रखा जाय। इतने दिनों से खट रहे हो, तुम्हारी चीजें नहीं भी चले, तो भी मैं बेतन

ठीक-ठीक दूगी।”

“कितना देंगी?”

वाचाल अमला ने उल्टे प्रश्न किया, “आप कितना पाने पर खुश होंगे?”

निर्मल बोला, “मनुष्य के लोभ का तो कोई अंत नहीं। आप लोग रुपयेवाली ठहरों! पहाड़, समुद्र, मन में न जाने क्या सोच रखा है? कहकर फिर धोखा खा जाऊ?”

अशोक बोला, “मैंने हिसाब में देखा कि प्रसन्न पंडित बारह रुपये पाते हैं।”

“बारह में कहीं आदमी की गुजर होती है?”

अमला मुह दबाकर बोली, “तो आपको लाख-दो लाख कौन देगा? जिसकी जितनी विद्या है, उसे उतना ही मिलता है। हासिदेवी दूध से नहाकर घी से मुह धोती है, ऐसा सब लोग कैसे कर सकते हैं?”

इंद्राणी ने बाधा देकर कहा, “नहीं-नहीं, पंडितजी के साथ तुम्हारी तुलना नहीं हो रही है। तुम्हें ज्यादा दूगी। खाली हाथ गांव में आकर अकेले जंगल काटकर इतना सब कर रहे हो?”

निर्मल बोला, “अकेले क्यों? कितने लड़के मेरे साथ लग रहे हैं।”

इंद्राणी बोली, “मैं तुम्हें राजी रखूंगी। न रखू तो दो दिन बाद भागने लगोगे। उससे काम नहीं बनता। तुम्हें पचास दिया करूंगी बशर्ते कि इसी तरह मन लगाकर काम करो।”

आशा से अधिक पाकर निर्मल पालतू कुत्ते की तरह पैर के नीचे लोटने लगेगा, इसी इच्छा से इंद्राणी ने बढ़ाकर कहा था। इसलिए गर्व के साथ निर्मल को देख रही थीं। पर वह चुप था।

“राजी हो?”

“राजी न होना मुश्किल है।”

“फिर?”

“बहुत मेहनत की है। बड़ी कठिनाई से जंगल आदि साफ किया है।”

अबकी बार जरा खीझकर इन्द्राणी बोली, “मेहनत का फल भी तो पा रहे हो। क्या तुम समझते हो कि जंगली पाठशाला चलाकर इतने रुपये हर महीने कमा पाओगे?”

“नही, कभी नहीं” निर्मल ने जोर मे कधा हिलाते हुए कहा, “पचास रुपये तो बहुत है। सारा खर्च उठाकर पाच रुपये भी आ जाय तो चिंता दूर होती।”

यह सब बातचीत चल ही रही थी कि शोर-गुल करते हुए लडके आ गये। काम खतम हुआ था। सफाई हो रही थी, इस कारण सब एक-एक अंगोछा पहने हुए थे। धूप से चेहरा उतरा हुआ था, पर हँसी से उज्ज्वल था।

“निर्मल भैया, बहुत भूख लगी है। एक टोकरा मुरामुरा चाहिए। एकाध मुट्ठी से काम नहीं बनने का।”

“निर्मल बोला, “कौन लोग आये है, जरा देखो तो, कपड़े पहनकर शरौफ बन जाओ।”

वह हँस पड़ा। पर इन्द्राणी नहीं हँसी। बोलीं, “ये लोग यह सब तो करते हैं, पर कुछ पढते-लिखते भी हैं?”

इच्छा होने पर पुस्तक लेकर बैठते हैं। मेरी ओर से किसी तरह का दबाव नहीं है।”

इन्द्राणी बोली, “उस गड़बड़ में भला पुस्तक लेकर बैठने की इच्छा क्यों होने लगी? अमूल्य यहा आता है। एक महीना तो हो चला, ‘अ-आ’ कुछ आया?”

निर्मल ने पुकारा, “अमूल्य?”

अमूल्य सूखा कपड़ा पहनकर आ गया।

निर्मल बोला, “हासि गागुली आ रही हैं, तातिहाट का सौभाग्य है। पढ़कर सुनाओ तो क्या लिख रही हैं।”

अमूल्य शरमाकर पढ़ने लगा, “तेईस चैत्र, मंगलवार को मैं वहां पहु-चूंगी। स्कूल के विषय में तुम्हारा सारा आयोजन उस समय देख सकूंगी।

मैं हमेशा तुम्हें काम करनेवाली समझती हूँ। उस बार कलकत्ते में...”

इंद्राणी ने रोक दिया। बोलीं, “बस-बस। मेरे संबंध में एक पन्ने तक इसी प्रकार की बातें हैं। मुझे जब-तब बनाती रहती है।”

अशोक ने जोश में आकर कहा, “निर्मलबाबू, आप कौन-सा मंत्र जानते हैं? किस शैली से पढ़ाते हैं?”

“पढ़ाता नहीं हूँ। तरह-तरह के खेलों में ही पढ़ाई भी कर लेते हैं।”

“मेरा नमस्कार लीजिये।”

निर्मल संकुचित हो गया।

“सच कह रहा हूँ। मैं कुछ नहीं हूँ। बच्चे ही सीखते हैं। वे बड़े ही अच्छे हैं।”

“हम तो बराबर दूसरी ही बात सुनते आ रहे हैं कि ‘छड़ी पड़े छम-छम, विद्या आवे भ्रम-भ्रम।’”

निर्मल बोला, “सचाई इससे उल्टी है। बच्चों में पढ़ाई के लिए बड़ा आग्रह और कौतूहल होता है। छड़ी से तो वे माटी बन जाते हैं।”

इंद्राणी परम स्नेह से अमूल्य को देख रही थी। अचानक बोल उठीं, “निर्मल, इस अमूल्य से मेरी एक शिकायत है। सवेरे कुछ न खाकर मुझसे मिले बिना चला आया। इसमें पूछो तो, भला क्यों ऐसा करता है?”

निर्मल बोला, “क्यों रे?”

“निर्मल भैया ने सूर्योदय से पहले ही आने को कहा था। यह इतना सवेरे-नहीं उठती।”

इंद्राणी बोली, “एक और शिकायत है। यह मुझसे ‘यह’ ‘वह’ कहता है, मालकिन कहता है, पर किसी तरह ‘मा’ नहीं कहता। इसे ज़रा समझाओ तो।”

“मा क्यों नहीं कहता रे?”

अमूल्य हँस पड़ा, “धत्!”

इंद्राणी ने शिकायत करते हुए कहा, “सुनी तुमने अपने छात्र की बात!”

अमूल्य बोला, “मुझे बड़ी हँसी आती है। बिल्ली ‘म्याऊँ-म्याऊँ’ करती है, वैसा मालूम होता है। किसी तरह जवान पर नहीं आता, क्या करूँ ?”

इतना कहकर वह एक छलांग में भाग गया।

इद्राणी गंभीर हो गई। बोली, “मैं जानती हूँ, वह कुछ दिनों में क्यों भागा-भागा फिरता है। किसी तरह मेरे सामने नहीं आता। क्या मामला हुआ, सुना ?”

निर्मल ने लापरवाही से कहा, “उसने तबाकू पिया था, यही न ?”

“किससे सुना ?”

“चटर्जी महाशय से भेंट हुई थी। उन्होंने बहुत-ही बुरी गालियाँ दीं। निंदा सुनते-सुनते मेरे कान पक गये हैं।”

इद्राणी बोली, “तुम हँस रहे हो ?”

“तो मैं मुह क्यों बनाऊँ ? वह तबाकू तो हमेशा से पीता है। यहाँ आकर थोड़े-ही सीखा है।”

“इतने दिनों में तुम्हारे साथ है। मना नहीं किया ?”

“नहीं, हमारे यहाँ जबरदस्ती नहीं की जाती। मैं उपदेश नहीं देना चाहता। जब बुरा समझेगा तो खुद ही छोड़ देगा।”

“छोड़ेगा भी ?”

“लडके बड़े अच्छे होते हैं। मैं उनमें प्रेम करता हूँ। जो अच्छी और भली बात है, उसपर धीरे-धीरे प्रेम उत्पन्न होगा ही।”

निर्मल ने ये बातें धीरे-धीरे कही। उसके मुह से निकले प्रत्येक शब्द के पीछे विश्वास की दृढ़ता थी। इद्राणी ने विस्मय के साथ उसके मुह की ओर देखा।

निर्मल बोला, “ये लोग बच्चे हैं। गलत काम करेंगे ही। उसमें लज्जा की क्या बात है ? इसपर परेशान होकर बिलबिलाने की क्या जरूरत है ?”

इद्राणी बोली, “मुझे अपनी कोख की सतान मलय को लेकर बड़ी

लज्जा है। इतना-सा लडका, पर अमृत्य को तमाचा मार बैठा। मैं यह सोच भी नहीं पाती, घृणा में मरने की इच्छा होती है।”

निर्मल ने तसल्ली देते हुए कहा, “मलय तो और भी बच्चा है। थोड़ी-सी बात से आप बहुत अधिक विचलित हो जाती है। इसका कारण यह है कि आपको छोटे बच्चों पर आस्था नहीं है। वे निष्पाप हैं। शायद थोड़े-बहुत गुमराह हों, पर उनकी स्वाभाविक गति भलाई की ओर ही है।”

इद्राणी ने कहा, “तुमने अमृत्य की जिम्मेदारी ली है, मलय का बोझ भी तुम्हीं सँहालो।”

कहते-कहते इद्राणी ने उसका हाथ पकड़ लिया। धीरे-धीरे हाथ छुड़ाकर निर्मल बोला, “आप इस खेतिहरो-लकड़हारो-जुलाहों के छप्परवाले स्कूल में अपना लडका देगी? आपके रिश्तेदार क्या कहेंगे?”

इद्राणी बोली, “इसीलिए मैं तुम्हें अपने स्कूल में लाना चाहती हूँ। इतना उद्यम और श्रम! यदि तुम हेड-मास्टरी ले सकते तो मैं हासि को कभी न बुलाती।”

“अच्छा तो है। देश-विदेश घूमकर वह तजुर्वा ला रही है। स्कूल के लिए ऐसे ही व्यक्ति चाहिए। ऐसे लोग दुर्लभ हैं।”

“पर तुम? क्या तुम आ रहे हो?”

“नहीं।”

इद्राणी हैरानी की दृष्टि में ताकती रही। एकाएक कुछ बोल नहीं सकी।

अशोक बोला, “विज्ञान के इस युग में ठक-ठक करके अथवा हाथ-करघे में दो अगोछे बुनकर चतुर्वर्ग की प्राप्ति होगी, यह आप क्यों विश्वास करते हैं? यह तो समय और शक्ति का अपव्यय है। अमला शौकिया सूत कातती है, कालीन में फूल निकालती है। यह उसे भले ही शोभा दे, लेकिन गरीब लड़को का शिल्प है, इस बहाने आपके स्कूल का माल चौगुने दाम पर बाजार में नहीं बिकेगा। फिर चौगुना दाम न मिले तो

आपका काम भी नहीं चलेगा।

निर्मल हँसा।

अशोक ने कहा, “हँसकर उडा देने से काम नहीं चलने का। उत्तर दीजिये।”

निर्मल बोला, “व्यावहारिक रूप से बिना काम किये सही मूल्यांकन नहीं होता। मान लीजिये, लड़के ईख की खेती करते हैं। उस ईख का बाजार में क्या दाम है, यह उतने महत्व की बात नहीं। महत्व की बात यह है कि किसने कितनी ईख काटी, उसका गिनना, मिट्टी की प्रकृति का परिचय पाना, खेती के कारण उनमें आत्मविश्वास का पैदा होना, आनंद मिलना, हिसाब-किताब, प्रकृति पाठ आदि छपी हुई पुस्तकों के नीरस विषय न रहकर जीवन के अंग बन जाते हैं। इसे ‘जीवन-केन्द्रिक’ पाठ्यक्रम कह सकते हैं।”

कहते-कहते वह रुक गया। समझ गया कि उसकी बात व्याख्यान का-सा रूप धारण कर रही है। वह लज्जा से हँस पड़ा। मोती की तरह उसके दात झिलमिला उठे।

अशोक बोला, “शिक्षा के बारे में आप शायद बहुत सोचते हैं।”

निर्मल बोला, “मैं भला क्या जानूँ! देश के शिक्षा-क्षेत्र के नेता ही सोच रहे हैं। यह सब उन्हींकी बाते हैं।”

इन्द्राणी कड़वे लहजे में बोल उठी, “कुल मिलाकर तुम्हारा यह कहन है कि अलग स्कूल चाहिए ही। तुम किसी प्रकार एकेश्वर राज्य नहीं छोड़ोगे।”

अमला ने हँसकर कहा, “जंगली गाव का सियार राजा !”

निर्मल बोला, “मैंने स्कूल का निर्माण प्रतियोगिता की नहीं, सहयोगिता की भावना से किया है। प्रतियोगिता की बात ही आज लोगों के मन में सबसे पहले आती है। हम इसी प्रकार सोचने के अभ्यस्त हो गये हैं। अतः लड़कों को भी इसी ढंग की शिक्षा देते हैं। श्रेणी में एक लड़का दूसरे के कान खींचकर ऊपर जाता है, जीवन में भी।”

इन्द्राणी बोली, “अगर ऐसा है तब तो अलग रहने की कोई बात ही नहीं। नहीं भाई, तुम चाहोगे तो तुम्हारी इच्छानुसार बढईघर करघाघर भी बनवा दूगी। इन दिनों परिपाटी भी ऐसी ही है। फिर तो कोई ऐतराज न होगा।”

कुछ सोचकर निर्मल बोला, “देखिये, देश के ६० फीसदी लडके फूस के छप्परवाले मकानों में रहते हैं। धनिकों की हवेली के कोने में पड़े रहने से कुछ अपमान भने ही हो ले, लाभ तो कुछ भी नहीं होता।”

इन्द्राणी का चेहरा तमतमा गया। अपनंको सम्हालकर शांत कंठ से बोलीं, “कोना क्यों, मैं हवेली का मुख्य भाग ही छोड़ रही हूँ। स्कूल के लिए गांव के कुछ हिस्से की भी लिखा-पढ़ी कर दूगी।”

निर्मल बोला, “रुपये रहने पर सुविधा होती है, पर रुपयो स कहा महत्वपूर्ण जरूरत लोगों की है—ऐसे लोगों की, जिन्हे गांव की नब्ज का पता है। बड़े कष्ट से मा के गहने बेचकर यह सब एकत्र किया है, पर आपने देखा न, करघे पर धूल जमी है और खेती से बीज भी वापस नहीं आते।”

“तब अटक कहा है ? साफ बताओ।”

निर्मल बोला, “माफ कीजिये, काफी हो गया।” अब इन्द्राणी ने ज़िद करते हुए कहा, “नहीं, मैं मुनकर ही मानूगी। न बताओगे तो यहा से हिलूगी भी नहीं।”

निर्मल बोला, “पहले बड़े लोगो के दरवाजे पर फीलखाने में हाथी और घुड़साल में घोड़े रहते थे। अब हवेली में स्कूल की परिपाटी चली। इसका उद्देश्य अमीरी जाहिर करना है। शात होकर विचार कीजिये। वच्चों के कोमल मन छोटी चीज नहीं हैं, हाई स्कूल के बने-बनाये शतरज धरों से हमारा काम नहीं बनने का !”

निर्मल कहता जाता था, पर साथ ही मुस्कराता जाता था। किशोर उम्र में गोरों पर बम डालते समय क्या वह इसी प्रकार मुस्कराता था ?

सारे रास्ते इन्द्राणी ने किसीसे एक शब्द नहीं कहा। उन्होंने हासि को सारी बात बताकर एक पत्र लिखा, कुछ छिपाया नहीं। पत्र का उत्तर भी

आया। इंद्राणी हैं, इस कारण सारी असुविधाओं के बावजूद वह आयगी। अच्छा तो है, जड़ से ही शुरू होगा। वह पहले से निर्दिष्ट तेईस तारोख को ही आ रही है। वैशाख से हाई स्कूल भले ही न जारी हो, कुछ श्रीगणेश तो हो।

×

×

×

हासि गागुली का आना भी एक त्यौहार-सा बन गया। सरस्वती-पूजा से भी अधिक तडक-भडकवाला। इससे पहले तांतिहाट में कोई ऐसी स्त्री नहीं आई थी, जो विलायत हो आई हो। हासि आकर सबसे पहले पाठशाला का मुआयना करनेवाली थी। प्रसन्न पंडित के वे चार गडे छात्र ही नहीं, गांव के सभी और गांव के बाहर के कुछ लड़कों को जुटाने की चेष्टा जारी थी। छोटे-बड़ों की सभा का भी आयोजन था, जिसमें हासि देवी शिक्षा की महिमा पर व्याख्यान देनेवाली थी।

अभी यही तक तय था। हासि आकर आगे जो कुछ कराये।

भवतारण बड़ी आशा बाध रहा था, खूब भाग-दौट भी कर रहा था।

“माजी, कुछ चिंता न कीजिये। हाट में ढिढोरा पिटवा दिया है। सिपाही और बरकदाज छपा हुआ विज्ञापन बाट रहे हैं। सभा में आदमी-ही-आदमी होंगे।”

प्रसन्न बोला, “आप भूस्वामिनी हैं। आपकी खातिर नहीं होगी तो क्या उस आवाजे की खातिर होगी, जिसकी हडिया-तवे का भी पता नहीं? लड़के भुड-के-भुड चले आ रहे हैं। कोठीवाले स्कूल में अब चमगादड़ों का बसेरा होगा।”

भवतारण ने कहा, “सभी तो आपकी रियाया हैं। जो लड़का नहीं भेजेगा, उसपर लगान का मुकदमा दायर किया जायगा। फिर हमारे हरि-तोषबाबू अन्न-कमेटी के सेक्रेटरी हैं। मैं धमका आया हूँ कि लड़का न भेजने पर कपडा और मिट्टी का तेल एकदम बंद हो जायगा।”

इंद्राणी बोलीं, “छिः-छिः, यह सब कहने को आपसे किसने कहा? अपना आदर्श और शिक्षा की उपयोगिता समझाइये, बस उसीसे काम बनेगा।”

चारों तरफ सफाई हुई थी। बरामदे पर देवदार के पत्ते, फूल और केले के पेड़ों के फाटक लगे थे। आगन में बेचो की कतारें। सामने की ओर कुछ कुर्सियां। साफ कपड़े पहने हुए लडके बच्चों पर बैठे थे।

आगन लोगो से ठसाठस भरा था।

हासि इद्राणी के साथ आई। रंग सावला और शरीर भारी। इस बीच और तीन मास्टर भी लाये गए थे। वे भी उपस्थित थे। सबने सम्मान के साथ उठकर हासि देवी का स्वागत किया।

सबसे बड़ी कुर्सी पर हासि को बैठाया गया। इद्राणी उसके बगल में बैठी। प्रसन्न हाथ मल-मलकर 'हे-हे' कर रहा था, "जी मंडम, हैडमास्टर कहिये, हैडपडित कहिये अबतक सभी कुछ मैं ही था। ये तीन साहब, पाच-कौड़ी बाबू, मोहित बाबू और अबुजाक्ष बाबू नये आये हैं। हमारे देहातों की पढाई के ढंग को समझने में इन्हें समय लगेगा। बगला स्कूल में मेरी शिक्षा हुई थी; वहा दुनिया भर की बातें सीखनी पडती थी। यह आज की बात थोड़े ही है! मंडम तब आप पैदा भी नहीं हुई थी। आप विद्या, बुद्धि और आकृति में बड़ी हैं। वैसे आप सब तरह में बड़ी हैं। बस एक ही बात में आप छोटी हैं, वह है उम्र। उसमें बहुत छोटी हैं।"

अमूल्य बहुत लंबा है। कही उसपर निगाह न पड जाय और वह किसी मुसीबत में न फस जाय, इसलिए वह सबके पीछे गुमसुम होकर अपनेको छिपाने की चेष्टा कर रहा था। उसीमें विपत्ति आई; प्रश्नों की पहली भंडी उसीपर लगी।

"खंडे हो जाओ, तुम्हारा नाम क्या है?"

अमूल्य ने भर्राई हुई आवाज में कहा, "अमूल्य।"

"अच्छा, यह बता सकते हो कि रात-दिन कैसे होते हैं?"

प्रसन्न की ओर ताककर हासि बोली, "भूगोल सिखाते हैं न?"

मैंने सुना है कि बंगला स्कूलों में भूगोल और शुभंकरी<sup>१</sup> का ही बोलबाला रहता है।”

प्रसन्न सूखे चेहरे से बोला, “जी हा, सिखाया तो जाता है।”

हासि ने रुखाई के साथ कहा, “फिर सवाल का जवाब क्यों नहीं दे पाते ? इससे आसान प्रश्न और क्या हो सकता है ?”

प्रसन्न ने प्रोत्साहन देते हुए कहा, “बोल-बोल, डरता क्यों है ? सूर्यदेव प्रातःकाल उदय होकर आकाश का फेरा लगाकर सध्या समय अस्त हो जाते हैं। इसीसे दिन होता है। यह सब तो तुम पढ़ चुके हो।”

हासि देवी ने चौककर प्रश्न किया, “यह क्या पड़ितजी ? क्या आप यह पढ़ाते हैं कि सूर्य घूमता है ?”

“सो क्या नहीं घूमता ?”

“जी नहीं, पृथ्वी घूमती है। सूर्य चपचाप खड़ा है। क्या आप बंगला स्कूल में यही सीख आये हैं ? छि-छिः।”

पड़ित ने डरते-डरते कहा, “पर आख से तो ऐसा ही जान पड़ता है।”

हासि उत्तेजित हो उठी, बोली, “आख से आप जो देखते हैं, वह भूट है। आप लड़कों को गलत बात सिखाते आये हैं ?”

फिर इद्राणी में बोली, “पके हुए बाल देखकर पड़िताई दे दी ? यह नहीं देखा कि ये नये भेजों को चबाकर खा रहे हैं ?”

इद्राणी के चेहरे में जाहिर था कि वह बहुत भेप गई है। पड़ित ने कानर स्वर से कहा, “बीस साल से पढ़ा रहा हूँ, मँडम। कुछ अधिक ही समय हो गया होगा, कम नहीं। अच्छी बात है, आपके विलायती मतानुसार पृथ्वी चाहे जितना घूमे ! अब से यही पढ़ाऊंगा। सूर्य न घूमकर पृथ्वी घूमे तो इसमें मेरा क्या बिगड़ता है।”

हासि हँस पड़ी। इसमें मालूम हुआ कि वह हँस सकती है। ऐसी हालत में बिना हँसे कौन रह सकता था ? उसने नये मास्टर्स की ओर

---

<sup>१</sup> हिसाब की पराने ढंग की पस्तक।

देखकर कहा, “इस तरह काम नहीं चलेगा। आप लोग एक काम कीजिये। हर लडके को अलग-अलग जाचकर देखिये कि वह किस वर्ग के योग्य है। उसी तरह वर्ग बनाये जाय। थोड़े दिनों में एक लिखित परीक्षा होगी। मैं प्रश्नपत्र तैयार करूंगी। उसी परीक्षा का नतीजा देखकर पक्की व्यवस्था होगी। पाच-छः वर्गों से काम शुरू हो। क्या राय है?”

नये मास्टरो ने सिर हिलाकर सम्मति दी। इसके सिवा और चारा ही क्या था !

हासि ने इसके बाद कई और लडको में प्रश्न किये। मलय ने सबसे अच्छे उत्तर दिये। निःसंदेह वह बुद्धिमान लडका था। उसमें एक और गुण था। सब घबड़ाये हुए थे, पर वह घबड़ाया नहीं था।

पाठशाला की छुट्टी कर वे लोग विश्राम के लिए चले। शाम को सभा थी। बाहर के आगन में इसी बीच बहुत-से लोग जमा हो चुके थे।

इद्राणी ने देखा कि निर्मल जगले के पास खड़े होकर इतनी देर से देख रहा था। उसे बुलाया नहीं गया था, यो ही आ गया था।

पास जाकर इद्राणी ने रूखाई के साथ कहा, “तुम यहा।”

वह बोला, “बक्स की चाबी अमूल्य के पास है। एकाएक कुछ रुपयों की जरूरत पडी। इसलिए चाबी मागने आया था। आकर खडा हो गया। ऐसी हालत में चाबी तो नहीं माग सकता था।”

इंद्राणी मन-ही-मन सिहर उठी, बोली, “अमूल्य को चाबी दी है? बक्स में कितने रुपये है?”

निर्मल बोला, “हम लोगों के कितने रुपये होंगे? गहने बेचकर हजार रुपये आये थे। उनमें से खर्च करके दो या तीन सौ बचे होंगे। ठीक नहीं मालूम, अमूल्य ही गिन-गिनाकर रखता है।”

“उससे चाबी ले लो।”

निर्मल ने दुःख के साथ कहा, “लेनी तो पड़ेगी। आप उसे जाने ही नहीं दे रही है। आपने जब बडा स्कूल खडा किया है, तो उसे यहां पढना ही पड़ेगा।”

गर्वभरे कंठ से इन्द्राणी बोलीं, “सबको पढ़ाना पड़ेगा, यानी सब खुशी से आयेंगे।”

निर्मल हँसकर बोला, “यह तो देख रहा हूँ। मेरा देहाती स्कूल तो आपने साफ कर दिया। हम लोग बेकार हो गये, काम कुछ नहीं रहा, नहीं तो इतनी देर कहां खड़ा रह सकता था ? पर ये बालक बड़े चंचल हैं। टिका रखना कठिन है। ज़रा देखियेगा। जबरदस्ती में काम नहीं होने का।”

उसी समय प्रसन्न आ गया। जैसे अपमान से सुलग रहा हो; बोला, “सुना आपने, माजी। इतने दिनों से पढ़ा रहा हूँ। उसपर कालापानी-पार की विद्या सीखकर मुह पर फट से कह दिया कि नये भेजो को चवाकर खा रहा हूँ।”

कहते-कहते आंखों में आंसू आ गये। बोला, “भगवान देखते हैं कि मैंने कभी किसीका हित के अलावा अपहित किया हो। यह जो निर्मल छोकरा है, इतना पीछे पड़ा है, इसकी भी मैंने भलाई ही चाही।”

निर्मल भर्राई आवाज में बोला, “हा पंडितजी, हम समझते हैं कि आप सबसे कितना प्रेम करते हैं। आपने जो कालाबयरा बताया था उसका बीज मंगा लिया गया है। अब भील का धान रखने के लिए खलिहान बनाना पड़ेगा। हमारे लड़कों के भात की व्यवस्था हो जायगी।”

इन्द्राणी ने प्रसन्न से कहा, “आप एक बहुत-ही मामूली-सी बात नहीं जानते। मैं तो लज्जा से गड़ गई। जरा सोचिये तो !”

निर्मल बोला, “सूर्य और पृथ्वी का साधारण चीज़ बता रही है ! पृथ्वी घूमती है और सूर्य स्थिर है, क्या यह ठीक है ? सच कहता हूँ, मुझे इस बात की बहुत जिज्ञासा थी कि एक इतनी बड़ी शिक्षाशास्त्री अभी-अभी स्वतंत्रता प्राप्त देश के नन्हें बच्चों से देखें क्या पूछती हैं। पर पूछती क्या है, आदम के जमाने का सूर्य और पृथ्वी...और कुछ नहीं !”

इन्द्राणी ने व्यंग्य के साथ कहा, “क्या सूर्य और पृथ्वी को छोड़कर ही तुम्हारा स्कूल चलेगा ?”

निर्मल बोला, “जो पास के है, वे सबसे पहले है। इसके अलावा सूर्य-पृथ्वी का सम्पर्क रटकर क्यो सीखा जाय ? आंख के सामने जहातक हो सके, इस सम्बन्ध को प्रत्यक्ष करना पड़ेगा, जिससे किसीको इस विषय में धोखा न रहे। हमारे यहां बढईखाना है, इसकी व्यवस्था भी की जा सकती है।”

पंडित सनक-भरी आवाज में बोला, “मैं कुछ नहीं जानता, मैं मूर्ख हूँ, यह उन्होंने भरी मजलिस में छात्रों के सामने कह दिया। वह जवानी बतायें कि यदि एक मन का दाम सत्रह रुपये आठ आने तीन गडे और दो कौडी हो, तो एक कत्रे का क्या होगा ? बता सकती है ?”

इद्राणी बोली, “जवानी न सही, कागज-कलम आखिर किस मर्ज की दवा है ?”

“उन्हें कोई देवोत्तर या ब्रह्मोत्तर या पैमाइश का सवाल दीजिये। बड़ी विदूषी हैं, बता तो दे। और वह तीन सतरें लिखे, मैं भी लिखू। कौन कितनी जल्दी लिख सकता है और किसका मुलेख है, यह दस जने बतायें।”

इद्राणी बोलीं, “जब छापाखाना है तो मुसीबत उठाकर मुलेख लिखने की जरूरत क्या है ?”

प्रसन्न बोला, “लिखाई, पढाई, हिसाब, किसीकी जरूरत नहीं है ! बस इस बात की जरूरत है कि सूर्य घूमता है या पृथ्वी !”

निर्मल बोला, “आप मेरे साथ हो जाइये, पंडितजी। करघे में धूल जमी है, खेती ढंग से नहीं हो पाती, एक हिसाब करने में कागज-कलम लेकर पसीना-पसीना हो जाता हूं। हाई स्कूल आपकी मर्यादा नहीं समझेगा, पर हमें आप जैसे विद्वान की बहुत जरूरत है।”

इद्राणी आगबबूला होकर बोलीं, “इतने दिनों तक लड़कों को बहकाते थे, अब मास्टर्स को बहकाने लगे ! इस घर के मालिक उन्हें नौकरी दे गये हैं, हासि आये या और कोई, उनकी नौकरी नहीं जाने की। यदि स्कूल में काम न करना चाहें, तो उन्हें घर बैठे वेतन मिलेगा। जिस दिन उन्हें नौकरी से अलग किया जायगा, उस दिन आकर इनका हाथ पकड़ना,

उससे पहले नहीं। जाओ, तुम चले जाओ।”

×

×

×

केवल पृथ्वी नहीं घूमती, उमपर के आदमी भी घूमते हैं। घूम-फिर-कर फिर एक जगह आ रहे हैं।

इसीकी एक मिसाल हरिपद को देखकर मिली। गोकुल के मार्ग का यह मुखन्दर गोप हासि देवी का खाम नौकर बनकर साथ आया। स्कूल की गड़बड़ मिट जाने पर जब जरा दम मारने की फुरसत मिली, तब अमूल्य ने एकान्त में आकर उसका हाथ पकड़ा।

हरिपद बोला, “इतना सबकुछ करके भी लछमन के साथ वनाकर नहीं रख पाया। अकेले मुझे ही नहीं, पाचु और अधर को भी निकाल दिया। इसका मतलब यह है कि वर्षा आ रही है, मंडली कुछ दिन बन्द रहेगी, इसलिए फालतू लोगों को छुड़ाकर खर्च घटा रहा है। दो-चार बड़ों को रखेगा। ठाली कैसे रहता, इसलिए इनके साथ हो लिया। जै दिन कट जायं। तेरा क्या रहा ? मंडली बना पाया ?”

अमूल्य ने मजे में कहा, “मैंने मंडली जुटा ली। जवरदस्त मंडली।”

“सच ! चल, झूठ बोल रहा है, जो ऐसा होता तो स्कूल की बेच पर बैठकर जुगाली क्यों करता ?”

अमूल्य बोला, “बस दो-चार दिनों के लिए। क्या करूं, मालकिन नहीं मानती। मंडली छोड़कर मैं यहाँ कब रहने लगा !”

फिर एकाएक गंभीर आवाज में बोला, “ऐसी तकदीर होगी, यह मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था, हरिपद भैया।”

उत्साह से हरिपद की दोनों आंखें चमक उठीं। बोला, “मंडली का नाम क्या है ?”

“नवीन मंडली।”

“अच्छा अब लछमन की जगह नवीन महाशय मंडली के स्वामी हुए आदमी कैसा है ?”

“अरे, मंडली के स्वामी के नाम पर नहीं रखा है। इतने दिनों में पां

करते हो, फिर भी नवीन का मतलब नहीं जानते ?”

“जानता क्यों नहीं ! नवीन माने नया । कोई कठिन शब्द थोड़े है । लछमन की मंडली पर से सोचा था कि नवीन किसीका नाम होगा । तो ठीक है । मंडली का मालिक अपने मुह मिया मिट्ठू नहीं बनना चाहता, अपनी डफली आप बजाना नहीं चाहता ।”

हरिपद बोला, “मुझे लोगे न ? मेरी सिफारिश कर दो ।”

“सबको लेते हैं, किसीको लौटाते नहीं । बस गये कि काम बन गया । मैं तो ऐसे ही पहुंच गया था । वह बड़े मजे की बात है । जान की परवाह न कर मैं होज के अन्दर कूद पड़ा था, हरिपद भैया ।”

हासि, इंद्राणी और दूसरे लोगो को देखकर वे अलग हो गये । वे सभा में जा रहे हैं । अभी न सही, एक ही घर में तो है, बातचीत के बहुत-से प्रसंग आयेंगे ।

इंद्राणी ने संक्षेप में दो-चार बातें कही । सदर हवेली में स्कूल होगा । लड़को की पढ़ाई बिना कुछ लिये होगी । रियासत से किताब, कागज, पेसिल —सब मुफ्त दी जायगी । खेल आदि की खूब व्यवस्था रहेगी । जो कुछ इनके करने लायक है, करेंगे, पर अगर गांव वाले शिक्षा के बारे में दिलचस्पी न लें, तो नतीजा कुछ भी न होगा ।

स्कूल का नाम ‘नवकिशोर हाई स्कूल’ रखा गया । लाल कपड़े को टांगकर उसपर नाम लिखा गया था । अध्यक्ष का नाम भी उसपर था । नाम के साथ डिग्रियां और सारी योग्यताएं कागज पर लिखकर लाल कपड़े के नीचे लगा दी गई थीं ।

इंद्राणी के बाद हासि उठीं । ज्योंही वह बोलने लगी कि लोगों में कानाफूसी होने लगी । लगता था जैसे दबी हुई हँसी हो । इंद्राणी ने हाथ ऊंचा किया । फिर भी शोर कम नहीं हुआ । हासि देवी ने नरमी से बात शुरू की थी, पर अब गुस्से में आकर जोर से गालियां देने लगी । बोली, “समाज के सभी क्षेत्रों में अनुशासन की कमी है । यदि लोग व्यवस्थित और नियमित रूप से काम करना न सीखें, तो आजादी से कोई भी लाभ नहीं

होनेवाला है। हमारा लिखाई-पढ़ाई में अनुशासन पर अधिक ध्यान रहेगा। मैं चाहती हूँ कि लड़के कदम मिलाकर चले, एकसाथ एक ही बात कहे, इशारे पर पलक मारते चुप हो जाय। मैं यह भी चाहती हूँ कि लड़को की पोशाक भी एक हो, जैसे खाकी निकर और सफेद कमीज। आज ही नहा, पर धीरे-धीरे यह सब हो जाना है।”

आगे बोली, “सबकी भावनाएँ और चिन्ताएँ धीरे-धीरे एक ही दिशा में हों। कुल मिलाकर एक विशाल शक्तिमान समूह बनेगा। अलग किसी की भी इकाई नहीं है, मनुष्य एक बड़ी मशीन का अंग—पुर्जा—है। उसका अलग कोई मूल्य नहीं है।”

शोर बहुत अधिक हो गया था। कहकहे लग रहे थे। धीरे-धीरे हँसा की लहर आगन के एक कोने से दूसरे कोने तक फैल गई। जामरूल के पेड़ के नीचे कुछ लड़के हामि देवी की ओर अगुली दिखा रहे थे, और पीछे मुड़कर कुछ देख रहे थे। हामि देवी ने पीछे मुड़कर देखा। देखते ही दोनों आँखों में चिनगारी निकलने लगी। बोलना बंद करके वह धम्म-मे कुर्सी पर बैठ गई। अनंतर मभा छोड़कर चली गई। ‘नवकिशोर हाई स्कूल’ के अध्यक्ष का नाम ‘हामि गागुली’ की जगह ‘हाथी गागुली’ लिखा था !

मलय और तीन-चार लड़के हँसी के मारे लोट-पोट हो रहे थे। अमूल्य में नहीं रहा गया। वह वहा गया। बोला, “तुमने बहुत बुरी बात की है।”

मलय घबड़ाकर बोला, “क्या ?”

“इस तरह लिखकर उनका अपमान करना ठीक नहीं।”

मलय ने प्रतिवाद करते हुए कहा, “कौन कहता है कि हम लोगों ने लिखा है ?”

अमूल्य बोला, “तुम लोगों के चेहरे और हँसी बता रही है। झूठ बोलकर पाप ढकने की कोशिश न करो...।”

मलय ने कहा, “अजी, सत्यवीर महाराजा हरिश्चंद्र ! चटर्जी



तार खोलकर पढ़ते हुए बोली, “भीम डरने की कोई बात नहीं। खुशी की खबर है। तुम्हारे मास्टर को नौकरी मिली है।

लेकिन इस खबर को सुनकर भीम डर गया। उसके मुह से निकला,  
“ऐ !”

“ऐ क्या ! बहुत बड़ी नौकरी है।”

“तब तो सत्यानाश हो गया। उन्हें यहां से चला जाना पड़ेगा ?”

अमला बहुत व्यग्र होकर अशोक और निर्मल की खोज करने लगी।

अंत में बलवंत से खबर मिली कि अशोक और निर्मल एक साथ गये हैं—कठवा पुल की तरफ।

कठवा पुल नील के साहबों के नाम पर था। कभी नहर थी, अब बरसाती पानी का नाला मात्र रह गया था। इधर-उधर लकड़ी की सीढ़ियाँ—बीच में धनुष की तरह। नहर सूख जाने के कारण अब लोग नीचे से ही आते-जाते हैं, सीढ़ियाँ पारकर पुल पर चढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती।

यह जगह राय-घराने की हवेली के पास है। अशोक सध्या समय प्रायः यहां आ बैठता है। पास में पीपल का एक विशाल पेड़ है। पुल पर से जलाशय तथा दलदलवाला जमीन दिखाई पड़ती है। चुपचाप शांत होकर बैठने के लिए अच्छी जगह है।

अशोक और निर्मल पास-पास बैठे थे।

निर्मल बोला, “क्यों, हासि देवी की सभा में नहीं गये ?”

अशोक बोला, “उन्होंने सारी उम्र शहर में गुजारी है, बड़े-बड़े स्थानों में विद्या सीखी है, वह जो कुछ कह सकती है, वह मैं बिना सुने ही बता सकता हूँ। पर आपकी बातें अच्छी लगती हैं।”

“नहीं जी, नयापन उनमें कुछ नहीं है। मेरी बातें मेरी भी तो कहा है ?”

अशोक बोला, “हो सकता है, पहले भी ऐसी बातें सुनी हों, पर मन पर गहरी छाप पहली ही बार पड़ी है। आज कुछ ज्ञान-चर्चा करनी है, इसी-लिए आपको एकांत में पकड़ लाया हूँ।”

निर्मल कुछ डर-सा गया।

“मेरे साथ ज्ञान-चर्चा ! कैसी ज्ञान-चर्चा ? तोतों की तरह दूसरों की बातों को दोहराता हूँ, इसलिए आप जैसे लोगों की बगल में बैठने की योग्यता थोड़े ही हो गई ? अच्छा, मैं चलूँ ?”

“अच्छी बात है, छोड़िये ज्ञान-चर्चा की बात। बैठिये तो। कम-से-कम कलकत्ता जाने के पहले थोड़ा परिचय तो कर लूँ।”

निर्मल बोला, “कलकत्ता कब जा रहे है ?”

“कहते है, इन दिनों जाने के लिए कोई अच्छी तिथि नहीं है। अगले सोमवार को चल दूंगा। पहले ही चल देना चाहिए था, पर चाचीजी ने कहा कि स्कूल के लिए जरा कुछ कर जाओ।”

“स्कूल का काम पूरा हो गया, ऐसा आप समझ रहे है क्या ! अभी तो शुरुआत ही है। आरंभ में तो बहुत-से मिल जाते है, पर शुरू का जोश खतम हो जाने पर मुसीबत आती है।”

अशोक बोला, “काम किसी तरह चालू तो हो गया है, अब हासि देवा जानें और उनका काम जाने। मैं अब और नहीं रुक सकता। कुछ दिनों से एक जरूरी चिट्ठी की राह देख रहा हूँ। आ नहीं रही है। खुद ही जाकर देखूंगा।”

कुछ रुककर फिर बोला, “कलकत्ता आने पर मेरे घर आइये, जरूर। वडी खुशी होगी।”

निर्मल बोला, “देहाती पाठशाला के काम में शहर की तरह छुट्टियां नहीं होती। इसके अलावा हम लोग ठहरे देहाती, शहर हमें काटने दौड़ता है।”

“कुछ दिन रहकर देखिये तो। कभी कलकत्ते में रहे है ?”

“रहा तो हूँ, पर कुछ दिन।” फिर हँसकर बोला, “एक बार डेढ़ साल रहा था।”

“कहां ठहरे थे ?”

“हरिन बाड़ी की जेल में। पर कलकत्ते की स्मृति कुछ मनोरम नहीं है। सोचकर डर लगता है।”

सभा से लौटे हुए दो-चार व्यक्ति निर्मल को देखकर रुक गये और हँसने लगे। हँसते हुए उसमें से एक बोला, “ओ मास्टर, क्या लड़कों को स्कूल भेजने के लिए पैंटलून पहनाना पड़ेगा ?”

वे ऐसे हँस रहे थे, मानो यह कोई भारी मजाक की बात हो।

दूसरा बोला, “शहर की औरत ठहरी ! हमारे गांवों की हालत क्या जाने !”

रसिकजनो की कही कमी नहीं होती। एक देहाती कहावत के द्वारा एक ने अपनी बात कही। बोला, “स्त्री जूते पहने तो समझ लो कि भात-तरकारी जल गई।

निर्मल ने डपटकर कहा, “छि-छि: ! तुम लोग यह क्या कह रहे हो?”

वह आदमी तो चुप हो गया, पर दूसरे ने कहा, “वे लोग हमारी हालत को नहीं जानते। यहां तो हम पहनने के लिए एक लत्ता भी नहीं जुटा पाते।”

रसिक व्यक्ति फिर बोल उठा, “बासी भात में नमक तो जुटता नहीं, फिर बेगन के भुतों में विष्णु तेल<sup>१</sup> कहां से आये? पर मालकिन ने अच्छा किया जो फीस नहीं देनी होगी और पुस्तकें आदि भी वही खरीद देगी।”

निर्मल बोला, “नहीं, यह अच्छा नहीं हुआ, हमारे कोठीवाले स्कूल का दूसरा ही नियम है। वहां कोई भी दया का दान नहीं लेगा, सबको फीस देनी पड़ेगी।”

उस व्यक्ति ने ताना देते हुए कहा, “तुम्हारे स्कूल में तो नवाबों के नाती और पोते पढ़ते हैं, फिर क्यों न पैसा दे! तुम्हें फीस में जितने रुपये मिलते हैं, हम जानते हैं।”

निर्मल बोला, “नहीं, तुम नहीं जानते। वे अपने बाप या चाचा के पैसे फीस में नहीं देते, खुद खटकर फीस अदा करते हैं।”

अशोक बोला, “अगर कोई रोगी या कमजोर लड़का आपके स्कूल में आये तो वह क्या करेगा?”

“जिसकी जितनी बिसात होगी, वह उतनी ही फीस अदा करेगा। हमारे यहां फीस श्रेणी के हिसाब से नहीं, हैसियत के अनुसार है। असली बात है ईमानदारी। अपना खर्च आप चलाना है, इस प्रकार के आत्मविश्वास से वे बड़े होंगे और यह स्कूल उन्हींका है, यह भावना भी पैदा होगी। आज हमारे लोकतांत्रिक राष्ट्र के संबंध में भी लोगो में इसी भावना का उत्पन्न होना जरूरी है।”

<sup>१</sup> विष्णु तेल से आशय किसी बहुत दुर्लभ वस्तु से है।

तभी अमला बलवंत के साथ आई । बोली, “अशोक भैया, आपको प्रयोगशालावाली नौकरी नहीं मिली ।”

अशोक का चेहरा फक पड़ गया ।

“क्या डा० दत्त का पत्र आया है ?”

“आपके लिए नहीं, निर्मलबाबू के लिए । इन्हें तार देकर काम सम्हालने के लिए बुलाया है ।”

निर्मल ने आश्चर्य के साथ कहा, “आपने कहा सुना ? मैं तो कुछ भी नहीं जानता ।”

“तारवाला आपको खोजता फिर रहा था । आप अंग्रेजी तो पढ़ नहीं सकते ! इसलिए भीम ने मुझसे कहा कि मैं पढ़कर आपको बता दू । डेरे पर आपको तारवाला और भीम इतजार करते हुए मिलेंगे ।”

विस्मय के पहले धक्के से सम्मलकर अशोक बोला, “इतनी दिशाओं में इतनी सफलताएँ ! निर्मलबाबू आप बड़े अद्भुत आदमी हैं !”

निर्मल बोला, “किसने कहा ? अंग्रेजी तार पढ़ने लायक विद्या मुझे आती है, भीम आदि तो यह भी नहीं मानते ।”

“इसीलिए तो अद्भुत कह रहा हूँ कि आप अपनेको इतना छिपा सकते हैं ! कितनों की बात मैंने सोची है, पर यह कब मालूम था कि मेरे प्रतियोगी तातिहाट में पडितजी बने बैठे हैं ।”

निर्मल बोला, “विश्वास कीजिये, मैं इस मामले में कुछ भी नहीं जानता”

अशोक कुछ उधेड़बुन के बाद बोला, “आप कलकत्ता विश्वविद्यालय के पढ़े तो हैं नहीं, नहीं तो जरूर जानता । फिर आप किस विश्वविद्यालय के हैं ? आप डा० दत्त से पढ़े हैं ?”

“मैं कभी किसी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ा । अभी-अभी एक ठिकाना मैंने बताया था न ! उसी तरह के कई ठिकानों पर मेहमान रहा । डा० दत्त के चरणों में बैठता ऐसा भाग्य कहां ? हा, चिट्ठी-पत्री से थोड़ा-बहुत परिचय हुआ है । दो-एक बार मिल भी चुका हूँ, पर कितनी देर उनके पास रह सका !”

अशोक बोला, “ईश्वर पक्षपात कर सकते हैं, पर डा० दत्त कभी अपने फैसले में गलती नहीं कर सकते।”

निर्मल ने भी भर्राई हुई आवाज में कहा, “हां, डा० दत्त गलती में परे हैं। वह किसीसे चाहे जितना स्नेह करे, लेकिन स्नेहवश अन्याय करनेवाले व्यक्ति वह नहीं हैं। उनके चुनाव में अपनी शक्ति में मेरी आस्था बढ़ गई है।”

अशोक कुछ सोच रहा था, मानो कुछ भूली बातें याद कर रहा हो। एकाएक बोल उठा, “निर्मलकुमार हालदार याने एन० के० हालदार। अच्छा, ‘अमेरिकन जर्नल ऑफ वॉटनी’ में ‘फूड’ नाम से जो निबंध निकला था...”

निर्मल बोला, “आपने पढ़ा था ? रद्दी-सद्दी कोई भी लेख आपकी नजर से बचता नहीं है ?”

“करेंट साइम’, ‘इंडियन फार्मिंग’ आदि पत्रों में भी आपका नाम देखा है।”...

दो-चार घरों में प्रमाण-सहित पकड़े जाने के बाद चोर की जो हालत होती है, वही हालत निर्मल की हुई। वह चुपचाप असहाय दृष्टि से देखता रहा।

अशोक बोला, “निर्मलबাবू, मेरा अभिनंदन स्वीकार करें। डा० दत्त ने बिल्कुल सही राय दी है। आप ही सबसे योग्य हैं। आप जेलों के सीखचों के भीतर रहें; वहां प्रयोगशाला की सुविधा नहीं थी, उल्टे हजारों मुश्किलें थी, फिर भी आप इतने तथ्य कैसे इकट्ठे कर पाये ? उम्र में आप शायद छोटे ही होंगे, पर आपके पैरों की धूली सिर पर रखने को जी चाहता है।”

एकाएक उठकर खड़े होते हुए और नमस्कार के ढग पर हाथ उठाते हुए अशोक बोला, “अच्छा अब आज्ञा दीजिये।”

अमला बोली, “अभी तो शाम ही हुई है। चलिये, जरा धूम-फिर लें। आज निकारी-बांध में डोंगी पर सैर करने की बात थी न ?”

“अमला, मुझे कई पत्र लिखने हैं। सोमवार को जाना है। सारी चीजें बिखरी पड़ी हैं। आज मर नहीं हो सकती।”

अशोक को कितना बड़ा मानसिक धक्का लगा, यह उसके लहजे और चले जाने से साफ जाहिर होता था, जो थोड़े-मे लोग जमा थे, उन्हें गये देर हो गई थी। संध्या का समय था। कठवा पुल पर निर्मल और अमला आमने-सामने थे। बलवन सबसे नीचेवाली सीढ़ी पर लाठी रखकर पीपल की आड़ में बीड़ी सुलगा चुका था।

निर्मल बोला, “अशोक बाबू दुखी होकर चले गये।”

अमला ने कहा, “आप ही के कारण...”

“पर अत मे नौकरी उन्हीको मिलेगी। उन्हे कह दीजियेगा। मैं नौकरी नहीं करने का।”

अमला को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, “क्यों?”

“मैंने नौकरी मंजूर भी कर ली तो भीम आदि मुझे छोड़ देंगे? जाने ही नहीं देंगे। शायद मार डालें।”

अमला बोली, “आप बड़े डरने लगे हैं न! छोटी उम्र में ही अंग्रेजों के साथ गोलीकांड होता रहा है, और उनकी फासी की रस्सी के साथ खेलते आये हैं। फिजूल की बात छोड़िये...”

“बात पक्की है। मुझे नौकरी पसंद नहीं। यहां भी तो नौकरी मिल रही थी।”

अमला आश्चर्य के साथ बोली, “कहा?”

“आपकी माताजी दे रही थी। नौकरी में कोई झूट भी नहीं था। मजे से लडकों में रहता।”

यह सुनते ही अमला आग-बबूला हो गई। बोली, “आप मां का अपमान कर रहे हैं?”

सम्भलकर निर्मल बोला, “जी नहीं। यह कैसे हो सकता है?”

“आज उस बात को उठाकर आप उनपर व्यंग कर रहे हैं?”

“पर मैं अकेला प्राणी हूं। पचास से अधिक की मुझे जरूरत क्या है?”

“बह कम-से-कम पाच-सात सौ देंगे। अशोक भैया तो ऐसा ही कह रहे थे।”

निर्मल बोला, “पाच सौ दे या सात सौ, मेरे लिए बेकार है, एकदम बेकार। मेरे क्या काम आयेंगे ? बैंक में सड़ेंगे। बैंक की बही में एक मोटी रकम देखकर मैं चतुर्भुज थोड़े ही हो जाऊंगा। सोचकर देखिये, मेरे लिए पचास और पाच सौ में जब फर्क नहीं है तो उसके लिए उतनी दूर जाने और इतना प्रपंच करने की दरकार क्या है ?”

अमला ने कहा, “आप नहीं जायेंगे तो क्या तातिहाट में सबकी जली-कटी सुनकर स्कूल-मास्टरी करते हुए सड़ेंगे ? चटर्जी महाशय जैसे लोग भी मुह बनाकर बात करते हैं।...आपको नौकरी स्वीकार करनी ही चाहिए।”

“सब शहर में भाग जाय तो गावों में बाती कैसे जलेगी ?”

‘चूल्हे में जाय गाव ! जो लोग बिल्कुल निकम्मे हैं, वे ही गावों में पड़ रहते हैं। आप किसी तरह यहाँ नहीं रह सकते।’

“पर मुझे लगता है कि अशोकबाबू को ही यह काम मिलना चाहिए। वह बड़ी आशा रखते थे और योग्य भी हैं, इसमें मदेह नहीं।

“आप अपना रास्ता देखिये। आप अपने गुणों से चुने गये हैं। अशोक भैया के कौन लगते हैं, जो आप उनके कारण अपना भविष्य नष्ट करें ? इस देहाती पाटशाला में आपने अपनी शक्ति का इतना अपव्यय किया है। आपने शालाग्राम की शिला में लोटे का काम लिया है। यहाँ कौन आपकी मर्यादा समझता है ? आपमें व्यवहार-बुद्धि की कमी है।”

कहते-कहते शायद उसे ध्यान आया कि आखिर वह इतनी बातें किस जोर पर कह रही है ! वह लज्जित होकर चुप हो गई।

निर्मल अमला की तरफ देख रहा था। भर्खाई हुई आवाज में बोला, “ठीक ऐसी ही बात मेरे पिताजी और माताजी कहा करते थे। वे गये। उनके साथ प्यार करनेवाले सारे लोगो का अंत हो गया। इतने दिनों के बाद आज मैंने फिर वही बात आपके मुह से सुनी है।”

अमला विचलित हो गई। बोली, “तो आप मेरी बात मानेंगे न ?”

निर्मल ने मुस्कराकर सिर हिला दिया।

“वे मुझे लौटा नहीं पाये थे। आप भी लौटा नहीं पायेंगी। जो मुझसे नेह करेगा, उसे कष्ट ही मिलेगा।”

हरितोष का पत्र आया है। लिखा है कि डा० दत्त कहते हैं कि जब अशोक जैसा योग्य व्यक्ति मिल रहा है तो फिर उसे नौकरी कैसे न मिले ! पर पत्र का असली मतव्य अशोक की नौकरी नहीं, राय-जागीर के इस ताति-हाट मौजे के विषय में है। आखिर में आकर एक दाव लगा है, जिसकी बिल्कुल आशा नहीं थी। अविनाशवर्धन डेढ़ लाख में मौजा लेने को तैयार है। हरितोष कौशल से जागीर उसके सिर पर मढ़ रहे हैं, ऐसा कहना ही ठीक होगा।

इंद्राणी ने अविनाश को देखा है। पुराने लोहे का व्यापारी था। उसीने उनका टूटा स्टीम-लाच खरीदा था। वह डेढ़-दो मन लोहा कंधे पर लेकर चलता था। लडाई के ज़माने में लोहे को सोने के भाव बेचकर वह अब बहुत धनी हो गया था। उसे लखपति कहना गाली देना है। रुपये खूब हो जाने के बाद अब वह शान-शौकन और इज्जत के पीछे पड़ा है। वह ताति-हाट का मौजा खरीदकर ज़मींदार कहलाना चाहता है। हरितोष तथा इंद्राणी जमींदारी के भावी परिणाम में परिचित थी। ताश के पत्तों के घर की तरह जल्दी ही ये टूटनेवाले हैं, पर अविनाश यह सब नहीं समझता। फिर यह भी तो है कि उसके लिए डेढ़ लाख रुपये कुछ भी नहीं है।

हरितोष बड़े ही कार्य-कुशल व्यक्ति है, इसी कारण इतना दाम उठा है। इंद्राणी बच गई, क्योंकि इससे सारी समस्याओं का आसानी से समाधान होता है। नवकिशोर के ज़माने का कर्ज मूद-दर-मूद तीस हजार पहुंच चुका है। कलकत्ते के जिस मकान में इस समय रहना होता है, उससे साठ हजार रुपये मिलेंगे। सारा ले-देकर भी हाथों में काफी रुपये बच रहते हैं। अमला की शादी में भी अधिक खर्च नहीं होने का।

पत्र में अमला की शादी का प्रसंग भी था। हरितोष अबतक अशोक की शिक्षा के बहाने शादी को टालते आये हैं, पर अब उसकी पढ़ाई पूरी हो

गई। अब देर का कोई कारण नहीं है।

उन्होंने बहुत जल्दी कलकत्ते लौटने का अनुरोध किया है। तांतिहाट जागीर के कर्मचारियों और रियाया में किसी बात का फैलना ठीक नहीं है। लोगों को मालूम हो जाय तो इज्जत नहीं रहने की। तरह-तरह की बाधाएं भी आ सकती हैं। यदि अविनाश चाहे तो हरितोष उमे लाकर तांतिहाट दिखला सकते हैं। अधिक फीम देकर रजिस्ट्री भी कलकत्ते में होगी। और कई लोग अविनाश को अन्य जायदादों का पता दे रहे हैं, इसलिए जल्दी काम करना जरूरी है।

इस पत्र को पाने के बाद भी डब्राणी के मन में शांति नहीं है। बहुत दिनों के भूले हुए सम्पर्क मानो उन्हें गहरे आलिंगन में घेर रहे थे और सारा तांतिहाट मूर्त्त होकर उनसे सुख-दुःख की बात कह रहा था। यह उनके पति, ससुर और ससुर के पिता का गांव है। इसी गांव में बच्चे के अन्नप्राशन की शहनाई और ढोल बजने में जलाशय का जल हिलोगे लेना है, फिर एक दिन 'हरि बोल'¹ शब्द में शरीर की अन्तिम गति यही होती है। एक दिन किशोरी वधू के रूप में वह रंगे पैरों में इस प्राचीन घर के आगमन में आई थी, अब कुछ दिनों बाद हमेशा के लिए यहाँ से विदा हो जायगी, फिर लाख चाहने पर भी यहाँ नहीं आ पायेगी। लेटकर वाम के जंगल के भीतर में भाकने-वाला चाद उन्हें फिर कभी दिखाई नहीं देगा। अज्ञात, अपरिचित नये लोग आकर यहाँ गृहस्थी जमायेगे।

और यह स्कूल भी एक मुसीबत हो गया है। गांव में आई थी शांति के लिए, पर धीरे-धीरे इसमें फसती चली गई। बहुत दिनों में हरितोष मौजा बेचने की तैयारी कर रहे हैं। सारे देश में जमींदारी प्रथा का अन्त करने के लिए जो आंदोलन चालू था, उस कारण डब्राणी को यह आशका थी कि कोई खरीदार नहीं मिलने का। तभी तो वह स्कूल के काम में लग गई थीं।

१. "रामनाम सत्य है" का पर्यायवाची।

पर मन मे चाहे जो हो, ऐसा सुयोग पागल के अतिरिक्त कोई छोड़ ही नहीं सकता। इद्राणी ने खूब सोचकर निश्चय किया है कि वह अविनाश-वर्धन को समझा देगी कि स्कूल की स्थापना से कितनी ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। अपने पास विद्या न होने पर भी विद्या के समर्थक होने की ख्याति मिलती है। अगर अविनाश राजी न हुआ तो कई हजार रुपये लूगी, जिसके मूँद से स्कूल चलाने का शर्तनामा होगा। हरितोष को लिखकर दो सप्ताह का समय लिया। स्कूल को पूरी तरह चालू करके ही जायगी। उन्होंने अशोक को भी रोक रखा है। सब एक ही साथ जायगे। वह हासि पर जोर डाल रही है कि इधर की व्यवस्था जल्दी करे। काम शुरू करके कुछ दिनों के लिए कलकत्ता जायगी। यह उन्होंने किसीको भी नहीं बताया कि वह यहा से नाता तोड़ने जा रही है।

तय हुआ कि छठी श्रेणी तक स्कूल खुले। इस इलाके मे इससे ऊपर की श्रेणी के लड़के नहीं मिले। छठी मे भी कुल मिलाकर आठ लड़के जुटे। इसीसे स्कूल चालू होगा। अगर स्कूल अच्छा चल निकला तो दूर के लड़के भी धीरे-धीरे आ जायगे। फिर कुछ महीनों के बाद जब सालाना परीक्षा होगी, तो ये आठ लड़के भी तो ऊपर की श्रेणी में जायंगे।

पांचकौड़ी-मोहित-अबुजाक्ष की व्यवस्था के अनुसार मलय को छठी श्रेणी में रखा गया है। वह स्कूल का सबसे अच्छा छात्र होगा पर भवतारण इससे खुश नहीं है। बोला, “बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद। ये छोटे बाबू की कद्र नहीं समझे। पक्की जांच हो जाने दो, अकेले उनके लिए ही अलग श्रेणी न खोलनी पड़े तो कहना।”

आज उसी पक्की जांच की लिखित परीक्षा है। भवतारण बोला, “जरूर वह अव्वल आयेगे। वह कलकत्ता के छात्र ठहरे, प्रसन्न के घोषा-बसन्त छात्र भला क्या खाकर उनसे होड़ करेगे ?”

सबकी यही धारणा थी। वह अबतक कलकत्ते के स्कूल में पढ़ता था। उसको भी यही विश्वास था, पर मुसीबत यह हुई कि नये स्कूल की स्थापना तथा हासि देवी के आगमन की गड़बड़ में पंद्रह दिनों तक कोई पढ़ाई नहीं

हुई। न हो, इसकी उमे कोई फिक्र भी नहीं थी।

सवेरे पुस्तकों का डेस्क खुला, तो मालूम हुआ कि नीचे एक छेद में चुहिया अंदर घुस गई और उसने अरुगणित का एक हिस्सा कोने की तरफ से काट दिया।

इसी बीच नये स्कूल में यहाँ भी कई यार-दोस्त बन गये थे।

किसीने कहा, “पुस्तक पर एक टोकरी धूल जम गई है। क्या इस बीच पुस्तक नहीं खोली?”

मलय ने शेखी बघारते हुए कहा, “अरे, यह भी कोई परीक्षा है, इसके लिए पुस्तक पढ़ने की क्या जरूरत?”

पर कुछ पृष्ठ पलटने पर उसका चेहरा सूख गया। भीतर-ही-भीतर डर मालूम हो रहा था। थोड़े दिन न पढ़ने से इतना भूल गया? ऐसा लगता था मानो वह अथाह पानी में गिर पड़ा है। उसने रुखाई के साथ-साथ मित्रों को रवाना कर दिया और दरवाजे की सिकटनी चढ़ा दी।

वह रेखागणित के उपपाद्य से डरकर जितनी बार उमे हल करता था, उसका दिमाग उतना ही गड़बड़ाने लगता था। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे यह सब कभी पढ़ा ही नहीं। अंत में गणित में इमे रस आ गया। एक-के-बाद-एक सवाल हल करता गया।

दस बजने पर वह निकला। जल्दी-जल्दी नहा-धोकर और खा-पीकर इंद्राणी के पास आया। उसकी इच्छा थी मा के पैर छूकर परीक्षा में जाकर बैठेगा। हासि वहाँ पर थी। बोली, “तुम्हारे इतने में बच्चे की एकाग्रता की मैं दाद देती हूँ। कब से दरवाजा बंद करके पढ़ रहे थे? अब निकले हो। बड़े होने का लक्षण है। इस परीक्षा की तो बात ही क्या, देखना यह विश्वविद्यालय में सबसे ऊपर रहेगा, बशर्ते कि अच्छी पढ़ाई हो।”

मलय शर्म में सिर नीचा करके चला गया।

इंद्राणी बोलीं, “पुस्तक की विद्या ही सब-कुछ नहीं। यह भी तो देखो कि इसे बराबर सारी सुविधाएँ मिलती रही है।”

हासि बोली, “ऐसी सुविधाएँ तो बहुतों को मिलती है।”

इंद्राणी बोली, “अबबल आये या न आये बहन, तुम आशीर्वाद दो कि यह लड़का आदमी बने। यदि इसमें सचाई के प्रति निष्ठा, महत्ता, साहम, दया न रहे, तो मुझे मरकर भी शांति न मिलेगी। इसी बीच इसने एक दिन अमूल्य को मारा। कसूर चाहे छोटा हो, लेकिन मैं सोचती हूँ कि उसका हाथ कैसे उठ गया? सच कहती हूँ, हाँ, उस समय मुझे इतनी शर्म मालूम हुई कि मैं अपनी जान देने पर उतारूँ हो गई थी...”

कहते-कहते वह एकाएक रुक गई। अमूल्य आ गया था।

हासि ने तेवर चढ़ाकर पूछा, “क्या बात है?”

“मालकिन को प्रणाम करने आया हूँ।”

इंद्राणी ने मुस्कराकर कहा, “सुनो, मा नहीं कहोगे तो मैं कभी प्रणाम नहीं लूँगी।”

हासि डपटकर बोली, “जब यह चाहती है तो तुम ‘मा’ कहकर पुकारा करो।”

अमूल्य मुस्कराने लगा।

“अजब बदतमीज लड़के हो तुम। उन्हें मा कहना तुम्हारा अहोभाग्य होगा।”

अमूल्य फिर भी कुछ नहीं बोला।

हासि फटकारकर बोली, “कहो...”

अमूल्य बोला, “शरम जो लगती है। जब मैं तीन महीने का था, तब माँ चल बसी थी। कभी ‘मा’ कहकर किसीको पुकारा ही नहीं।”

अमूल्य ने इंद्राणी के पैर में सिर झुँझाकर प्रणाम किया और दौड़कर चला गया।

परीक्षा शुरू हुई, पर कचहरी का आंगन खाली था। कुल मिलाकर तीस लड़के आये थे।

पाँचकौड़ी बोला, “इधर के लोगों में घड़ी से काम करने की आदत नहीं है। कुछ और समय देखा जाय? क्यों?”

हासि का चेहरा गंभीर था। वह कुछ नहीं बोली।

प्रसन्न ने कहा, “प्रतीक्षा करना बेकार है। इतने दिनों से इसी काम में लगा हूँ। गांव के लोगों को मैं खूब जानता हूँ। जो लोग बिल्कुल जागीर के मोहताज हैं, जिनका कोई और सहारा ही नहीं, उन्होंने ही अपने लड़के भेजे हैं।”

हासि बोली, “पर उस दिन तो बहुतरे आये थे।”

प्रसन्न बोला, “वे तो यों ही भेड़ियाघसान में आ गये थे। आपके स्वागत में सन्देश खिलाने की व्यवस्था थी न ? लड़के आये थे, लड़कों के बाप-दादे आये थे, माँए और मौसिया आई थीं। एक-एक टोली पांच-पाच, सात-सात टोकरी माफ कर गई थी।”

बरामदे के एक हिस्से को तख्तों से घेरकर हासि का निजी दफ्तर बना था। हासि उसमें घुम गई।

प्रसन्न कहने लगा, “आज तो सन्देश नहीं बंट रहा है, आज तो कुछ और ही मामला है। आज तो परीक्षा है न ? जो हो, पांचकौड़ी बाबू, पहले दिन ही इस तरह अंधाधुन्ध काम करना ठीक नहीं। जरा धीरे-धीरे काम होना चाहिए था। मैडम ने गलती की।”

पांचकौड़ी तैश में आकर बोला, “यह सब तो आप ही की करामात है। आप ही ने तो इधर की ईंट और उधर का रोड़ा लेकर भानुमती का कुनवा जोड़ रखा है। अगर लड़को की जांच करके न लिया जाय तो स्कूल क्या खाक चलेगा ?”

हासि ने कमरे से निकलकर पांचकौड़ी के हाथ में प्रश्न-पत्र दे दिये। फिर वह खट-खट करती हुई इंद्राणी के पास पहुंच गई।

लड़कों का कम आना अपमान की बात थी। सुनकर इंद्राणी चंचल हो गई। हासि को लाकर और भी बड़ी जिम्मेदारी उन्होंने सिर पर ले ली थी। अपमान उन्हीं अकेले का नहीं है, हासि का भी है। यहां के लोग जाने कैसे हैं ! उनके लिए इतना किया जा रहा है, पर उनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती ? एक शंका यह भी है कि कहीं निर्मल भीतर-ही-भीतर कोई षड्यंत्र तो नहीं कर रहा है !

भवतारण की तलाश हुई, पर वह नहीं मिला। कहीं चला गया था। पता नहीं, कब लौटे। पर इंद्राणी तो चट मगनी पट ब्याह पर उतारू थीं। वह इतनी देर कैसे सहतीं !

बोलीं, “चलो देखें तो...”

उन्होंने बरामदे को एकबार घूमकर देखा। दुःख और लज्जा से आसू उमड़ आये। पास ही लोहारों का मुहल्ला था।

उन्होंने हासि का हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा, “इन लोगों ने भी अपने बच्चे नहीं भेजे; चलो देखें क्या कहते हैं, सुन तो ले।”

बलवंत साथ में आ गया था। राखाल लोहार के आगन में जाकर इंद्राणी बोलीं, “तुम्हारा लड़का स्कूल क्यों नहीं आया ?”

राखाल बोला, “माजी, वह अभी गाय लेकर चराने जायगा लौटकर घोंकनी चलायगा। स्कूल जाना हम गरीबों के बस की बात नहीं है।”

फिर लड़के की तरफ देखकर डपटते हुए बोला, “क्या मुह बाये खड़ा है ? चल, गाय निकाल, देर मत कर।”

वे लोग पूरे मुहल्ले में घूमते फिरे। बलवंत ने रास्ते में खड़े होकर पुकारा, “अरे तिल्ल...”

तीनकौड़ी की आवाज आई, “बुखार में पड़ा हूं। उठा नहीं जाता।”

तीनकौड़ी ने भांककर देखते हुए स्त्री से चुपके से कहा, “जल्दी से कपड़ी ओढ़ा दे। अभी आकर बड़बड़ायेंगी कि लड़के को स्कूल क्यों नहीं भेजा। यह और वह।”

हासि झुझलाकर बोली, ‘लौट चलो। नये-नये बहाने सुनने से पेट थोड़े ही भरेगा। यह परीक्षा नहीं; तमाशा हो रहा है। मैं कितना उत्साह लेकर आई थी ! और यहां यह हाल है।’

बलवंत बोला, “चलिये ज़रा बनिया टोला भी तो देख लें।”

हासि बोलीं, “कोई फायदा नहीं। यहां स्कूल नहीं चल सकता। यहां के लोगों की शिक्षा में दिलचस्पी नहीं है। तुम्हारी लम्बी-चौड़ी बातों में पड़कर मैं यहां आ गई, पर यहां मुझे सब तरह से अपमानित होना पड़ा।

मित्र और जान-पहचान के लोग, मुनेगे तो हँसेगे।”

भवतारण जल्दी से लौट रहा था। इन लोगों को देखकर पास आ गया। एक ही निगाह में परिस्थिति भाप गया। बोला, “स्कूल में लड़के हों तो कहां से हों ? अभी देखकर आया हूं कि निर्मल के तो पौ-बारह हो रहे हैं। वहां तो टिड्डीदल है, पहले से कहीं ज्यादा...”

इद्राणी ने क्षोभ-भरे लहजे में कहा, “समझ में नहीं आता कि हमारी गलती किस बात में है। हमारे यहां लड़के क्यों नहीं आते ?”

“गलती क्यों नहीं ? गलती बड़ी भारी है। यहां पढ़ने के लिए कहा जाना है, परीक्षा होती है, और वहां तो बस आवारागर्दी रहती है। वह तो छछूंदरो का अड्डा है। इसलिए वहां सब गंदे लोग इकट्ठे हो जाते हैं। अभी मैंने देखा कि भील के किनारे जोरों से हल चल रहा है और गाने गाये जा रहे हैं। मुझे देखकर गाना और भी जोर पकड़ गया। उल्टे पांव लौट आया।”

इद्राणी उत्तेजित होकर बोलीं, “किसके हुक्म से भील में हल चल रहा है ?”

“माजी खूटे के जोर में मेढो की लड़ाई होती है। शायद मनेजर-साहब, अरे भूल गया, हरितोषबाबू ने इजाजत दी हो ?”

“स्कूल के लिए एक कत्ता ज़मीन भी नहीं दी जायगी। मैं कहती हूँ, हमारी ही ज़मीन पर बसकर उसने हमें मुह दिखाने लायक नहीं रखा !”

हासि बोली, “उस दिन की उस सभा में वह जो बात हुई थी, मालूम होता है, उन्हींके षडयंत्र से हुई थी। उन्होंने किसी लड़के से उल्टा-सीधा नाम लिखवा दिया था। या क्या पता, स्वयं निर्मल ने ही...”

भवतारण बोला, “जी हाँ, वह सबकुछ कर सकता है। जब इसने गोरेसाहब पर बम डाला था, तब इसकी कितनी उम्र थी ? एक शब्द को बदलकर लिखना इसके बांये हाथ का खेल है।”

हासि बोली, “इद्राणी, मैं चली जाऊंगी। मेरा दिल टूट गया है। तुम्हारी बात का यकीन कर यहाँ आने के कारण मैं कहीं नहीं रही।”

कलाई की घड़ी देखकर वह चौंक पड़ी। बोली, “अच्छा, तो इतनी देर से हम लोग घूम रही है। मैं चली। अभी जाकर निरीक्षक बदलना और नये प्रश्न-पत्र देना है।”

इतना कहकर हासि आगे बढ़ गई। इंद्राणी भवतारण पर बम की तरह फट पड़ीं। बोली, “आप लोग पुराने अहलकार हैं, पर रियासत पर कोई ममता नहीं है? आज स्कूल क्या हुआ मेरी इज्जत का मामला बन गया। निर्मल जैसे एक आदमी को भी जिसके तवे-चूल्हे तक का ठिकाना नहीं, आप लोग काबू में नहीं ला सके?”

भवतारण ने कहा, “बलवंत...”

बलवंत बोला, “बस हुक्म की देर है।

दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। भवतारण बोला, “माजी, देखना है कि कोठी का स्कूल कब तक चलता है।”

भवतारण के लहजे से इंद्राणी के रोंगटे खड़े हो गये। बोली, “आप करेंगे क्या?”

“इतना तो कर लिया, पर कुछ नहीं हुआ। जब सन्निपात हो रहा है, तो सूचिकाभरण का प्रयोग करना पड़ेगा।”

प्रसन्न और पांचकौड़ी निरीक्षक के काम पर थे, पर प्रसन्न के बदन में दर्द था। शायद कुछ बुखार भी था। पांचकौड़ी हँसा। खा-पी लेने के बाद दोपहर के समय बूढ़े आदमी के लिए इस प्रकार की बीमारी अस्वाभाविक नहीं है। बोला, “आप कुर्सी पर बैठे-बैठे देखते रहिये, उठना नहीं पड़ेगा।”

कुर्सी पर बैठे-बैठे प्रसन्न ऊँघने लगा। उसका सिर मेज पर लटक गया। पांचकौड़ी हँसते-हँसते बोला, “पंडितजी, आप देख रहे हैं न ? सावधान ! ज़रा कड़ी निगाह रखें।”

पांचकौड़ी के इतना कहते ही प्रसन्न हड़बड़ाकर सावधान होकर बैठ गया। पर कितनी देर के लिए ? थोड़ी देर में फिर उसकी आंखें बंद हो आईं।

पांचकौड़ी को यह देखकर हँसी आई, बोला, “हटो, जाने दो। दूसरे आदमी की ज़रूरत नहीं है। पांचकौड़ी अकेले ही सौ के बराबर है। उससे चालाकी करके पार पा जाय, ऐसा माई का लाल शायद पंदा ही नहीं हुआ।”

अतुल एक कोने में जमुहाई ले रहा था। घर में धमकाये जाने पर ही उसे इस स्कूल की परीक्षा में बैठना पड़ा था। इसलिए क्या करे ! कापी पर लकीरें बना रहा था। थोड़ी देर में वह एकाएक खुश हो गया। अरे, यह तो अच्छी-भली तस्वीर बन रही थी। कुछ-कुछ आदमी का चेहरा सभर रहा था। उसने मुंह पर मूँछे लगा दीं। मुछैल पांचकौड़ी की तरह बन गया। उसने हाथ में बेंत भी बना दिया। बस अब तो हू-ब-हू पांचकौड़ी मास्टर बन गया। उसने तस्वीर के नीचे नाम भी लिख दिया।

बगल में ही अमूल्य था। उसने अमूल्य के कोहनी मारकर उसका ध्यान अपनी कलाकृति की तरफ खींचा। अमूल्य उसका मज़ा पहले ही से

ले रहा था। कृति कहां तक असल से मिलती है, इसकी जाच करने के लिए उमने कनखी से पाचकौड़ी की तरफ देखा।

देखकर दग रह गया। पाचकौड़ी इस समय सामने के बेच पर बैठे हुए मलय को इस तरह से घूर रहा था, जैसे भपट्टा मारनेवाला ही हो। उसने मलय की तरफ देखा तो पलक भारते ही सारी परिस्थिति समझ गया। मलय रेखागणित की पुस्तक खोलकर उसमें नकल मार रहा था। अचरज की बात है कि मलय यह काम कर रहा है !

उसे इंद्राणी की वे बाने याद आ गई, जो वह थोड़ी देर पहले कह रही थी। वह चाहती थी कि उनकी सतान सत्यनिष्ठ हो, भद्र, साहसी और दयालु हो, नहीं तो मरकर भी उन्हें शांति नहीं मिलने की !

तूफान आनेवाला था। अब सोचने का समय नहीं था। पाचकौड़ी मुह फेरकर उल्टी दिशा में चला। मुजरिम को पकड़ने का यही तरीका था। वह यह दिखाना ही नहीं चाहता था कि नकल करने की ओर उसका ध्यान गया है। एकदम रंगे हाथों पकड़ना चाहता था।

मौका पाकर अमूल्य ने मलय को धक्का दिया। रेखागणित की पुस्तक ज़मीन पर गिर पड़ी। इतने में पाचकौड़ी तीर की तरह वहां आ गया। इस बीच अमूल्य ने पुस्तक को पैर से खींचकर अपने पास कर लिया। प्रारंभ में मलय उसपर नराज हुआ था, पर परिस्थिति समझकर वह एक मुहूर्त के अंदर ही निर्बोध भद्र आदमी बन गया।

पाचकौड़ी बोला, “उठ खड़ा हो जा...”

मलय बोला, “किसलिए ?”

“तेरे पास किताब है इसलिए।”

पाचकौड़ी ने मलय की तलाशी ली, पर कुछ न मिला। अब मलय तेज़ हुआ, बोला, “आपने झूठ बोलकर मेरा अपमान किया है। मैं तो ऐसी बात कभी सोच भी नहीं सकता, करना तो दूर रहा।”

पाचकौड़ी बोला, “मैंने भी यही सुना था कि इस इलाके में तू सबसे अच्छा लड़का है, पर मैं अपनी आंखों पर कैसे अविश्वास करूं ? ये आंखे

कभी गलती नहीं करती। तैने किसी तरह किताब गायब कर दी है।”

मलय पहले से तेज होकर बोला, “उल्टी-सीधी बात न बोलिये। मैं मना किये दे रहा हूँ।”

“तुम जो भी चाहे कह लो, जबतक मैं सबूत नहीं दे देता तबतक तुम शेर बने रह सकते हो !”

लेकिन पांचकौड़ी आसानी से पल्ला छोड़नेवाला आदमी नहीं था। बोला, “इस और उस बेच के सब लोग उठकर खड़े हो जाओ, अलग-अलग। मैं एक-एक की तलाशी लूंगा।”

अमूल्य के पैरों के पास पुस्तक मिल गई। मलय की ओर आंखें तरेरते हुए पाचकौड़ी ने कहा, “पुस्तक मिल गई न ? लंबी-चौड़ी बातें और अपमान की नाराजगी अब कहा रही ? जो हो, मैं माजी के पास रिपोर्ट भेजे दे रहा हूँ। वह अपने लड़के की करतूत देखकर बहुत खुश होगी !”

तभी अमूल्य बोल पड़ा, “पुस्तक तो मैं लाया हू। वह किस तरह जिम्मेदार है ?”

पाचकौड़ी ने धमकाकर कहा, “मुजरिम को बचाने के लिए भूठी गवाही मत दे। तेरी तो बगला की परीक्षा है, फिर तू रेखागणित की पुस्तक क्यों लाने लगा ? बोल, जवाब दे...”

‘शायद और किसीके काम आ जाय, इसलए।’

।ड़बड़ में प्रसन्न की नींद टूट गई। जिम्मेदारी तो उसकी भी है। सो वह इधर आ गया। अमूल्य की बात सुनकर जोर से हँसते हुए बोला, “तो आपने दुनिया की भलाई का ठेका लिया है ? आप बड़े विश्व-प्रेमी हैं !”

इतने में मोहित और अंबुजाक्ष आ गये। बोले, “मामला क्या है, पांचकौड़ीबाबू ?”

अमूल्य बोला, “पुस्तक तो मैं लाया हू और ये मास्टरजी बेचारे मलय पर दोष मढ़ना चाहते हैं।”

पांचकौड़ी गरज उठा, “चुप रहो। मेरे साथ झूठ ? मैंने अपनी आंख से देखा है।”

“मास्टरजी, सच बात तो यों है...”

बीच में ही प्रसन्न बोल उठा, “तैने भूलकर भी कभी सच बात कही है ?”

मोहित पुस्तक के पन्ने उलट रहा था। एकाएक बोल पड़ा, “यह देखिये, नाम भी लिखा है—मलय किशोर राय। बात साफ है।”

पांचकौड़ी बोला, “अब कहो। अरे चापलूस ! अब तू क्या कहेगा !”

इसी गड़बड़ी में हासि भी आ गई। धूप से उसका चेहरा लाल पड़ गया था। बोली, “क्या बात है ?”

प्रसन्न आगे बढ़कर बोला, “मैंडम, पुस्तक से नकल की जा रही थी ! अभी बड़ा स्कूल तो शुरू भी नहीं हुआ और इन दुष्टों ने उसके सारे रग-डंग अपना लिये !” इतना कहकर उसने सारा किस्सा कह सुनाया।

हासि की मेज के सामने अमूल्य को लाकर खड़ा किया गया।

हासि बोली, “सब बातें सच-सच बता दे। झूठ बोलने पर मुझे बहुत गुस्सा आता है।”

“मैंने कह तो दिया।” अमूल्य ने बिना झिझक के कहा।

हासि का धीरज छूट गया। पांचकौड़ी के हाथ से बेट लेकर वह उस पर बरसाने लगी।

“बोल, अब भी बोल...”

अमूल्य ने कहा, “मैं मलय का रेखागणित इसलिए चुरा लाया था कि उसपर दोष लगाकर उसकी मरम्मत कराऊं। मैं उसे पैर से उसकी तरफ कर रहा था कि इतने में मास्टरसाहब ने पकड़ लिया।”

हासि ने प्रश्न किया, “ऐसा तूने क्यों किया ?”

“उसने मुझे तमाचा मारा था। तबसे मैं खार खाये बैठा था। चाहता था कि किसी तरह बदला निकालूं।”

हासि ने लाल-पीली होकर कहा, “स्कूल से निकल जा। निकल ! यहां ऐसों के लिए जगह नहीं है।”

प्रसन्न ने व्यंग्य से कहा, “फिर गांव-गांव में स्वांग भरता फिर। जिसका जो काम है, वही तो उससे होगा।”

अमूल्य तालाब के किनारे बैठा हुआ था, वही तालाब, जिससे उसने भूख के मारे अंजलि भर-भरकर पानी पिया था। तब हरिपद आकर बगल में बैठ गया था। आज भी हरिपद रायबाड़ी में ही है, पर कितना बदल गया है ? किसी नई मंडली में भरती होने की टोह में वह लगा रहता है। उधर ही उसका ध्यान है। वही उसका ज्ञान है। आपस में मिलते हैं तो यही बात होती रहती है। पर अमूल्य को अब ये बातें भाती नहीं। व नये नशे में चूर था। उसने कहा था न कि उसे 'नई यात्रा' का रास्ता मिल गया है।

पर आज के मामले के बाद वह क्या करे ? अब वह निर्मल के सामने जाकर किस मुह से खड़ा हो ? निर्मल देवताओं की तरह अकलुष और करुणामय है। पूछने पर उससे क्या कहेगा ? क्या वह उसपर विश्वास करेगा ? वह स्वयं ही नहीं जानता कि अकस्मात् ऐसा कांड क्यों कर बैठा ?

संध्या ढल चुकी थी। अंधेरे में डूबे हुए पेड़-पौधों की ओर ताककर वह अपने विचारों में गोते खा रहा था। जहां-जहां बेत पड़े थे, वहां-वहां पीठ सूज गई थी। उसने हाथ फेरकर देखा, पर उसकी पीड़ा इस सूजन के ही कारण नहीं थी।

इतने में कोई पास आकर बैठ गया। उसने एकाएक सोचा कि शायद हरिपद उठकर फिर आ बैठा है। पर वह हरिपद नहीं, मलय था।

कुछ देर चुप रहने के बाद मलय ने धीरे-से कहा, "तू बहुत पिटा है, मेरे लिए।"

अमूल्य ने क्रोध के साथ कहा, "और चारा ही क्या था ? तेरे लिए मालकिन का सिर नीचा होता, शरम के मारे वे मर जाती। बड़ी खराब बात थी। इज्जतवाले की इज्जत बिगड़ जाती।"

मलय सिर नीचा किये हुए बैठा रहा। उसके कुम्हलाये हुए चेहरे की

तरफ देखकर अमूल्य विचलित हो गया। बोला, “खबरदार, आगे, ऐसा काम कभी न करना। अच्छे लडके बनो। दिल लगाकर पढो-लिखो। जरा सोचो, तुम कितने बड़े घराने के दीप हो। मेरी तरह तो नहीं हो।”

मलय ने जेब से एक पैकेट सिगरेट का निकाला। अमूल्य उबल पड़ा। बोला, “अच्छा, इतनी तरक्की कर चुके हो? सिगरेट भी पीते हो?”

मलय गुमसुम होकर बोला, “मैं नहीं पीता। तुम्हें बहुत दुःख हुआ है। सो तुम्हारे लिए ले आया।”

अमूल्य बोला, “घूस दे रहा है? मेरे लिए क्यों लाया?”

मलय अवाक रह गया। बोला, “तुम तो पीते हो, इसलिए..”

अमूल्य बोला, “पिऊंगा क्यों नहीं? मेरा कौन बँठा है, जो मुझे बीड़ी-सिगरेट पीने पर डाटेगा! मैं बुरा हूँ, बीड़ी-सिगरेट नहीं पिऊंगा तो क्या करूँगा। अगर कोई मेरे सिर पर होता, तो क्या मैं पी सकता था?”

इतना कहते-कहते उसकी दोनों आंखें भर आईं। हासिके के बेटे खाकर वह नहीं रोया था, पर अब वह ऐसे रोने लगा, जैसे पहले कभी नहीं रोया था। मलय समझ नहीं पाया कि क्या करे। उसने एक बार उसके आसू पोछ दिए, पर वे रुके नह। अमूल्य ने रोते-रोते सिगरेटों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

मलय बोला, “इन्हें टूक-टूक करके इनका नाश क्यों कर रहे हो? तुम्हें नहीं पीनी है तो और किसीको दी जा सकती थी।

अमूल्य ने आसू पोछकर कहा, “अपमान करने के लिए तू क्यों आता है? तुम लोग जिस चीज़ से नफरत करते हो, उसे हमारी तरफ बढ़ा देते हो। मैं नहीं पिऊंगा। मेरी उम्र के लड़के क्या सिगरेट पीते हैं? फिर मैं ही क्यों पीऊँ?”

वह बड़ी देर तक रोता रह।

मलय चुप। एकाएक उसने अमूल्य का हाथ पकड़ लिया। बोला, “भाई, जो हो गया सो हो गया, अब उसे निभाना पड़ेगा। मैं इम्तहान में कल भी नहीं लिख पाया। फेल हो जाऊँगा। प्रसन्न पंडित गणित में

गन्ती करने पर तेज हो जाते हैं। कही तैश में आकर मुझे शून्य न दे दे !”

“तो क्या प्रसन्न पंडित पर्वे जाचेंगे ?”

“और क्या ! इन लोगो में गणित जाननेवाला मास्टर उनसे बढ़कर कौन है ? सुनी-सुनाई बात नहीं है। खुद जाकर पक्का पता ले आया हू। भाई, कोई तरकीब लडाओ।”

‘तो क्या कापिया चुराने को कहते हो ?’

प्रमूल्य ने देर तक उसे घूरा, फिर बोला, “इसमें सदेह नहीं कि मैं चोर हू, बदमाश हू, भूठा हू। पर अब बस। तुम चले जाओ। मुझसे कुछ नहीं होने का।”

मलय बोला, “मैं अपने लिए नहीं कहता। मैंने तो पढाई नहीं की, निंदा होगी, हो। पर मा की बात सोचकर घबराहट मालूम होती है। हम लोग गांव में नये-नये आये हैं। मेरे कारण मा का सिर नीचा होगा, यह जरा सतेजो। उनकी तंदुरुस्ती जैसी चल रही है, उससे डर लगता है कि परीक्षा का नतीजा देखकर उनका दिल न बैठ जाय।”

प्रमूल्य चिंतित हो गया। मलय ने उसके मर्म को छू लिया था।

“मैं कान पकड़ रहा हू। आगे से ध्यान देकर पढूंगा। अबकी बार बचा दो। दम कुछ नहीं, एक मिनट का काम है। इतना ही तो करना है कि एक कापी निकालकर उसके बदले दूसरी कापी रख देना। मैं किताब देखकर यह कापी लिख लाया हू। इसमें सौ न मिले, तो नब्बे या पिचानबे तो ले ही मरूंगा।”

हासि जा रही है। अब इद्राणी भी उसे रोकना नहीं चाहती। स्कूल के सबध में जो उत्साह था, उसपर एक दिन में ही पानी पड़ गया। जब गांववाले नहीं चाहते तो उन्हें पागल कुत्ते ने थोड़े ही काटा है ? फिर प्रमूल्य की वह करनी नमक-मिर्च लगाकर दिन में कितने ही लोग सुना गये हैं। असली बात न खुलती और सारा दोष मलय पर ही मढा जाता, तब तो बेचारे के लिए सिर उठाना ही मुश्किल हो जाता।

इंद्राणी ने भला-बुरा कुछ नहीं कहा; वह चुप रही।

हासि बोली, “इस आस्तीन के सांप को दूध पिलाकर मत पालो। इसे निकाल बाहर करो। तुम्हारा मलय भी इसकी संगत में रहेगा तो बिगड़ जायगा। जो हो, वह अभी दुधमुहा बच्चा ही तो है।”

भवतारण ने तड़ाक से प्रतिवाद करते हुए कहा, “ऐसा न सोचिये। हमारे छोटे बाबू जितने छोटे हैं, उतने ही बुरे लोगों के लिए खोटे भी हैं। बुरे कामों से वह कोसों दूर रहते हैं। अमूल्य को उन्होंने मारा क्यों था, इसलिए कि अमूल्य छिपकर तंबाकू पिया करता था।”

इंद्राणी ने अघैर्य के साथ कहा, “आखिर वह अभागा गया कहा? इतनी रात हो गई।”

भवतारण बोला, “जाने को और कहाँ ठौर है, गया होगा अपने बड़े मुरब्बी निर्मल के पास। वही दोनों की घुट रही होगी।”

इंद्राणी ने स्तब्ध होकर कहा, “हासि जा रही है, हम भी इसीके साथ चल देगे। अब इस मुए गाव में नहीं आने के। निर्मल यहा बेसटके रहे। जो कुर्सी, बेंच बनाये गए हैं, उन्हें भी उसीके स्कूल में भिजवा दीजिये।”

उसका गला रुंध गया। उसने आंचल में मुह ढंक लिया।

अमूल्य निर्मल के पास नहीं, प्रसन्न पंडित की दीवार पर चुपचाप बैठा रहा। जब चारों तरफ सन्नाटा छा गया और हर तरफ से आदमी या आदम-जाद की आहट आनी बंद हो गई, तब वह धीरे-से भीतर कूद गया।

उसने बड़ी सावधानी से दरवाजे को हिलाकर देखा। वह भीतर से बद न था। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि इतनी आसानी से वह भीतर दाखिल हो जायगा। अंधेरे में टटोलते-टटोलते लकड़ी का सद्क हाथ लगा।

पंडित का सबकुछ इसीमें रहता था। मलय ने बताया था कि जांचने की कापिया भी सद्क में ही है। पर उसपर तो एक बड़ा-सा ताला लगा हुआ था। यह तो बड़ी भारी समस्या हो गई, जिसे सुलझाना टेढ़ी खीर जान पड़ती थी। ताला देखकर मालूम होता था जैसे इसमें किसी राजा-महाराजा के जवाहरात जमा हो। यह ताला आसानी से टूटने का नहीं। वह चुपचाप जाकर रसोईघर से सड़ासी ले आया। उसने उसका सिरा ताले में डालकर जरा जोर लगाया तो बड़े जोर से आवाज हुई।

उधर से पंडित की आवाज आई, “कौन है ?”

अमूल्य को काठ मार गया, पर उसे डर नहीं मालूम हो रहा था। बूढ़ा अकेला प्राणी था। अड़ोस-पड़ोस में भी कोई नहीं था। उसने बूढ़े का हाथ पकड़ लिया, तो हिल भी नहीं सकेगा, धमका दिया तो थर-थर कांपने लगेगा, बोलती बंद हो जायगी।

पंडित ने कातर कठ से कहा, “कौन है ? कौन है बाबा ? जरा पानी पिला दो। प्यास के मारे छाती फट रही है। पानी पिलाकर जान बचा लो।”

अमूल्य सोच रहा था कि चुपचाप सटक जाय या नहीं। पंडित फिर से बोला, “बत्ती जला ले। कौन है ? अभी तक इस घर में दीया-बत्ती

नहीं हुई। यह रही दियासलाई मेरे सिरहाने। सारे बदन में दर्द हो रहा है, करवट बदलते नहीं बनता।”

बत्ती जलाते हुए अमूल्य बोला, “आपकी बीमारी की बात सुनकर देखने के लिए आ गया। सोचा कि कुछ सेवा करूं।”

“किसने बताया, मलय न? स्कूल से लौटकर ही वह एक बार देख गया था। उस समय बुखार चढ़ रहा था। तब से जो बिस्तरा पकड़ा तो फिर उठा नहीं गया। मलय बड़ा अच्छा लड़का है, उसका भला होगा।”

बत्ती जलते ही अमूल्य ने पंडित का चेहरा देखा, तो एकदम सिहर उठा। मुह फूला हुआ था, आंखें लाल थीं। वह बुखार के मारे तड़प रहा था। अमूल्य ने पानी पिलाया।

पंडित उठकर पी नहीं सका। अमूल्य ने सावधानी से उसे लेटे-ही-लेटे पानी पिला दिया। कुछ पानी गालों पर होते हुए मुह से ढरक गया।

प्रसन्न बोला, “बदन जल रहा है, जरा हवा कर दे।”

अमूल्य पखा लेकर झलने लगा। वह उधेड़-बुन में पड़ गया और दर-बाजे की तरफ देखने लगा कि अब तो मुश्किल में जान फस गई।

प्रसन्न बोला, “चारों तरफ शीतलामाई की कृपा हो रही है, जरा ध्यान से देख तो, कुछ उस तरह की बात तो नहीं है?”

अमूल्य ने दीया लेकर ध्यान से देखा। मद्धिम रोशनी में चेचक का कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया। पंडित बोला, “भैया सवेरे आकर एक बार देख जाना। वामाचरण छोकरा भाड़ू-वाड़ू लगाता था, वह भी अब नहीं आता। उसे तनख्वाह थोड़े ही मिलती है जो आये!”

इस बीच अमूल्य ने अपनी योजना तैयार कर ली। पंडित सो जाय तो धीरे-से ताला खोलना है। चला गया तो फिर काम नहीं बनने का। बीमारी में काम बिना किसी झंझट के सध जायगा।

यह सब सोचते हुए बोला, “पंडितजी आपकी जैसी हालत है, उसमें आपके यहाँ मेरा रहना ही ठीक होगा। अगर रात को प्यास लगी या और कोई जरूरत पड़ी तो ..”

प्रसन्न बोला, “तुम रह जाओ तब तो बहुत ही अच्छा होगा। यहाँ रहने पर तुम्हें कोई कुछ कहेगा तो नहीं ?”

अमूल्य की छाती में हाहाकार मच गया। बोला, “मेरा है ही कौन ? ऐसा भाग्य लेकर मैं थोड़े ही आया हूँ।”

×

×

×

आते ही अमूल्य ने ताड़ लिया था कि संदूक की चाबी प्रसन्न के जेजेऊ में बंधी है।

रात गहरी हुई। बड़ी देर तक प्रसन्न की ओर से कोई आहट नहीं आई। मौका समझकर अमूल्य धीरे-धीरे उठा। उसने हाथ बढ़ाकर जेजेऊ से चाबी खोलने की चेष्टा की। पंडित की नीद टूट गई। बोला, “कौन है ? अमूल्य ! तू क्या कर रहा है ? अभी तक तू सोया क्यों नहीं ? क्या नीद नहीं आती ?”

अमूल्य बोला, “नीद कहाँ है ? इसीलिए मैंने सोचा कि कुछ आपकी टहल करूँ।”

इस तरह हाज़िरजवाबी के लिए उसने मन-ही-मन अपनी तारीफ की। अपनी बात की सचाई सिद्ध करने के लिए वह पंडित के सीने पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगा। प्रसन्न आंख मूदकर पड़ा रहा। इसके बाद भर्राई हुई आवाज़ में बोला, “बेटा, तेरा भला होगा, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ।”

कुछ समय बीता। पंडित फिर बोला, “बेटा, ज़रा बत्ती फिर से जला दो। सारे बदन में जलन हो रही है।”

अमूल्य ने फिर बत्ती जलाई। प्रसन्न ने रोशनी में अपने हाथ को उलट-पलटकर देखते हुए कहा, “शीतलामाई की कृपा हुई है, इसमें सदेह नहीं।”

वह अमूल्य की ओर स्थिर आंखों से देखने लगा। अमूल्य विचलित हो गया।

रुककर प्रसन्न बोला, “जा, तू सो जा। नहीं-नहीं। बेटा तू चला जा। यह छूतवाला रोग है।”

कहते-कहते बूढ़े की धंसी हुई आंखों में आसू आ गये। बोला, “बेटा,

किसीने इस तरह प्रेम से मेरे सीने पर कभी हाथ नहीं फेरा।”

अमूल्य कुछ बोला नहीं। अब वह हाथ नहीं फेर रहा था, चुपचाप बैठा था।

पंडित फिर ऊंध गया। बत्ती बुझाकर अमूल्य उसी प्रकार बैठा रहा मानो उसके चलने-फिरने की शक्ति लुप्त हो गई हो!

अगले दिन एक पहर बीतने पर प्रसन्न को होश आया। सारे बदन में देवी निकली थी। चेहरा भयानक हो रहा था। अमूल्य सोच नहीं पा रहा था कि क्या करे, क्या न करे।

प्रसन्न ने धीमी आवाज में कहा, “जरा बालीं तो उबला ला कहीं से। कल सबेरे ज़रा-सा भात खाकर स्कूल गया था, तबसे पेट में कुछ नहीं पड़ा। अब भूख के मारे आंतें कुडबुडा रही हैं।”

अमूल्य किसकी खुशामद करना? उसने चूल्हा सुलगाकर किसी तरह बालीं बना दी। प्रसन्न एक ही घूट में उसे पी गया। खाने के बाद कुछ स्वस्थ दिखने लगा।

“बेटा, अब कुछ दिन भोगना पड़ेगा। दो-चार दिन में उठने की नौबत नहीं आयेगी। नई मास्टरनी ने न जाने कंसी निगाह से देखा कि...”

कुछ रुककर सुस्ताते हुए बोला, “तबीयत खराब होने से मैं कापियां नहीं ले रहा था। मना किया तो वह बोली तन्दुरुस्ती खराब है तो नौकरी क्यों करते है? जैसे हम उसकी नौकरी करते है! नौकरी न करूं तो खाऊं कहां से? मेरा कोई लड़का या नाती बैठा है, जो कमाकर खिला देगा?”

अमूल्य को लगा, पंडित और वह एक ही नाव के मुसाफिर हैं। इस संसार में उन दोनों का आगे-पीछे कोई नहीं है। वह फिर भी नौजवान है। एकाध फाके से कमजोर पड़नेवाला नहीं है, पर बेचारे पंडित की तो हालत बड़ी ही भयंकर है।

प्रसन्न कह रहा था, “अब कापियों का क्या करूं, यह सोच खाये जा रहा है। अगर लौटाता हूं, तो पता नहीं क्या हो जायगा? शायद सिर पर ही मार दी जाय...”

फिर कुछ सोचकर बोला, “तू कापियों को निर्मल के पास पहुँचा सकता है, बेटा ? बार-बार उसीका ध्यान आता है। बड़ा ही हमदर्द नौजवान है। वह तो बराबर मुझे नौकरी देने की बात कहता है, पर बाहर से कौन इसे समझ सकता है। उसने अपने स्कूल में मुझे बुलाया था, रोग अच्छा होते ही मैं वही जाऊँगा।”

उसने जनेऊ से चाभी खोलकर अमूल्य को दे दी। बोला, “बेटा, निर्मल को सारी बाने समझाकर कह देना कि जल्दी से कापिया जाच दे। वह जरूर मेरा काम कर देगा। ईश्वर उसका भला करे।”

अमूल्य हाथ में चाभी लेकर ठिठककर खड़ा हो गया। बोला, “आप मुझे परीक्षा की कापिया सौंप रहे हैं ?”

“हा बेटा, तुझे नहीं तो किसे दूँ ? तेरे अलावा मेरा अपना कौन है ? इस तरह का रोग जानकर भी तैने सारी रात मेरी मेवा की, बाली बनाकर जान बचाई। मेरा अपना लडका होता तो वह भी इतना न करता।”

×

×

×

अमूल्य हाथ में कापियों का बडल लेकर जा रहा था। जरा घुमावदार रास्ता उसने पकड़ा था, जिससे उसपर किसीकी निगाह न पड़े। फिर भी होनी होकर ही रही। बासो के भुरमुट में मलय मिल गया। बत्तीसी निकालकर बोला, “वाह यार, वाह ! बडल-का-बडल उड़ा दिया ? मानता हूँ कि शेर हो। क्या और भी कोई गाहक मिल गया ? सुनता हूँ कि सभी लडको ने यह पर्चा खराब किया है। मेरी कापी बदल दी है न ?”

अमूल्य चुप रहा। उसने केवल कधा हिला दिया।

“इसके माने क्या हुए। बडल खोल, मैं देखता हूँ। उधर कहा जा रहा है ? सब ले तो आया, पर ठीक से रख पायेगा न ? नदी-किनारे जा रहा है ? यहां भी तो सन्नाटा है।”

अमूल्य बंडल को छाती से चिपकाये हुए जल्दो-जल्दी आगे बढ़ रहा था।

मलय रग्रांसा-सा होकर बोला, “मेरी नहीं सुनेगा ? इतना किया,

इतनी मार खाई, पर अब आखिर में नहीं निबाहेगा क्या ? मैं तो बस मा की बात सोचता हूं । पता नहीं, नतीजा सुनकर उनकी क्या हालत होगी !”

अमूल्य ठिठककर खड़ा हो गया । फिर इद्राणी का प्रसंग आ गया ! फिर आकर वह उसकी यात्रा के रास्ते में रोड़े अटकाकर खड़ी हो गई ? वह क्षण भर खड़ा रहा । फिर उसने दौड़ लगाई और कोठीवाले स्कूल में पहुंचकर ही रुका !

निर्मल वहां नहीं था । जो लोग थे, उनमें से किसीमें एक भी बात न कहकर वह बढईघर में चला गया । भीतर जाकर उसने सिटकनी चढ़ा दी । वह बुरी तरह हाफ रहा था, मानो कोई उसमें बडल छीनने आ रहा हो । सिटकनी चढ़ाकर कुछ शांत हुआ ।

तभी केनाराम ने बाहर से पूछा, “क्या है ?”

अमूल्य बोला, “सिर में दर्द है । कोई मुझे न बुलाये । मैं जरा सोऊंगा ।”

संसार के किसी भी व्यक्ति पर उसे विश्वास नहीं था । कापियां निर्मल के हाथ में पहुंचाये बिना उसे शांति होनेवाली नहीं थी ।

सारा दिन ऐसे ही कट गया । अमूल्य न तो बाहर आया, न उसने कुछ खाया । संध्या के बाद निर्मल की आवाज सुनकर उसने दरवाजा खोला । आंखें सुखी हो रही थीं । वह बहुत रोया था, इतने दिनों के जीवन की बात सोचकर उसके आसू अपने-आप निकल पड़े थे । भला बनने का प्रयास कर रहा था, पर उसके पैर दलदल में फसते जाते थे, सभल नहीं पा रहा था । इससे उसे और भी रोना आता था ।

“निर्मल भैया, यह कापियों का बंडल है ।”

निर्मल बोला, “मालूम है । मैं पंडितजी के घर में ही आ रहा हूं । उन्हें यहां लाकर दवा की जायगी, इसीकी व्यवस्था कर आया हूँ ।”

फिर वह केनाराम और नकुल से बोला, “बास की चमरडुलिया बना लो । सावधानी से लाना । भोंका न लगे । तुम लोग छः जने जाओ । मैं कह आया हूं । वहां रहेंगे तो बेमौत मर जायंगे ।”

इसके बाद अमूल्य की ओर देखकर वह स्तब्ध रह गया ।

बोला, “चेहरे का यह क्या हो रहा है ? कुछ खाया नहीं ?”

“घर जाकर खाऊंगा । भैया, तुम कापिया सहेज लो ।”

“मेरे साथ इतने दिनों तक रहा, फिर भी ऐसी बातें कर रहा है ?  
क्यों, निर्मल भैया को तुम लोग एकदम निकम्मा समझते हो ?”

अमूल्य बोला, “मेरी करनी नहीं सुनी ?”

“हा पंडितजी से मुन आया—रतजगा करके सेवा करने की बात,  
वार्ली की बात...”

अमूल्य व्याकुल होकर बोला, “क्या निर्मल भैया, तुम कान में रूई  
डाले हो ? कल परीक्षा के समय मैंने क्या किया, यह मुना ?”

“हा, वह भी मुना । मामला ठीक से समझ में नहीं आया । इसलिए  
मलय के पास गया । उसने सबकुछ बता दिया । मैं अब सारी बातें  
जानता हूँ ।”

अमूल्य की आंखों में आसू उमड़ आये । बोला, “निर्मल भैया, आपने  
जो कुछ सिखाया, सब व्यर्थ गया । मैंने मास्ट्रो की आंखों में धूल भोंकी,  
मबके सामने झूठ बोला और झूठ को सच करके रहा ।”

निर्मल ने अमूल्य को छाती में लगा लिया ।

“मैंने कहा था कि हमारी पाठशाला से ईश्वरचंद्र विद्यासागर का उदय  
होगा, सो तुम वह झूठ बोलनेवाले ईश्वरचंद्र हो । तुम्हारे निर्मल भैया का  
सीना आज गौरव से चौड़ा हो गया है ।”

इंद्राणी आदि तांतिहाट में अब नहीं रहेंगे। सब एक साथ चल देंगे। इसीलिए अशोक का जाना और कुछ दिनों के लिए टल गया।

अशोक ने डींग मारते हुए अमला से कहा, "मैंने जो कहा था कि सबका एक साथ उद्धार करके ही टलूंगा, सो हो के रहा कि नहीं?"

इंद्राणी ने सारे पहलू सोच लिये थे। चलो जो कुछ हुआ सो अच्छा ही हुआ। इस ढंग से सारी बात निपट जायगी, इसकी किसीको आशा नहीं थी। नवकिशोर बड़ी चिंता में पड़ गये थे। सिर पर भारी कर्ज का बोझ, शहर में कोई ठौर-ठीला नहीं, तांतिहाट की संपत्ति भी बोझ थी। कौन उसकी देखभाल करेगा? हरितोष की कोशिश से सारी बातें सुलभ गईं। इस जीवन में उनका ऋण अदा नहीं हो सकेगा।

स्कूल के मामले में अपनेको उलझाकर बड़ी भारी गलती की थी। हासि देवी नहीं आती तो जिम्मेदारी जैसी-की-तैसी रहती। भले ही थोड़ी-बहुत हेठी हुई, पर अंत में जो कुछ हुआ, वह ठीक ही हुआ। किसीको कानों-कान पता नहीं लगा। पर वह तो अब तांतिहाट आनेवाली नहीं है, फिर काहे का अपमान और काहे की हेठी। लोग जो चाहे सो कहे, उनकी कही हुई बातें कभी उनके यहां तक नहीं पहुंचेंगी। दो दिन बाद जख्म भर जायगा और वह भूल जायंगी कि कलकत्ते से दूर, बहुत दूर एक दुर्गम गांव है, जिसका नाम तांतिहाट है और वहां कुछ दिनों तक उनपर एक जनून सवार था।

सवेरे से इंद्राणी की तबीयत खराब हो रही है। कमजोरी मालूम पड़ती है। खड़े होते ही सिर घूमने लगता है। सारा दिन लेटे-लेटे बीत गया।

संध्या समय बत्ती बुझाकर वह चुपचाप जंगले के पास अकेली बैठी हुई थीं। मनुष्यों का साथ अच्छा नहीं लगता। इतने में पेड़ के नीचे

किसीकीछाया देखकर वह चौक पड़ी। अमूल्य चुपचाप बरामदे में आ गया। परीक्षा में जाते समय प्रणाम करके जो गया था, सो अब डेढ़ दिन तक आवागमन करके लौटा था।

इद्राणी लडखडाती हुई बाहर निकल आई। उसे देखते ही उनका चेहरा तमतमा उठा।

“चोर, बेईमान, निकल। घर में तूने संध लगाई थी, उसे पचा गई। तबाकू पीकर बलवंत को जिंदा जला रहा था, उसे भी भूल गई। अब तू मलय का सर्वनाश करने पर तुला है। स्कूल और समाज, तेरे लिए नहीं हैं। जा, उसी नरक में चला जा, जहां से तू आया था।”

शोर-गुल सुनकर कई लोग आ गये। इद्राणी आपसे बाहर हो गई। उन्होंने चपल फेंककर मारी। फिर अपनेको सम्हाल नहीं सकीं और धम-से जमीन पर गिर पड़ी।

अमला उनको पकड़कर कमरे में ले गई और बिस्तरे पर लिटा दिया। वह बेहोश रही। आखिरे बाद।

बड़ी देर बाद उन्होंने गहरी सास ली। लडकी से पूछा, “क्या वह आफत टली?”

“हां, पोटली बगल में दबाकर वह चला गया।”

भवतारण ने बरामदे के ऊपर से कहा, “कुछ भरोसा नहीं। सिर का सनीचर इतनी आसानी से नहीं टलता। अभी निर्मल के यहां है। मौका देखकर फिर आ जायगा। ऐसा मजा कहीं और थोड़े ही मिलेगा।”

इद्राणी ने धीरे-से कहा, “तांतिहाट में इन्हींका बोल-बाला रहा। इन्हींकी तूती बोलती रही। हम लोग तो यो ही थे। अब हम विदा हो रहे हैं। हासि जा रही है, अशोक जा रहा है, हम सब एक साथ जा रहे हैं। चटर्जी महाशय, आप कल ही एक अच्छी-सी नाव ठीक कर लीजिये।”

भवतारण ने जोर से सिर हिलाते हुए कहा, “ऐसा नहीं हो सकता है कि आप राजराजेश्वरी होकर राज-पाट छोड़कर चली जायं! आखिर किस बात पर? आपको जाने कौन दे रहा है? जिन्हे जाना है, वही जायेंगे। ज़रा

सब्र से काम लीजिये। वे लोग कुनवे के साथ रोते हुए जायगे। जरा इस नाचीज सेवक के करतब भी तो देख लीजिये।”

अभी वह अपनी बात कह ही रहा था कि इतने में निर्मल आ गया। मलय का हाथ पकड़े हुए था। भवतारण ने यह देखा तो बरामदे से उतरकर एक तरफ को चला गया। इद्राणी ने भी मुह फेर लिया। निर्मल मुस्कराते हुए पास ही की एक कुर्सी पर बैठ गया। बोला, “मैं आपको गुस्से में रहने नहीं दूंगा। जिधर मुह फेरेंगी उधर ही पहुँच जाऊंगा।”

इद्राणी ने आवेश में कहा, “मैंने जूते मारकर अमूल्य को भगा दिया।”

निर्मल ने इसपर अधिक ध्यान नहीं दिया।

“मुझे भी तो आपने एक दिन भगाया था, पर हुआ क्या ? मैं तो फिर आया हूँ।”

“नहीं, तुम्हें भी चेतावनी दिये देती हूँ। अमूल्य से कह देना कि फिर वह कभी इस रास्ते न आये। समझे ?”

“क्यों ?”

“वह चोर, बेईमान, शैतान का बच्चा है। मलय के भी पीछे पड़ गया है। मलय उसकी सगत में आवारा होता जा रहा है।”

निर्मल ने गभीर होकर कहा, “मलय उसकी देखा-देखी सचमुच आदमी बनने जा रहा है।”

इद्राणी ने आश्चर्य के साथ देखा। निर्मल बोला, “जरा इससे पूछकर देखिये। मुझे इसने सबकुछ बता दिया है। मलय को बड़ा खेद है। वह अब आगे कोई बुरा काम नहीं करेगा। आप क्षमा कर दे। उसीको क्षमा दिलाने मैं आया हूँ।”

मलय बोला, “मां, मैंने ही कमूर किया था, मुझे बचाने के लिए ही अमूल्य ने...”

इसके आगे उसका गला रुध गया। वह जोर-जोर से रोने लगा और दोनों हाथों से मुह ढककर मा के पैरों के पास दूसरी तरफ मुह फेरकर बैठ गया।

निर्मल बोला, “आपके दिल को सदमा न पहुँचे, आपका सिर नीचा न हो, इसलिए अमूल्य ने मलय का सारा दोष अपने ऊपर ले लिया था और अन्त तक उसीपर डटा रहा।”

इंद्राणी ने सारी बातें सुनी। सुनकर वह दग रह गई। एकाएक दोनों आखों में आँसू उमड़ आये। बोली, “वह कमबख्त मेरे लिए इतना क्यों करता है? मैं मर जाऊँ या मेरा सिर नीचा हो, इससे उसका क्या आता-जाता है? मैं उसकी कौन होती हूँ?”

निर्मल बोला, “वह स्नेह का भिखारी है। इस ससार में उसका अपना तो कोई है नहीं।”

इंद्राणी कहने लगी, “दो दिन बिना खाये-पिये रोगी की सेवा करके थका-मादा अधमरा यहाँ आया और मैंने उसे जूता से मारा! हाय, कैसे प्यार की मैंने उसपर बौछार की! मैं उसकी कितनी अपनी हूँ? हूँ न?”

उन्हें मुकुल का बात सहसा याद आ गई। खेलकर लौटने में देर होने के कारण एक दिन उसे खूब डाटा था। घर से निकल जाने के लिए कहा था। अभिमानी मुकुल मुह लटकाये दो दिन तक पढ़ने के कमरे में पड़ा रहा था। दो दिन तक न तो हँसा और न अच्छी तरह खाया। उस कुम्हलाये हुए चेहरे की याद बार-बार मन में उठती थी। इंद्राणी का हृदय हाहाकार से भर गया।

फिर बोली, “उसने मास्ट्रो के सामने बराबर सफेद भूठ कहना जारी रखा, पीटा भी गया फिर भी भूठ पर डटा रहा। कैसा है वह?”

निर्मल बोला, “सत्य के प्रति निष्ठा बहुत बड़ी बात है, पर हृदय उससे भी बड़ी चीज है। बराबर बेत पड़ते रहे, फिर भी वह भूठ पर डटा रहा, इससे यही मालूम होता है कि उसमें कितनी शक्ति है और उसका दिल कितना बड़ा है।”

इंद्राणी बिस्तरे पर बैठ गई। बोली, ‘निर्मल, मैंने एक स्कूल बनाना चाहा था, पर इच्छा होने पर भी काम नहीं बना। बड़ी-बड़ी डिग्रियों से भी

कुछ नहीं बनता। यह तो मैंने हासि के मामले में देख लिया। वे बेत मारकर पीठ पर निशान जरूर बना देते हैं, पर मन पर कोई निशान नहीं छोड़ पाते। रायबाड़ी में अब स्कूल बनने से रहा! हम लोग जा रहे हैं, तुमसे होड़ करने के लिए अब कभी नहीं आयेगे, तुम अपनी इच्छा के अनुसार विद्यालय चलाओ, जिसमें अमूल्य की तरह के अभागे आदमी बन सकें। तुममें वह शक्ति है, तुम इसमें अवश्य सफल होगे।”

निर्मल हँसकर बोला, “मेरे डरादे को केवल आपका समर्थन मिला है। जिसने भी सुना कि डा० दत्त का तार पाकर भी मैं नहीं गया, वही मुझसे नाराज हुआ। यहातक कि आपकी अमला और अशोकबाबू भी सब मुझे गाव से निकालकर ही दम लेना चाहते हैं।”

इद्राणी कुछ भेप गई। बोली, “सच तो है। मैं अपनी ही चिन्ता में पागल हो रही हूँ। वह बात तो भूल ही गई। हा, ठीक तो है, तुम जाओ। गाव में पड़े-पड़े क्या सड़ोगे? लोग किस मुह से तुम्हें यहाँ रहने के लिए कहे।”

“किसीके न कहने पर भी जो बिगाड़ना था, वह मैं बिगाड़ चुका। तार का जवाब दे दिया कि मैं नहीं आ सकता।”

इद्राणी चकित रह गई। बोली, “बिना सोचे-समझे इतना बड़ा फैसला कर लिया?”

“मेरे लिए जो कुछ सोचना था, सोच चुका। अधिक सोचने का समय भी नहीं था। इतने हितैषी जुट गये कि जल्दी फैसला करना पड़ा। अब कोई उपदेश देने नहीं आता। बस यही कहते हैं कि मैं निकम्मा और नालायक हूँ।”

“पर यह तो सोचो कि इस काम में आगे बढ़ने की कितनी गुंजाइश थी? सारे देश का भला होता।”

“उसके लिए बहुतरे हैं। वे काम भी अच्छा करेंगे। पर तांतिहाट के दुखियों की सुध लेनेवाले कितने हैं?”

कहते-कहते निर्मल का गला भर आया। बोले, “अखबार अवश्य

लिख रहे है कि देश आजाद हो गया। पर आजादी तातिहाट तक नही पहुच पाई। कही कोई नई आशा की किरण या जोश-खरोश दिखाई पड रहा है ? मेरा गाव आजादी से वचित रह जायगा, इसे मैं कैसे सहन करू ? मेरे लिए स्कूल चलाने का उद्देश्य यही है कि गांवो मे आजादी को पहुचा दिया जाय। यही मेरा कर्म और कर्मक्षेत्र है।”

इद्राणी उसकी ओर स्नेहभरी दृष्टि से ताकती रही, मानो इस प्रकार उन्होने उस सर्वत्यागी के मन की गहराई तक को देख लिया हो। बोली, “तुमने अपनी मा के गहने स्कूल के काम मे लगा दिये। वे रत्नगर्भा और परम भाग्यवती थी। मेरे भी कुछ गहने पड़े है। जल्दी ही कुछ नकद रुपये भी हाथ लग रहे है...”

कहते-कहते वह जैसे कुछ सम्भल गई। बोली, “सब लोग तुम्हारी मां की तरह सौभाग्यशाली नही है, नही-नही, मैं रुपयो का लोभ नही दिखाती।”

निर्मल बोला, “रुपये तो चाहिए। क्यों नहीं ! रुपये न हो, तो काम कैसे चलेगा ?”

हँसकर मानो कृतकृत्य होकर इंद्राणी बोली, “तुम मलय का भी बोझ ले लो। वह तुम्हारे ही पास रहेगा। जैसे तुमने अमूल्य को आदमी बना दिया, वैसे ही तुम इसे भी आदमी बना दो। मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर यह प्रार्थना करती हूँ।”

कहकर उन्होने सचमुच निर्मल के हाथ पकड लिये। यह क्या ! तबीयत ठीक नहीं है तो क्या मन की स्थिरता भी नष्ट हो गई ?

×

×

×

रात के अंतिम पहर मे शोर-गुल सुनकर इद्राणी जग गई।

“आग, आग, आग !”

वह घबड़ाकर बाहर आई। सभी बाहर थे। दक्षिण की ओर का आकाश लाल हो रहा था। इतनी दूर से भी उसकी भयानक लपटें दिखाई पड़ रही थी। हाय-हाय, जाने किसका सत्यानाश हो रहा है !

गाववालो की नींद टूट चुकी थी। डर के मारे लोग इधर-से-उधर दौड़ रहे थे। हरिपद आया था। वह खबर लेने निकला था। बोला, “कोठी-वाला स्कूल जल रहा है, माजी। बलवन आदि कहा गये? वे बाल्टिया और घड़े आदि लेकर तैयार रहें। कुछ कहा नहीं जा सकता। आग घोंडे की तरह छलाग भरकर चलती है। ब्रह्मा के कोप में गाव-के-गाव साफ हो जाते हैं। उस वार क्या हुआ कि पाचपोता में हम लोग विपिन साह के यहा नौटकी करने गये थे। गोशाला की बगल में चूल्हा बनाकर पूडिया निकाली जा रही थीं..”

“गया, गया, सबकुछ गया।”

लडके मौजूद थे। जगली टोला के स्त्री-पुरुष प्रायः सभी आये थे। काली-काली देहों पर आग की चमक पडकर प्रेत की तरह दीख पड रहे थे। शकरीवाला अकेली दौडकर आई थी।

कौन कह सकता था कि यह परम कुलीन घराने की लडकी है, जो इस प्रलय के समय भी दौड रही है? उनकी उम्र काफी हो चुकी है, यह भी कौन कहेगा? इस समय तो वह पागल हथिनी की तरह तगडी मालूम होती है। उनकी कमर में एक घडा है और एक हाथ में। हर खेप में वह भील से दो घडे पानी ला रही है। दो घड़े उतारती है, दो ले जाती है। वह लडको को फटकारती भी जाती है, “खड़े-खड़े क्या मुह ताकते हो? अगर घडे न हो तो दौडकर हमारे घर जाओ। बरामदे में रसोई में मिट्टी का घडा, पीतल का कलशा जो जां जहा मिले, ले आओ।”

नसेरनी आई, पर उसे काम में लाने का कोई ढंग नहीं निकल पा रहा था। जहा जिस प्रकार सभव था, पानी डाला जा रहा था। मेहनत और आंच के कारण सब लोग पसीने में तर हो रहे थे। पर यह सब होते हुए भी आग काबू में नहीं आ रही थी। सब कमरो में एक साथ आग लगी थी। फिर होता तो क्या होता? पानी की भी मुश्किल थी। घुटने भर कीचड में होते हुए भील के बीच जाना पड़ता था। नदी से भी पानी लाया जा रहा था, पर वह और भी दूर थी।

अमूल्य चिल्ला उठा, “करघाघर का छप्पर गिर रहा है।”

निर्मल इस भयंकर सर्वनाश के बीच बिल्कुल शात बना हुआ था। बोला, “गिर तो पड़ेगा ही। जो कुछ और बचाते बने बचा लो।”

कई लोग एक साथ दौडे। कुछ चीजे बच गईं। छप्पर चरचराकर गिर पड़ा।

अकस्मात् उधर आग के अदर से प्रसन्न की चीख सुनाई पड़ी—  
“अरे अमूल्य...”

ओहो, यह तो पड़ितजी है। निकल नहीं पाये। किसीको याद भी नहीं रहा। कितनी भयकर बात है।

किसीके कुछ कहने के पहले ही अमूल्य पागल की तरह आग के बीच में से भीतर घुस गया और थोड़ी ही देर में प्रसन्न को कंधे पर लेकर लौट आया। प्रसन्न जल गया था, पर अमूल्य की हालत उससे भी अधिक भयानक हो गई थी। वह प्रसन्न को उतारते ही ज़मीन पर गिर पड़ा और कटे कबूतर की तरह छटपटाने लगा।

“मा, मेरी मा-मा...”

घड़े डालकर शकरीवाला पास आई। बोली, “लड़का मर रहा है। हाथ-पैर गोद में रखकर बैठे मत रहो। नारियल का तेल मल दो, जलन कम होगी। लाओ, मेरे पास लाओ। इतने तेल से क्या होगा? और तेल नहीं है?”

×

×

×

पूरब की तरफ उजाला हो रहा था। इद्राणी आदि आई। अमूल्य का चेहरा देखकर इद्राणी रो पड़ी।

शकरीवाला ने फटकार बताते हुए कहा, “चलो-चलो, बहुत ममता न दिखलाओ। क्या सोचती हो कि मैं नहीं जानती? मुझे सब बातें मालूम हैं।”

हाथ में नारियल के तेल की बोतल थी, उसे हाथ में तान लिया। वह चामुंडा की मूर्ति देखकर इद्राणी दो कदम पीछे हट गई। गालियों का ताता बंध गया, “मेरे घर में मिट्टी के तेल के टीनों की भरमार हो गई। उस समय मैं नहीं समझ पाई। समझती भी कैसे? सत्ययुग, द्वापर, त्रेता, कलि—किसी काल में ऐसी बात किसीने सुनी है? अगर यह लड़का मर गया, तो सबको फांसी पर चढ़ाकर दम लूंगी। फांसी चढ़ाऊंगी, फांसी चढ़ाऊंगी, फांसी चढ़ाऊंगी। मैंने त्रिवाचा दे दिया। पति है तो क्या है, उसे भी नहीं

छोड़ूंगी मैं खुद गवाही दूंगी। छुओ मत, खबरदार ! और यह म्याऊ-म्याऊ करनेवाला निर्मल भी अजीब आदमी है। बड़ा वमबाज बनता है, पर यहा तो भाडू भी नहीं है कि खड़े-बड़े विष भाडू दू।”

शकरीबाला ने आश्चर्य के साथ देखा कि आधी बेहोशी की अवस्था में अमूल्य ने एक हाथ इद्राणी की तरफ उठा दिया। वह हाथ थर-थर कांप रहा था। इद्राणी ने अब कोई बाधा स्वीकार नहीं की, किसी अपमान को अपमान नहीं समझा। दौड़कर उसके सिर को गोद में उठा लिया। इतना छटपटा रहा था, पर एक ही मुहूर्त में सब शांत हो गया। उसने शांत होकर इद्राणी की गोद में आखे बद कर ली।

शकरीबाला ने अग्नि-भरी दृष्टि में इद्राणी की ओर देखा। उस चेहरे में क्या देखा, पता नहीं। सतानहीन बाभू स्त्री की आखों की आग धीरे-धीरे बुझ गई। वह मुह फेरकर नारियल का तेल लाने के लिए घर की तरफ दौड़ी।

×

×

×

सोनेवाली काठरी में बड़े पलंग पर अमूल्य को लिटाया गया था। इद्राणी बायें हाथ पर ठोड़ी टिकाकर म्लान दृष्टि में उसकी ओर देख रही थी। वह चेहरा जलकर भयकर हो रहा था। सब लोग यही कह रहे थे कि अगर जान बच भी गई, तो आखों की ज्योति जानि रहेगी। तहसील से डाक्टर बुलाया गया था, पर वह कुछ भरोसा नहीं दे रहा था। अकेली शकरीबाला कहती फिर रही थी, “छोडो इन मुहजलो की बात ! ये जो चाहते हैं, उसीको कहते फिरते हैं। लड़का जरा डील से लग गया था, खापी रहा था, लोगो को यह बात अच्छी नहीं लगती थी। मैं कहती हू कि वह जैसा था वैसा ही हो जायगा। ऐसे कितने देख डाले। रोगी के पास ऐसे मुह लटकाकर नहीं बैठते, इससे रोगी का अकल्याण होता है। तुम उठकर नहाओ, खाओ, ऐसे काम नहीं चलने का।”

शकरीबाला इद्राणी से ये बातें कह रही थी और उन्हें तसल्ली दे रही थी। अमूल्य के शरीर पर मरहम लगा रही थी। स्वयं बिना बुलाये राय-बाड़ी आ जाती थी। सरस्वती-पूजा में आकर भला-बुरा कह गई थी। पर

अमूल्य के सिरहाने उसमे और इद्राणी मे दोस्ती हो गई ।

इंद्राणी बोली, “दीदी, तुम जरा दम ले लो । मुझे कुछ करने दो । तुम रात मे जागोगी, फिर दिन मे भी नही सुस्ताओगी तो मर मिटोगी ।”

“मैं महापाप का प्रायश्चित्त कर रही हूं, नही तो इन लडकों के मारे उनको न जाने जिस नरक मे ठेल दिया जाय । बिलकुल निर्दोष लडके है, उनका यह हाल कर दिया । जो पहले जरा भी शक करती तो मिट्टी के तेल के कनस्तर उनके सिर पर ही उडेल देती ।”

अमूल्य बुखार मे तडप रहा था । आज तीन दिन एक ही हालत मे बीते है । न खाना, न पीना । कराहता भी बहुत कम है । एकाएक उसकी सारा देह मे एक तनाव-सा आया और उसने करवट बदली । पीठ पर उस दिन के बेत के दाग नीले होकर उभर रहे थे । पीठ पर आच उतनी नही लगी थी । इंद्राणी आसू-भरी आंखो से हाथ फेरने लगी । शायद वह उन चिह्नों को ढक रखना चाहती थी । अमूल्य ने रुधी हुई आवाज मे कहा, “मां, मां ।”

इद्राणी की जान-मे-जान आ गई । बोली, “होश आ गया है । ‘मा’ कह रहा है । आज मेरे वच्चे को मा कहने मे कोई लज्जा नही हो रही है ।”

डाक्टर बाहर ही था । खबर पाकर जल्दी भीतर आ गया । इंद्राणी ने व्याकुल होकर कहा, “डाक्टर जितने भी रुपये लगे, जैसे भी बने लडके को अच्छा कर दो ।”

रोंगी की परीक्षा करने के बाद डाक्टर ने गभीर होकर उनकी तरफ देखा । निगाह मे सवाल का जवाब मिल गया ।

इंद्राणी हाहाकार कर उठी “अरे अमूल्य, आंखे खोल, तू मेरा मुकुल है । रास्ते की धूल से उठकर तू मेरी गोद मे आया है । मैं तुझे कभी नही मारूंगी, घर से भी कभी नही निकालूंगी ।”

थकी आवाज मे अमूल्य बोला, “बडी नीद आ रही है । मैं सोता हूं ।”

×

×

×

निर्मल ने किसी भी प्रकार वह अच्छी नौकरी करना मंजूर न किया ।

इसलिए अब यह निश्चित था कि वह अशोक को ही मिलेगी। फिर भी जल्दी जाकर उनसे मिलना चाहिए, क्योंकि पता नहीं बीच में और कोई टपक न पड़े।

हरितोष पत्र-पर-पत्र दे रहे थे। इन्ने दिनो तक तातिहाट में पड़े रहने के कारण वह सचमुच बहुत नाराज थे।

इंद्राणी जल्दी कर रही थी। तरह-तरह के ढगामो में देर हो गई, पर अब तो चल ही देना चाहिए।

>

×

×

निर्मल ने अमला से कहा, “जाते समय अगोछे वापस कर जाइयेगा।”

“क्यों? वह तो मेरी चीज है। दाम देकर ली हुई।”

निर्मल बोला, “काम में तो आने के नहीं, बस लोग देखकर हँस जरूर लिया करेंगे।”

अमला ने गंभीर स्वर में कहा, “लोग देखकर दग रह जायेंगे कि आपकी तरह के लोग भी करघा चला लेते हैं। यह तो दिखाने की चाज है।”

“वे यह भी देखेंगे कि कंसी बुनाई है।”

“बुनाई में कोई कसर नहीं है। कसर सूत में है। कही मोटा है, तो कही पतला। बल ठीक से नहीं है, ऐसा सूत टूटेगा नहीं तो क्या होगा। मेरे कते हुए सूत को बुनकर देखियेगा। एक भी तार नहीं टूटने का।”

“आपका सूत मिल कहा रहा है? आप तो दो-चार दिन में कलकत्ता चली जायगी।”

इसके उत्तर में अमला ने जो-कुछ कहा, वह बड़ा आश्चर्यजनक था। बोली, “हम लोग नहीं जा रहे हैं।”

सचमुच जो बिस्तरे आदि बाधे गये थे, वे इंद्राणी के हुक्म में खुल रहे थे।

कोठीवाले जंगल को काटने में लोग फिर लग गये हैं। नये सिरे से कमरे बनाने की तैयारियां हो रही हैं। इंद्राणी को इन दिनो नवकिशोर के अंतिम दिन बहुत याद आते थे। वह अक्सर कहा करते थे कि तातिहाट छोड़कर अच्छा नहीं किया, अकस्मात् न जाने कौन-सा लोभ आ गया, रुपयों के पीछे व्यर्थ में इधर-उधर मारे-मारे फिरे, कुछ कर नहीं पाये। मनुष्य

की वास्तविक आवश्यकता कितनी है ? बहुत धनी होने में लाभ ही क्या है ? पृथ्वी पर मनुष्य के लिए स्थान है, पर इतने लोभ के लिए स्थान कहाँ है ? इद्राणी सुनने को सुन लेती थी, पर उनके मन पर इसकी कोई छाप नहीं पड़ती थी । सियालदह स्टेशन से आगे बढ़े कि पानी और जंगल, साप और बाघ, मलेरिया का डर । इसी प्रकार का एक अनिश्चित आतंक मन पर छाया हुआ था । बात यह है कि वास्तविकता से तो परिचय था नहीं, सब कल्पना-जगत में चक्कर लगाते थे । यहाँ आकर कुछ महीनों में नया परिचय हुआ ।

अशोक ने संदेहभरे शब्दों से पूछा, “चाचीजी, आप लोग चल नहीं रही हैं ?”

इद्राणी ने कहा, “तय तो यही था कि एक साथ चलेगे, पर कुछ कमरे बनाकर स्कूल का बंदोबस्त किये बिना जाऊँ तो कैसे जाऊँ ?”

“पर आपका जाना बहुत जरूरी है । मौका हाथ से निकल जा सकता है ।”

इंद्राणी ने दुखी होकर अशोक की बात का समर्थन किया, “जा सकता है क्या, जायगा ही । भाजी मारनेवाले लोग भी तो सैकड़ों हैं । तुम्हारे पिताजी इस बाँत को बराबर लिख रहे हैं ।”

कुछ रुककर वह फिर बोली, “लज्जा की कोई हद नहीं है । उन्होंने कितनी मुश्किल से वर्द्धन को तैयार किया । और मैं हूँ कि इस मौके को जान-बूझकर खो रही हूँ । यह तो अपने पैरों में आप ही कुल्हाड़ी मारना है । फिर भी जो कांड हो गया, उसके बाद मैं कर ही क्या सकती हूँ ? शंकराबाला कह रही थी कि वह अपने पति के पापों का प्रायश्चित्त कर रही है । मेरे पापों का फिर क्या कहना ? उनका प्रायश्चित्त भी तो उसी तरह होगा ।”

लंबी सांस लेकर अशोक बोला, “तो मुझे अकेले ही जाना है ।”

इंद्राणी बोली, “अकेले क्यों ? हासि भी तुम्हारे साथ जा रही है । यहाँ रहना उसके लिए ठीक न होगा ।”













